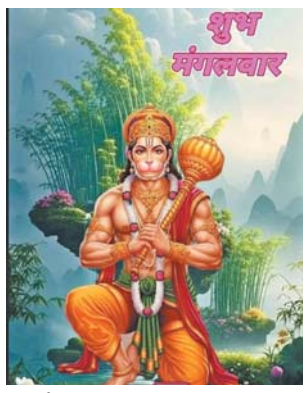

दैनिक साँध्य प्रकाश

भोपाल की धड़कन

वर्ष 54/ अंक 273/ पृष्ठ 8 / मूल्य ₹ 2.10 संस्थापक- स्व. सुरेंद्र पटेल ■आर एन आई 22296/71 ■डाक पंजीयन मप्र/भोपाल/125/12-14

भोपाल, मंगलवार 13 मई 2025 भोपाल से प्रकाशित dainiksandhyaprakash.in

सांध्यप्रकाश विशेष

अंतरिक्ष से भी भारत की 24 घंटे निगरानी, 10 सेटेलाइट तैनात, 2040 तक हमारा खुद का अंतरिक्ष स्टेशन!

देश के नागरिकों की सुरक्षा और संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए अंतरिक्ष मे 10 उपग्रह लगातार 24 घंटे निगरानी कर रहे हैं। यह बात भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष डॉ वी नारायणन ने कही। उन्होंने मणिपुर की राजधानी इम्फाल स्थित केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए आगे कहा कि भारत एक 'सजीव अंतरिक्ष शक्ति' बनता जा रहा है। वर्ष 2040 तक पहला अंतरिक्ष स्टेशन भी स्थापित किया जाएगा।

इसरो प्रमुख ने कहा कि आज 34 देशों के 433 उपग्रह भारत से अंतरिक्ष में छोड़े गए हैं और उन्हें उनके कक्ष में स्थापित किया गया। आज 10 उपग्रह देश के नागरिकों की सुरक्षा और संरक्षा सुनिश्चित करने के लिए रणनीतिक उद्देश्य से लगातार 24 घंटे कार्य कर रहे हैं।

उनकी यह टिप्पणी भारत और पाकिस्तान के बीच चल रहे सैन्य तनाव की पृष्ठभूमि में आई है। देश ने सात मई की सुबह 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू किया था, जिसका उद्देश्य पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में पाकिस्तान और उसके कब्जे वाले कश्मीर में स्थित आतंकी ठिकानों को नष्ट करना था। डॉ नारायणन ने कहा कि यदि हमें देश की सुरक्षा सुनिश्चित करनी है, तो हमें उपग्रहों का उपयोग करना होगा। हमें अपने 7,000 किलोमीटर लंबे समुद्री तट की निगरानी करनी है। हमें पूरे उत्तर भारत को लगातार निगरानी में रखना है। यह कार्य उपग्रह और ड्रोन तकनीक के बिना संभव नहीं है। उन्होंने बताया कि इसरो जी20 देशों के लिए एक विशेष उपग्रह विकसित कर रहा है, जिसका उद्देश्य जलवायु, वायु प्रदूषण और मौसम की निगरानी करना है। इसरो प्रमुख ने स्वतंत्रता के बाद देश की प्रगति को 'अद्वितीय और उल्लेखनीय' बताया।

ट्रम्प को गिफ्ट में 3400 करोड़ का प्लेन मिलेगा, कतर दुनिया का सबसे महंगा गिफ्ट दे रहा

वॉशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प इसी हफ्ते 14 मई को कतर दौरे पर पहुंचने वाले हैं। इस दौरान कतर सरकार उन्हें लग्जरी बोइंग 747-8 जंबो जेट गिफ्ट कर सकती है। इस विमान की कीमत 400 मिलियन डॉलर (करीब 3400 करोड़ रुपए) है। ट्रम्प के कतर दौरे पर इसका आधिकारिक ऐलान किया जा सकता है। यह गिफ्ट किसी भी अमेरिकी राष्ट्रपति को मिलने वाला अब तक का सबसे महंगा विदेशी उपहार होगा। हालांकि ऐलान के बाद भी ट्रम्प को यह गिफ्ट अभी नहीं मिलेगा। व्हाइट हाउस के एक अधिकारी के मुताबिक सिक्योरिटी क्लियरेंस मिलने तक इसमें समय लग सकता है। ट्रम्प 2029 में राष्ट्रपति कार्यकाल पूरा होने से कुछ वक्त पहले ही इस विमान का इस्तेमाल कर पाएंगे।

नए शिक्षा सत्र से शिक्षकों की ई-अटेंडेंस '3.0 पोर्टल' से, उसे चेहरा दिखाना होगा!

भोपाल। प्रदेश में 15 जून से नया शिक्षा शुरू हो रहा है। ऐसे में स्कूल शिक्षा विभाग ने नई पहल की है, जिससे सरकारी स्कूलों से शिक्षक स्कूलों से गायब नहीं रह पाएंगे। प्रदेश के 20 हजार शिक्षक कई सालों से स्कूलों से गायब बताए जाते हैं। इसके लिए प्रदेश के करीब चार लाख शिक्षकों की उपस्थिति 'सार्थक एप' के माध्यम से ऑनलाइन दर्ज होगी। यह एप शिक्षकों की लोकेशन दर्ज करेगा, साथ ही ऑनलाइन चेहरा दिखाई देने पर ही उपस्थिति दर्ज होगी। दूसरी तरफ ट्रायबल विभाग अपनी आश्रम शालाओं में जिन ढाई लाख शिक्षकों से बच्चों का अध्यापन करवाता है, उनकी ई-अटेंडेंस भी 3.0 पोर्टल के माध्यम से कराए जाने की तैयारी है।

जानकारी के अनुसार प्रदेश में ढाई लाख शिक्षकों की ऑनलाइन अटेंडेंस पूर्व से संचालित 'एम शिक्षा मित्र' पर उपस्थिति लगाने की तैयारियां हुई थीं। अब डिपार्टमेंट ने नया सिस्टम तैयार किया है। इधर, जिस ट्रायबल विभाग अपनी आश्रम शालाओं में ढाई लाख टीचरों से बच्चों का अध्यापन करवाता है, वहां पर अभी कोईअंतिम तैयारियां नहीं हुई।

15 जून से प्रदेश में शिक्षा का सत्र प्रारंभ हो रहा है। इसी दिन से स्कूल शिक्षा विभाग के अधीन काम करने वाले हर शिक्षक की ऑनलाइन उपस्थिति होगी। जब यह मसौदा तैयार किया गया था, तब कहा गया था कि पूर्व से संचालित 'एम शिक्षा मित्र' पर शिक्षकों की ऑनलाइन अटेंडेंस लगाई जाएगी। अब विभाग ने निर्णय बदला है। विद्यालयों के समस्त रिकार्ड को संग्रहित करने के लिए विभाग ने जिस नवीन 3.0 पोर्टल को लांच किया। उसी के माध्यम से शिक्षकों की ई-अटेंडेंस लगवाई जाएगी।

बलूच पाकिस्तान की गर्दन मरोड़ने की तैयारी में, 51 ठिकानों पर ताबड़तोड़ हमले का दावा

नई दिल्ली। बलूच लिबरेशन आर्मी (क्क्र) ने क्षेत्रीय बदलाव की चेतावनी देते हुए कहा है कि साउथ एशिया में %एक नई व्यवस्था जरूरी हो गई है.% इसने विदेशी प्रॉक्सी होने के दावों को खारिज कर दिया है. ग्रुप ने खुद को आने वाले वक्त में इलाके की एक गतिशील और निर्णायक पार्टी करार दिया है.

इसके अलावा, बीएलए ने दावा किया कि उसने पाकिस्तानी सैन्य और खुफिया साइट्स को निशाना बनाते हुए कब्जे वाले बलूचिस्तान में 51 से ज्यादा जगहों पर 71 हमले किए.

बीएलए ने कहा, ÷हम इस बात को मजबूती के साथ खारिज करते हैं कि बलूच राष्ट्रीय प्रतिरोध किसी राज्य या शक्ति का प्रतिनिधि है. बीएलए न तो मोहरा है और न ही मूक दर्शक. इलाके के मौजूदा और भविष्य के सैन्य, राजनीतिक और रणनीतिक गठन में हमारी अपनी सही जगह है और हम अपनी भूमिका के बारे में पूरी तरह से सचेत हैं. बीएलए ने पाकिस्तान पर तीखा हमला करते हुए आतंकवाद को बढ़ावा देते हुए भ्रामक शांति बयानबाजी का इस्तेमाल करने का आरोप लगाया. भारत को सीधे संबोधित करते हुए बीएलए ने कहा, ÷पाकिस्तान की तरफ से शांति, युद्ध विराम और भाईचारे की हर बात महज एक धोखा, जंग की रणनीति और एक अस्थायी चाल है.

टारगेट्स में सैन्य काफिले, खुफिया केंद्र और खनिज परिवहन वाहन शामिल थे. बलूच ने कहा, ÷इन हमलों का मकसद केवल दुश्मन को खत्म करना नहीं था, बल्कि आने वाले वक्त में मजबूत जंग के लिए तैयारी को ठोस करने के लिए सेना की तैयारी, जमीनी कंट्रोल और डिफेंस स्थिति को जांचना था.

मोदी पंजाब में आदमपुर एयरबेस पहुंचे

सफल एयर स्ट्राइक के लिए जवानों को बधाई दी

जालंधर। भारत और पाकिस्तान में सीजफायर के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंगलवार सुबह अचानक पंजाब के जालंधर स्थित आदमपुर एयरबेस पहुंचे। यहां उन्होंने एयरफोर्स के अधिकारियों और जवानों के साथ मुलाकात की। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर को लेकर बातचीत की और सफल एयर स्ट्राइक को लेकर जवानों को बधाई भी दी।

क्क्रमोदी आदमपुर एयरबेस पर करीब एक घंटे तक रहे। इसके बाद उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा, %आज सुबह मैं वायुसेना स्टेशन आदमपुर गया और हमारे बहादुर वायु योद्धाओं और सैनिकों से मिला। साहस, दृढ़ संकल्प और निडरता के प्रतीक लोगों के साथ रहना एक बहुत ही विशेष अनुभव था। भारत हमारे सशस्त्र बलों के प्रति हमेशा आभारी है, जो हमारे देश के लिए सब कुछ करते हैं। सोमवार शाम को प्रधानमंत्री मोदी ने ऑपरेशन सिंदूर को लेकर राष्ट्र के नाम संबोधन में तीनों सेनाओं के जवानों की तारीफ की थी। वहीं, पाकिस्तानी सेना ने अपनी एयर स्ट्राइक में आदमपुर एयरबेस को नुकसान पहुंचाने का दावा किया था।

पाकिस्तान ने कहा था- आदमपुर एयरबेस को नुकसान पहुंचाया

22 अप्रैल को पहलगाम आतंकी हमले के बाद 6-7 मई की रात को भारत ने पाकिस्तान पर ऑपरेशन सिंदूर के नाम से एयर स्ट्राइक कर 100 से ज्यादा आतंकी ढ़ेर कर दिए। इसके बाद पाकिस्तान ने भी ड्रोन, रॉकेट और मिसाइलों से अटैक करना शुरू कर दिया। हालांकि भारतीय सेना एयर डिफेंस सिस्टम ने इन्हें हवा में ही ढेर कर दिया। हालांकि, 10 मई को पाकिस्तान ने दावा किया कि उनके फाइटर जेट छ्व्न-17 से दागी गई हाइपरसोनिक मिसाइल ने आदमपुर में भारत के स्-400 एयर डिफेंस सिस्टम को बर्बाद कर दिया है। हालांकि, इसी दिन कर्नल सोफिया कुरैशी ने विदेश मंत्रालय की प्रेस कॉन्फ्रेंस में स्पष्ट कर दिया था कि यह दावा झूठा है।

मोहन कैबिनेट की बैठक में हुई कई मुद्दों पर चर्चा

रायसेन में बनेंगे हाईस्पीड रेल और मेट्रो के कोच

गौहरगंज में बीईएमएल करेगी 1800 करोड़ का निवेश

भोपाल। रायसेन जिले के गौहरगंज में हाईस्पीड रेल और मेट्रो के कोच बनेंगे। इस पर भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड (बीईएमएल) 1800 करोड़ रुपए निवेश करेगी। मंगलवार को कैबिनेट की बैठक में इस पर चर्चा हुई है। संस्था को कारखाना बनाने के लिए जमीन देने के प्रस्ताव बाद में कैबिनेट में लाया जाएगा। वहीं जंगली हाथियों के प्रबंधन पर सरकार 47 करोड़ रुपए खर्च करेगी। कैबिनेट ने योजना को मंजूरी दे दी है। इसके पहले सीएम डॉ. मोहन यादव ने ऑपरेशन सिंदूर के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मंत्री परिषद की ओर से बधाई दी है।

राज्य सरकार 14 मई को बेंगलुरु में रोड-शो करेगी। यहीं बीईएमएल का दफ्तर है। जिसे एमपी में भूमि आवंटित की जाना है। यह काफी समय से पेंडिंग है। कैबिनेट के फैसलों की जानकारी देते हुए नगरीय विकास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि छत्तीसगढ़ के जंगली हाथियों से फसल और किसानों को बचाने और हाथियों को भी सुरक्षित रखने के लिए यह योजना तैयार की गई है। 47 करोड़ की योजना की मंजूरी के बाद जंगली हाथियों की सुरक्षा और उन पर कंट्रोल का काम किया जाएगा।

पटाखे फोड़कर हाथियों की दिशा बदलेंगे

जब छत्तीसगढ़ से एमपी के तीन जिलों में हाथियों की एंट्री होगी तो पटाखे फोड़कर मार्ग परिवर्तित किया जाएगा। इसके लिए एआई सर्विसेस का भी लाभ लेंगे, जिससे हाथी आने का पता चल जाएगा और ऐसे में उन्हें रेस्क्यू करके उन्हें डायवर्ट किया जाएगा। इस योजना में ग्रामीणों को प्रशिक्षण देंगे, ताकि लोग हाथियों के आने पर उन्हें उत्तेजित न करें। एक रैपिड एक्शन टीम तैयार कर हाथियों की निगरानी, पेट्रोलिंग की जाएगी।

छह माह पहले हो चुकी है घटना

बताया जाता है कि बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व और संजय डुबरी टाइगर रिजर्व में 150 से अधिक जंगली हाथी हैं। कई बार ये हाथी छत्तीसगढ़ से आकर यहां रहवासी क्षेत्रों में पहुंच जाते हैं। हाथियों के आदिवासियों के गांवों में घुसने से इंसानों और हाथियों के बीच टकराव का खतरा बढ़ता है। इसके चलते छह माह पहले कोदो की फंगस लगी फसल खाने के कारण 11 हाथियों की मौत हो गई थी। इसके बाद गुस्साए एक हाथी ने दो लोगों को कुचलकर मार डाला था। रीवा और शहडोल संभाग के वन क्षेत्रों में ऐसे हाथी अधिक हैं।

प्रधानमंत्री को बधाई दी

कैबिनेट बैठक से पहले मुख्यमंत्री ने मंत्रियों की ओर से प्रधानमंत्री को ऑपरेशन सिंदूर चलाने के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह कार्रवाई तकनीक के बेहतरीन उपयोग और तीव्र गति से की गई योजना का परिणाम है, जिससे विश्वभर ने भारत के बदलते नेतृत्व की क्षमता को देखा है। उन्होंने रक्षा मंत्री, गृह मंत्री, भारतीय सेना और अर्धसैनिक बलों के सभी जवानों को भी शुभकामनाएं दीं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा- यह हर भारतवासी के लिए गर्व और सौभाग्य की बात है कि भारत अब निर्णायक और प्रभावी कार्रवाइयों के लिए पहचाना जा रहा है।

गेहूं उपार्जन की स्थिति पर दी जानकारी

कैबिनेट बैठक से पहले मुख्यमंत्री ने मंत्रीगण को प्रदेश में चल रही प्रमुख योजनाओं और गतिविधियों की जानकारी भी दी। उन्होंने बताया कि 5 मई तक प्रदेश के 3475 उपार्जन केंद्रों पर 9 लाख किसानों से गेहूं खरीदा गया है। अब तक कुल 77.74 लाख मीट्रिक टन गेहूं का उपार्जन किया गया, जिसमें से 74.42 लाख मीट्रिक टन का भंडारण किया जा चुका है। किसानों को 18,471 करोड़ रुपए का भुगतान हो चुका है और शेष 400 करोड़ रुपए का भुगतान शीघ्र किया जाएगा।

सीबीएसई कक्षा 12वीं के रिजल्ट घोषित, 88.39 फीसदी पास

नई दिल्ली। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने 13 मई 2025 को अपनी आधिकारिक वेबसाइट results.cbse.nic.in पर कक्षा 12वीं बोर्ड परीक्षा 2025 के परिणाम घोषित कर दिए हैं। छात्र अपने रोल नंबर, एडमिट कार्ड आईडी, स्कूल कोड और जन्म तिथि जैसे लॉगिन क्रेडेंशियल का उपयोग करके अपने स्कोर की जांच कर सकते हैं। सीबीएसई ने इस वर्ष परीक्षा प्रक्रिया को सुचारू रूप से संपन्न किया, जिसमें लाखों छात्रों ने भाग लिया।

परिणाम चेक करने के लिए छात्रों को आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर ÷सीबीएसई बोर्ड परिणाम 2025÷ लिंक पर क्लिक करना होगा। इसके बाद, आवश्यक विवरण जैसे रोल नंबर और जन्म तिथि दर्ज करने पर परिणाम स्क्रीन पर प्रदर्शित होगा। डिजिलॉकर और उमंग ऐप के माध्यम से परिणाम देखना भी आसान और सुरक्षित है। इन प्लेटफॉर्म्स पर डिजिटल मार्कशीट डाउनलोड की जा सकती है। इसके अलावा, सीबीएसई ने एसएमएस सेवा शुरू की है, जिसके तहत छात्र अपने रोल नंबर के साथ एक निर्धारित नंबर पर मैसेज भेजकर परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

सीबीएसई ने स्कूलों को भी परिणामों की हार्ड कॉपी उपलब्ध कराने की व्यवस्था की है। छात्रों को सलाह दी जाती है कि वे केवल आधिकारिक स्रोतों से ही परिणाम चेक करें और किसी भी धोखाधड़ी से बचें। यह परिणाम छात्रों के शैक्षणिक भविष्य के लिए महत्वपूर्ण कदम है, और सीबीएसई ने इसे पारदर्शी और सुगम बनाने के लिए सभी जरूरी कदम उठाए हैं।

ग्वालियर-मुरैना बॉर्डर पर भीषण हादसा, गिट्टी से भरे ट्रक ड्राइवर की जिंदा जलकर मौत

ग्वालियर। ग्वालियर-मुरैना बॉर्डर पर मंगलवार तड़के दर्दनाक सड़क हादसे में एक ट्रक ड्राइवर की जिंदा जलकर मौत हो गई। ट्रक ग्वालियर के बिलौआ से गिट्टी भरकर आगरा की ओर जा रहा था, तभी मुरैना जिले के रिठौरा थाना क्षेत्र में सामने से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक से टक्कर हो गई। टक्कर के तुरंत बाद गिट्टी से भरे ट्रक में आग लग गई। आग इतनी तेजी से फैली कि चालक को सीट से हिलने तक का मौका नहीं मिला और वह ट्रक के अंदर ही जिंदा जल गया।

ज्येष्ठ मास के पड़ने वाले मंगलवार को पूर्वांचल में बड़ा मंगलवार कहते हे आज माह का पहले मंगलवार को श्री रामानंद आश्रम गुफा मंदिर धाम में प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में गुफा मंदिर के श्री महंत श्री देवाचार्य स्वामी रामप्रवेशदेवाचार्य महाराज जी के सानिध्य, पंडित लेखराज शर्मा के आचार्यत्व में एकादश वैदिक ब्राह्मणों ने श्री बूड़े हनुमान जी महाराज का सहस्त्रधारा अभिषेक विविध वस्तुओं तथा त्रिवेणी संगम के गंगाजल से अभिषेक पूजन कर दिव्य श्रृंगार किया आरती कर प्रसादी वितरण किया पंडित लेखराज शर्मा ज्योतिषाचार्य गुफा मंदिर धाम भोपाल।

शिवराज सिंह चौहान ने राज्य सरकार द्वारा कार्यान्वित केंद्रीय योजनाओं की समीक्षा की

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय से छत्तीसगढ़ प्रवास पर आए केंद्रीय ग्रामीण विकास एवं कृषि व किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सौजन्य मुलाकात की। मुख्यमंत्री साय ने चौहान का छत्तीसगढ़ में स्वागत करते हुए उन्हें बस्तर आर्ट का प्रतीक चिन्ह व शॉल भेंट किया। मुख्यमंत्री साय ने छत्तीसगढ़ की पावन धरा पर केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए कहा कि गरीब, किसान एवं गांव के कल्याण के लिए आपका समर्पण हम सबके लिए प्रेरणादायी है। उन्होंने राज्य सरकार द्वारा कार्यान्वित केंद्रीय योजना की समीक्षा की। आपके अनुभव और मार्गदर्शन से डबल इंजन सरकार का संकल्प और सशक्त होगा।

विदाई समारोह में बोले सीजेआई खन्ना, न्यायपालिका में जनता का भरोसा हासिल नहीं किया जा सकता, इसे अर्जित किया जाना चाहिए

नई दिल्ली। आज यानी 13 मई, दिन मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस पद से रिटायर हो रहे चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया (सीजेआई) संजीव खन्ना को उनके सम्मान में आयोजित औपचारिक बेंच कार्यवाही के दौरान सुप्रीम कोर्ट बार के सदस्यों ने गर्मजोशी से विदाई दी।

अटॉर्नी जनरल और सॉलिसिटर जनरल से लेकर सीनियर एडवोकेट्स और बार के युवा सदस्यों तक, कानूनी बिरादरी के एक व्यापक वर्ग ने चीफ जस्टिस खन्ना के प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त की।

अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमणी ने सीजेआई खन्ना के निर्णयों की स्पष्टता और सरलता की सराहना की और कहा कि उन्होंने स्वतंत्रता और संस्थागत अखंडता को बनाए रखने का प्रयास किया। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता, जिन्होंने सीजेआई खन्ना के स्पष्ट निर्णयों और उनके द्वारा सभी की धैर्यपूर्वक सुनवाई की सराहना की। उन्होंने कहा कि वह आज अपने चाचा जस्टिस एचआर खन्ना को गौरवान्वित करेंगे।

सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बल ने कहा कि सीजेआई खन्ना ने जस्टिस एचआर खन्ना की विरासत को आगे बढ़ाया।

सिब्बल ने कहा,

÷कानून की कोई भी शाखा ऐसी नहीं है, जिसमें आपकी विचारों की स्पष्टता पीठ के इस तरफ से स्पष्ट न हो। युवा वकीलों को प्रोत्साहित करना, उन्हें मंच पर आकर बहस करने के लिए प्रेरित करना, एक जज के सर्वोत्तम गुणों को दर्शाता है। आप न्यायपालिका में जो वास्तव में मायने रखता है, उसका प्रतिनिधित्व करते हैं।÷

एडिशनल सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने सीजेआई खन्ना की विरासत पर लाइव लॉ द्वारा प्रकाशित लेख का उल्लेख करते हुए कहा,

÷मैंने हाल ही में लेख पढ़ा, जिसमें आपकी प्रशंसा करते हुए कहा गया कि आपने अग्नि परीक्षाओं के माध्यम से संविधान का बचाव किया और विरासत या सुर्खियों का पीछा किए बिना आपने दृढ़ निर्णय लिए जिससे स्वतंत्रता की रक्षा हुई और न्यायपालिका में जनता का विश्वास बना रहा। मैं इससे अधिक सहमत नहीं हो सकता।÷

एएसजी ने सीजेआई खन्ना की सादगी की भी गवाही दी, जिसमें उन्होंने याद किया कि एक बार उन्होंने उन्हें लोधी गार्डन में बिना किसी सुरक्षा के अकेले सुबह की सैर करते हुए देखा था।

सीनियर एडवोकेट राजू रामचंद्रन, संजय हेगड़े, विभा दत्ता मखीजा, शादान फरासत, पीसी सेन, मेनका गुरुस्वामी, दुष्यंत दवे, अधीश अग्रवाल, एएम सिंघवी, एएसजी ऐश्वर्या भाटी और एन वेंकटरमन, स्ष्टहृक्र के अध्यक्ष विपिन नायर आदि ने भी निवर्तमान सीजेआई की प्रशंसा की। उनकी ÷स्टील की रीढ़÷ और जिस शालीन तरीके से उन्होंने न्यायालय को संभाला, उसके लिए उनकी सराहना की गई।

चल मेरे दिल लहरा के चल दी शानदार प्रस्तुति

भोपाल। कोलार रिदम स्टूडियो में सरगम के सुरीले सितारे ग्रुप द्वारा आयोजित 60 के दशक के सुपर स्टार्स जॉय मुखर्जी ,शम्मी कपूर , विश्वजीत,और धर्मेंद्र के गीतों को करीब 40 कलाकारों द्वारा निभा कर याद किया गया। ग्रुप संयोजक धर्मेश नीलेश अतुल हर्षद के प्रयास से कार्यक्रम सोपान चढ़ा , 75 वर्षीय भालेराव का आई याई या सुक्खू सुक्खू ,उदय का आंखों में कयामत के काजल ,धर्मेंद्र का चल मेरे दिल लहरा के चल उल्लेखनीय थे,सपना ,नीतू चाहत ने डुएट में मधुर साथ दिया ।

दादाजी धाम मंदिर में पूजन और वंदना कर मनाई बुद्ध जयंती

सांध्य प्रकाश संवाददाता
भोपाल

दादाजी धाम मंदिर रायसेन रोड पटेल नगर में सोमवार को वैशाख मास की पूर्णिमा तिथि पर भगवान गौतम बुद्ध का जन्मोत्सव मनाया गया है। इस अवसर पर बुद्ध धर्म के उपासक, उपासिकाओं द्वारा पूजन, बुद्ध वंदना की गई। इसके पश्चात प्रसाद वितरण किया गया। जिसम लालिता देशभ्रतार, योगेश देशभ्रतार, अदिति देशभ्रतार, सरिता देशभ्रतार एवं दादाजी गुरुदेव के भक्त पूजन में उपस्थित हुए।

सर्वधर्म सद्भावना मंच ने मनाई बुद्ध जयंती

भोपाल। बुद्ध पूर्णिमा, जिसे वैशाख पूर्णिमा भी कहा जाता है, बौद्ध धर्म का सबसे पवित्र और महत्त्वपूर्ण पर्व है। यह पर्व न केवल बौद्ध अनुयायियों के लिए, बल्कि समस्त मानवता के लिए प्रेरणा, शांति और करुणा का प्रतीक है। इस दिन महात्मा गौतम बुद्ध के जीवन की तीन महत्त्वपूर्ण घटनाएँ—जन्म, बोधि (ज्ञान प्राप्ति) और महापरिनिर्वाण—घटी थीं। इसलिए इसे त्रिविध पवित्र दिन के रूप में मनाया जाता है। इसका ऐतिहासिक, आध्यात्मिक, सामाजिक और वैश्विक महत्व अत्यंत गहन है और आने वाली नस्लो को इनका जानना समय की बड़ी ज़रूरत है कल बुद्ध जयंती की पूर्व संध्या पर सभी धर्म गुरुओं द्वारा ऐसे ही महात्माओ का संदेश आम किआ जिन्होंने ने सभी धर्मों को एक बन्धन में बांधे रखा और कार्यक्रम का उद्देश्य महात्मा बुद्ध के विचारों को जन जन तक पोहचना है बुद्ध जयंती की पूर्व संध्या के मौके पर विश्व शांति मुल्क़ की सलामती के लिए विशेष प्रथना की गई सभी धर्मगुरुओं ने दिया आपसी एकता का संदेश बुद्धभूमि में आयोजित किया गया एवं विश्व शांति सद्भावना मैत्री वंदना में धर्मगुरु, आचार्यगण ने एक मंच पर उपस्थित होकर मानवता की एकता और विश्वशांति के दीप जलाए और विशेष प्रथना की मुल्क़ में अमनो अमान हो और आपसी एकता भाई चारा बना रहे देश मे सद्भावना के दीपक युही जलते रहे प्रथना की गई इस मौके पर भंते शाक्यपुत्र सागर थेरो अध्यक्ष दी बुद्धभूमि धम्मदूत संघ हिन्दू धर्मगुरु पंडित अनिल आनंद महाराज जमीअत उलमा मध्यप्रदेश के अध्यक्ष सर्वधर्म सद्भावना मंच के उपाध्यक्ष हाजी मोहम्मद हारून साहब नगर निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी, इसाई धर्म गुरु डॉक्टर फादर आनद मुदुगलन, मध्यप्रदेश सर्व धर्म सद्भावना मंच के सचिव हाजी मोहम्मद इमरान, प्रोफेसर मनोज जैन, राजेन्द्र कोठारी, गुरुचरण सिंह अरोड़ा, पंडित महेंद्र शर्मा, ज्ञानी सिख धर्मगुरु कोकता गुरुद्वारा, भंते राहुल, ब्रम्हाकुमारी प्रीयंकाा दीदी, हेमा दीदी, कामरेड हरिद्वार सिंह उपस्थित रहे।

कालचक्र और जीवन की गति

जो बीत गया वह लौटने वाला नहीं। कालचक्र की गतिमय प्रकृति को समझते हुए अतीत के अनपेक्षित प्रसंगों का विश्लेषण, चिंतन मनन इस सीमा तक तो उचित है कि इनमें निहित संदेशों को समझा अपनाया जाए, किंतु इनमें लिपटे रहने का अर्थ है दूरदृष्टि का अभाव। यह प्रकृति व्यक्ति को नकारात्मकता के कुचक्र से नहीं उबरने देगी। बीते अप्रिय प्रसंगों में चित्त उलझा रहेगा तो आगामी कार्यों के लिए आवश्यक उत्साह और ऊर्जा नहीं बचेगी नाना रंग रूपों से सराबोर प्रकृति की वृहत योजना में जीवन प्रतिदिन घुट घुटकर जैसे तैसे गुजारने के निमित्त नहीं है। चिंताग्रस्त, शोकाकुल चेहरे और हावभाव न केवल किरदार पर बोझ होते हैं बल्कि

बरखेड़ी कला में बुद्ध जयंती पर हुआ कार्यक्रम

महात्मा बुद्ध ने हमें जीवन जीने का सच्चा रास्ता दिखाया: मारण

सांध्य प्रकाश संवाददाता
भोपाल

बरखेड़ी कला में बड़े ही धूमधाम से महात्मा बुद्ध के विचारों को याद करते हुए बुद्ध जयंती मनाई गई। काफी संख्या में लोग एकत्रित हुए। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने भारतीय सेना पर हमे गर्व है के नारे लगाए एवं पाकिस्तान मुर्दाबाद एवं आतंकवाद मुर्दाबाद के भी नारे लगाए। कार्यक्रम के आयोजक राहुल मरण एवं बी आर अंबेडकर जनकल्याण समिति के अध्यक्ष रवि खरे उपस्थित रहे। मारण ने बताया कि हम हर वर्ष इसी तरह महात्मा की जयंती बड़े ही धूमधाम से मनाते हैं हम चाहते हैं की हर व्यक्ति महात्मा बुद्ध के विचारों पर चले और बुद्ध ने हमें जीवन जीने का सच्चा रास्ता दिखाया है। उनके विचार हमें शांति, अहिंसा और करुणा का मार्ग दिखाते हैं। बीआर अंबेडकर जनकल्याण समिति के अध्यक्ष रवि खरे ने बताया कि बुद्ध ने ध्यान और जागरूकता को जीवन जीने का महत्वपूर्ण हिस्सा बताया। उन्होंने हमें अपने मन और शरीर के साथ संपर्क में रहने की सलाह दी। उन्होंने सभी जीवों के प्रति प्रेम और दया का संदेश दिया।भारत-पाकिस्तान के बीच चल रही लड़ाई को लेकर पाकिस्तान एवं आतंकवाद के खिलाफ बोलते हुए रवि खरे ने बताया पाकिस्तान जिस तरह हमे बार-बार परमाणु हमले की धमकी देता हे पाकिस्तान यह नहीं जानता कि अगर हम शांति चाहते हैं तो पूरे विश्व की शांति चाहते हैं अगर कभी परमाणु युद्ध होता है तो भारत हथियारों से ही नहीं हौसलों से भी लड़ना जानता है यह वह भारत है जिसने महात्मा बुद्ध को भी जन्म दिया है और अशोक सम्राट को भी भारत के पास हथियारी नहीं संस्कारों की भी शक्ति है भारत वह देश है जिसे शून्य की खोज की और आज अंतरिक्ष में भी अपना झंडा गड़ा है इस अवसर पर , अमनी लाल फरैया ओमप्रकाश खरे आकाश सरोनिया, अखिलेश बामनिया, , सुरेश बामनिया, बलराम बामनिया, अमित सुराना, अंकित सिलावट, दीपक सरोनिया,अजय,सूर्सवंशी, अरूण सरोनिया, शैलेन्द्र सिलावट, विजय सिलावट, सुनील बाथम, दशरथ बामनिया, दुर्गाश खरे, अभिषेक कस्तवार, राकेश खुराना, दिव्यांश नरोलिया, गीता बामनिया, अभिषेक सिलावट, विरेन्द्र खरे, विपिन दोहरे, अंशुल सिलावट, नरेश खरे, दीपक उनिया, विकास जागड़े, आर्यन सरोनिया, आदित्य सिलावट, दिनेश बामनिया, अंकित सिलावट, मनमोहन फरैया, संजय सरोनिया संजय सिलावट, रोहन खुराना, अरूण दोहरे, रोहित सूर्सवंशी, अनिल कस्तावार, करण दोहरे, लक्की सरोनिया, शिवा सरानिया तरूण दोहरे, सुशील सरोनिया, तरूण सरोनिया, लक्की दोहरे, हर्ष दोहरे विपिन मीना अरुण वर्मा धर्मेंद्र पटेल पंकज विश्वकर्मा आदि उपस्थित रहे।

सांसारिक दु:खों से छुटकारा दिलाने भगवान का नाम प्रभावशाली साधन है: योग गुरु महेश अग्रवाल

भोपाल।आदर्श योग आध्यात्मिक केंद्र स्वर्ण जयंती पार्क कोलार रोड़ भोपाल के योग गुरु महेश अग्रवाल ने बताया कि हर साल वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को नरसिंह जयंती का पावन त्योहार मनाया जाता है। इस साल यह पर्व 11 मई 2025 को मनाया गया। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान विष्णु ने दैत्य हिरण्यकश्यप से अपने भक्त प्रहलाद को बचाने के लिए वैशाख माह में शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि पर नरसिंह अवतार लिया था। भगवान का यह अवतार आधे नर और आधे सिंह का है, जिस वजह से इसे नरसिंह अवतार कहा जाता है। नरसिंह देवता भगवान विष्णु के चौथे अवतार हैं। इस पावन दिन नरसिंह भगवान की पूजा- अर्चना करने से सभी तरह के संकटों से मुक्ति मिल जाती है। इस दिन व्रत रखने से सभी तरह के पापों से मुक्ति मिल जाती है। इस पावन दिन विधि-विधान से पूजा करने से जीवन आनंदमय हो जाता है। योग गुरु अग्रवाल ने इस अवसर पर योग साधकों को जप योग के बारे में बताया। संस्कृत भाषा में जप का शाब्दिक अर्थ है-भगवन्नाम की पुनरावृत्ति । विश्व के समस्त धर्मों में भगवान के नाम की पुनरावृत्ति के अभ्यास को दैनिक धार्मिक अनुष्ठान हेतु निर्धारित किया गया है। जप एक अत्यन्त शक्तिशाली कार्यसाधक के रूप में माना गया है, जो साधक को परमानन्द और मोक्ष के उन अन्तिम क्षेत्रों तक पहुँचने में समर्थ बनाता है, जिन्हें समस्त मनुष्य कभी-न-कभी प्राप्त करने की अभीप्सा रखते हैं। इसलिए वर्तमान युग में जब मनुष्य जीवन-मूल्यों के प्रति अपनी सारी समझ खो चुका है और गलत मार्ग पर अग्रसर है, ऐसे समय में सांसारिक दु:खों से छुटकारा दिलाने के लिए %जप% या भगवान का नाम ही शक्तिशाली एवं प्रभावशाली साधन है। इस प्रकार बन्धन से मुक्त होने के लिये जप को सुगम विधि माना जाता है।

योग के महान् ज्ञाता %पतञ्जलि% ने ईश्वर भक्ति के अन्तिम तत्त्व की व्याख्या करते हुए कहा है- पवित्र शब्द %?% सर्वशक्तिमान् ईश्वर का प्रतीक है तथा आत्म-प्रकाश की खोज करने वाले साधकों को इस मन्त्र का मात्र उच्चारण ही नहीं करना चाहिए, वरन् इसके अर्थ पर भी चिन्तन करना चाहिए। अत: स्पष्ट है कि जप को एक यौगिक अभ्यास माना गया है। इसलिये इसकी व्याख्या करते समय %जप योग% शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका यह अर्थ भी है कि इसकी अवश्य ही कुछ विशेष वैज्ञानिक विधि है जिसके द्वारा इस अभ्यास से निश्चित परिणाम की प्राप्ति होती है।

जप योग क्या है? - चूँकि %जप% का अर्थ होता है किसी पवित्र सूत्र की पुनरावृत्ति,अत: इसके लिए एक निश्चित सूत्र होना चाहिए और उस सूत्र को %मन्त्र% कहा जाता है। व्युत्पत्ति के अनुसार जब 'मन्त्र' की पुनरावृत्ति और उस पर मनन् किया जाता है, तब वह अभ्यासी को उसके लक्ष्य तक पहुँचने योग्य बनाता है। इसलिये 'मन्त्र' की मात्र यंत्रवत् पुनरावृत्ति वर्जित है।

बारिश के मौसम में कहीं भी जल ठहराव की स्थिति निर्मित न हो: महापौर

भोपाल। महापौर श्रीमती मालती राय ने निर्देशित किया है कि वर्षा पूर्व शहर के सभी नाला-नालियों की बेहतर ढंग से साफ-सफाई एवं पानी का निर्बाध बहाव सुनिश्चित किया जाए और वर्षा ऋतु में कहीं भी जल ठहराव की स्थिति निर्मित न हो। महापौर श्रीमती राय ने यह निर्देश वर्षा पूर्व नाला सफाई अभियान के तहत जोन क्र. 04 के अंतर्गत आने वाले विभिन्न नालों का निरीक्षण करते हुए दिए। महापौर श्रीमती राय ने सफाई कार्य के दौरान निकले कचरे/मलमे को तत्काल उठवाने, जिन नालों की सफाई की जा चुकी है उन पर सतत् रूप से निगरानी रखने व शेष नालों की सफाई का कार्य शीघ्रता से करने के निर्देश दिए। इस दौरान महापौर श्रीमती राय ने स्थानीय नागरिकों से भी चर्चा की और नाला-नालियों पर रखे सामान आदि को स्वयं हटाकर निगम का सहयोग करने का आव्हान भी किया। निरीक्षण के दौरान महापौर परिषद के सदस्य श्री आर.के.सिंह बघेल, जोन अध्यक्ष श्रीमती पूजा शर्मा सहित निगम के अन्य अधिकारी मौजूद थे। महापौर श्रीमती मालती राय ने नगर निगम द्वारा वर्षा पूर्व शहर के सभी नाला-नालियों की सफाई हेतु चलाए जा रहे अभियान के तहत सोमवार को जोन क्र. 04 के अंतर्गत कबाड़खाना, लियाकत मार्केट, बैरसिया रोड पी.एण्ड.टी, कालोनी, सिंधी कालोनी, सुंदर नगर, रंभा नगर, इब्राहिमगंज आदि क्षेत्रों में स्थित नालों का निरीक्षण किया और सभी नालों की बेहतर ढंग से साफ-सफाई कराने और पानी का निर्बाध बहाव एवं निकासी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

दुष्यंत कुमार पांडुलिपि संग्रहालय में जलवायु परिवर्तन व संरक्षण पर हुआ कार्यक्रम

भोपाल। रविवार को दुष्यंत कुमार पांडुलिपि संग्रहालय में जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण संरक्षण विषय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 100 से भी अधिक लोगों ने सहभागिता की, कार्यक्रम 2 भाग में संपन्न हुआ पहले भाग में अंकित तिवारी ने आचार्य प्रशांत की किताब क्लाइमेट चेंज पर पुस्तक चर्चा की और दूसरे भाग में डॉ. साक्षी भारद्वाज ने जलवायु परिवर्तन को लेकर वैश्विक और राष्ट्रीय नीतियों पर चर्चा की एवं जमीनी स्तर पर उसके क्रियान्वयन पर प्रकाश डाला, लोगों ने इस समस्या को समझा और संकल्प लिया कि हम हमारी पृथ्वी को नष्ट नहीं होने देंगे और इस विराट समस्या के समाधान के लिए तत्परता से कार्य करेंगे। चर्चा में बताया गया कि किस प्रकार क्लाइमेट चेंज ,मनुष्य के मन के प्रदूषण का ही विस्तार है और जब तक आध्यात्मिक चेतना व मन में नैतिकता नहीं जागेगी तब तक इससे लड़ना संभव नहीं है ।इस कार्यक्रम में बोध साहित्य टीम द्वारा आचार्य प्रशांत जी की पुस्तकों का स्टॉल लगाया गया,इस कार्यक्रम की विशेषज्ञ के रूप में डॉ साक्षी भारद्वाज,पुस्तक चर्चा में अंकित तिवारी, अध्यक्ष के रूप में दुष्यन्त कुमार संग्रहालय की निदेशिका श्रीमती करुणा राजुरकर जी उपस्थित थीं और बोध साहित्य आचार्य प्रशांत भोपाल टीम से विशिष्ट अतिथि के रूप में हरिंद्र चतुर्वेदी जी उपस्थित थे साथ ही में हमारी दुनिया फाउंडेशन के वरिष्ठ स्वयं सेवक अंकित बागड़े,आयुष जैन,यश प्रताप सिंह, श्रद्धा जैन, तुषित द्विवेदी और ऋषभ सिंह सेंगर,आस्था सिंह सेंगर और आशी सिंह बघेल ने कार्यक्रम के सफल आयोजन में सहभागिता की।

परितोष नंदी फिर बने अध्यक्ष, लगातार 25 वर्षों से कर रहे हैं अध्यक्ष पद का निर्वाह

भोपाल हबीबगंज कल्चरल एसोसिएशन (एच.सी.ए.) हबीबगंज कालीबाड़ी, वर्ष 2025-28 के चुनाव संपन्न हुई जिसमें सर्वसम्मति से परितोष नंदी को निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया परितोष नंदी पिछले 25 वर्षों से समिति का नेतृत्व कर रहे हैं समिति के सभी सदस्यों ने उन्हें फिर से निर्विरोध अध्यक्ष चुना है उनके अध्यक्ष चुनने के बाद में कार्यकानी की घोषणा की कार्यकारिणी इस प्रकार है बिभाष बिश्वास उपाध्यक्ष,प्रवीण दत्ता महासचिव,उत्तम नंदी कोषाध्यक्ष, अजय कुमार दस संयुक्त सचिव,आशिम सरकार संयुक्त सचिव,सुबीर मंडल संयुक्त सचिव,समर मंडल सदस्य संजीत सरकार, सदस्य नीतीश रॉय,प्रसेनजीत दत्ता आदि लोगों को समिति में स्थान मिला है इस अवसर पर नवनिर्वाचित अध्यक्ष परितोष नंदी सहित सभी समिति के सदस्यों को सभी ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी

मुख्यमंत्री डॉक्टर यादव से विधायक पिपरिया ठाकुरदास नागवंशी के नेतृत्व में पचमढ़ी वासियों ने मंत्रालय में भेंट की । उन्होंने पचमढ़ी नगर की नजूल भूमि को अभ्यारण की सीमा से पृथक करने के निर्णय के लिए मुख्यमंत्री डॉक्टर यादव का आभार माना और पुष्प गुच्छ भेंट कर तथा माला पहनाकर उनका अभिवादन किया। इस अवसर पर पूर्व साडा अध्यक्ष कमल धूत और नवनीत नागपाल सहित अन्य जन प्रतिनिधि साथ थे ।

प्रधानमंत्री मोदी ने किया आतंकवाद के विरूद्ध भारत की नीति का उद्घोष: मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश, प्रधानमंत्री की विकास यात्रा में कदम से कदम मिलाकर चलने को है तैयार

सांध्य प्रकाश संवाददाता
भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश के नागरिकों को संबोधित करते हुए भारत की आतंकवाद के विरूद्ध नीति का उद्घोष किया है। भारत ने आपरेशन सिंदूर सिर्फ स्थगित किया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा है कि यह युग युद्ध का नहीं है, लेकिन यह युग आतंकवाद का भी नहीं है। यह एक वाक्य भारत का संदेश समझने के लिए काफी है। भारत ने पहलगाम की घटना में जिन बहनों का सिंदूर उजड़ा उसका हिसाब पाकिस्तान से चुकता करने का कार्य किया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारत एक मजबूत अर्थ व्यवस्था बना है, साथ ही राष्ट्रवासियों ने धारा 370 को समाप्त होते देखा है। राष्ट्रहित से जुड़े ऐसे कठिन निर्णय प्रधानमंत्री श्री मोदी ने लिए, जिनकी कल्पना नहीं की जा सकती। मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने कहा कि जो मार भारत ने पाकिस्तान पर मिसाइलों से की उससे कहीं अधिक मार आज प्रधानमंत्री श्री मोदी के शब्दों से हुई है और इस संबोधन ने पाकिस्तान के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और सेना अध्यक्ष सहित अन्य दुश्मनों की जमीन खिसका दी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आज प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा राष्ट्र को दिए गए संबोधन के बाद अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि दुनिया बदलते दौर का भारत देख रही है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देशवासियों को भरोसा दिलाया है और उन्हें आत्मविश्वास से भर दिया है। ऊर्जा से लबरेज कर दिया है। उन्होंने उत्साह और उमंग से सेनाओं का हौसला भी बढ़ाया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के सक्षम नेतृत्व में सेना ने सिर्फ 5 दिन में जबरदस्त प्रतिकार करते हुए पाकिस्तान की कमर तोड़ने का कार्य किया है। आज प्रधानमंत्री श्री मोदी के शब्दों से यह स्पष्ट हो गया है कि आतंकवाद को भारत कतई बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने पाकिस्तान को खरी-खरी सुनाते हुए यह भी कहा कि पाकिस्तान आतंकवाद को खाद-पानी देता रहा है।

राज्य सरकार नक्सलियों से निपटने में पूरी तरह सक्षम सरेंडर करें, नहीं तो मारे जाएंगे: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री ने नक्सल ऑपरेशन में शामिल 64 पुलिसकर्मियों को दी क्रम पूर्व पदोन्नति

बालाघाट में हुआ 169 करोड़ लागत के 93 विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमि-पूजन

बालाघाट में प्रदेश के 51वें आयुर्वेदिक कॉलेज की रखी गई नींव

मुख्यमंत्री ने जल गंगा संवर्धन अभियान की प्रदर्शनी का किया अवलोकन

सांध्य प्रकाश संवाददाता
भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में वर्ष-2026 तक देशभर से नक्सलवाद के खात्मे का संकल्प लिया गया है। इसे पूरा करने के लिए मध्यप्रदेश सरकार भी केंद्र सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। इसी क्रम में बालाघाट जिले के पिछले दिनों नक्सल मुठभेड़ों में शामिल रहे पुलिस फोर्स, हॉक फोर्स और विशेष सशस्त्र बल के 64 पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारियों को क्रम पूर्व पदोन्नति प्रदान की गई है। राज्य सरकार का यह महत्वपूर्ण कदम पुलिसकर्मियों का हौसला बढ़ाएगा। क्रम पूर्व पदोन्नति पुलिस इतिहास में स्वर्णिम क्षण है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बालाघाट कभी अत्यधिक नक्सल प्रभावित 12 जिलों की सूची में शामिल था। सरकार की मंशा और पुलिस के परिश्रम से अब केंद्र सरकार ने बालाघाट को गंभीर समस्या वाली श्रेणी से बाहर कर अन्य श्रेणी में रखा है। बालाघाट में नक्सल गतिविधियों में गिरावट प्रशंसनीय है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को बालाघाट के लांजी में आयोजित क्रम से पूर्व पदोन्नति अलंकरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने बैज लगाकर पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों को पदोन्नत कर किया और बधाई दी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारतीय सेना ने पाकिस्तान को 4 दिन की लड़ाई में पस्त कर दिया। गृह मंत्री श्री शाह के नेतृत्व में देशभर में नक्सल विरोधी अभियान संचालित हो रहा है। इस अभियान को मजबूती देने के लिए मध्यप्रदेश पुलिस को आधुनिक हथियारों और तकनीक से लैस किया जा रहा है। राज्य सरकार नक्सलियों से निपटने में पूरी तरह सक्षम है। बालाघाट की धरती पर यह अलंकरण समारोह नक्सलियों को सीधा संदेश है कि वे सरेंडर करें नहीं तो मारे जाएंगे।

प्रदेश की धरती पर नक्सल का खूनी खेल अब नहीं चलेगा। उन्होंने कहा कि आज बालाघाट में पुलिस के वीरों का सम्मान हो रहा है। पुलिसकर्मी जान की बाजी लगाकर नागरिकों की सुरक्षा करते है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सर्वोच्च बलिदान देने वाले 37 वीर पुलिसकर्मियों को नमन करते हुए कहा कि जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है, लेकिन मृत्यु ऐसी हो, जिस पर देश, प्रदेश और समाज गर्व करे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने समारोह में जल गंगा संवर्धन अभियान में बालाघाट जिले में किए गए विकास कार्यों की प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। उन्होंने 169 करोड़ रुपए लागत के 93 विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमि-पूजन किया। इनमें आयुर्वेदिक महाविद्यालय भी शामिल है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बालाघाट में प्रदेश के 51वें आयुर्वेदिक कॉलेज की नींव रखी। इस अवसर पर सांसद भारती पारधी, विधायक लांजी राजकुमार कर्हाहे, विधायक वारासिवनी विक्की पटेल, विधायक गौरव पारधी, पूर्व मंत्री प्रदीप जायसवाल और रामकिशोर कावरे उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बालाघाट खनिज और जल संपदा से परिपूर्ण है। यहां तांबा और मैग्नीज के भंडार हैं। बालाघाट के चिन्नौर चावल को जीआई टैग प्राप्त होना, हमारे लिये गौरव की बात है। बालाघाट में नक्सलियों के खात्मे के साथ विकास के कार्य भी निरंतर जारी हैं। यहां आयुर्वेद से जुड़ी भरपूर संपदा है। नर्सिंग और पैरामेडिकल के कोर्स भी आयुर्वेदिक कॉलेज में चलाए जाएंगे। एक समय था जब वर्ष 2002-03 तक मध्यप्रदेश में एलोपैथी के मात्र 5 मेडिकल कॉलेज थे। अब प्रदेश में इनकी संख्या 30 है। इसके अतिरिक्त 8 और नए मेडिकल कॉलेज खुलने वाले हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बालाघाट में सड़क विकास पर भी जोर दिया जा रहा है। पीएम जनमन अभियान में देश में पहली सड़क बालाघाट में बन रही है, जो 23 किलोमीटर लंबी है। हमारी सरकार बेघरों को घर देकर गरीब से गरीब व्यक्ति की जिंदगी बेहतर करने का प्रयास कर रही है। आगामी 26 मई को नरसिंहपुर में कृषि मेला लगेगा। यहां किसानों को कई महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की जाएंगी। राज्य सरकार टमाटर सहित अन्य सब्जियों के भंडारण एवं प्र-संस्करण के लिए व्यवथा कर रही है। किसानों से 2600 रुपए प्रति क्विंटल गेहूं खरीदकर उन्हें लाभ दिया गया है। जल संरक्षण और संवर्धन के लिए 30 जून तक अभियान चल रहा है। बालाघाट में तालाब, नदी, कुंए, बावड़ी सहित सभी जल स्त्रोतों का संरक्षण किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नदी जोड़ों परियोजनाओं से सिंचाई का रकबा बढ़ेगा। राज्य सरकार किसानों को मात्र 10 प्रतिशत राशि पर 30 लाख से अधिक सोलर पंप दे रही है। किसानों से अतिरिक्त बिजली खरीदकर उन्हें लाभान्वित किया जाएगा। राज्य सरकार ने किसानों को और अधिक लाभ देने के लिये डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना की शुरुआत की है। किसान खेती के साथ दूध उत्पादन से भी आय बढ़ाएं। सरकार दूध खरीदेगी, किसानों को रोज पैसे मिलेंगे। प्रदेश में दूध उत्पादन को 9 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य रखा गया है। इसी के साथ सरकार ने गौशालाओं के लिए प्रति गाय अनुदान 20 रुपए को बढ़ाकर 40 रुपए किया है। राज्य सरकार ने वृंदावन ग्राम योजना भी शुरू की है। युवाओं को गांव में ही रोजगार उपलब्ध कराने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। बालाघाट के प्रभारी एवं स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने कहा कि आज क्रम पूर्व पदोन्नति पाने वाले पुलिसकर्मियों ने त्याग और सेवा भावना से प्रदेश को गौरवान्वित किया है। यह संदेश है कि जो कर्मचारी बेहतर कार्य करते हैं, उन्हें सरकार प्रोत्साहित करती है।

नागरिकों की सुरक्षा के लिए वाहनों की फिटनेस की जांच के लिये चलाएं अभियान

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश में नागरिकों की सुरक्षा के लिये सड़क पर चलने वाले सभी वाहनों विशेषकर परिवहन वाहनों के आवश्यक कागजों समेत फिटनेस, परमिट और रजिस्ट्रेशन वैधता की जाँच के लिये 13 मई से विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने पुलिस महानिदेशक श्री कैलाश मकवाणा को परिवहन विभाग के साथ मिलकर संयुक्त कार्रवाई करने के लिये कहा है। निर्देश में कहा गया है कि आवश्यक कागज न होने पर दोषी वाहन चालकों और मालिकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाये। माना जा रहा है कि मुख्यमंत्री ने यह निर्देश आज भोपाल में बाणगंगा चौराहे पर हुई दर्दनाक बस दुर्घटना को लेकर दिए हैं। इस दुर्घटना में एक महिला डॉक्टर की मौत हो गई और कई लोग घायल हो गए ।

जिद, जुनून एवं जज़्बे से बड़े से बड़े लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है: उप मुख्यमंत्री शुक्ल

10वीं एवं 12वीं की परीक्षा में प्रदेश की प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को किया सम्मानित

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि जिद, जुनून एवं जज्बे से बड़े से बड़े लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। मध्यप्रदेश की प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त करने वाले रीवा संभाग के विद्यार्थियों ने यह साबित कर दिया है कि विन्ध्य का भविष्य सुनहरा है और आने वाले दिनों में यह विद्यार्थी अपना योगदान देंगे। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय रीवा परिसर के सभागार में माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल की 10वीं एवं 12वीं की परीक्षा में प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त करने वाले रीवा संभाग 66 विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि इस उपलब्धि के लिए रीवा संभाग की चर्चा पूरे प्रदेश में हो रही है। उन्होंने प्रतिभाशाली बच्चों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की तथा कहा कि संस्कारवान शिक्षा ही सर्वोत्तम है। शिक्षित होकर संस्कारवान बनें और आगे बढ़ते रहें। श्री शुक्ल ने कहा कि जीवन में निराश न हों। सफलतायें एवं असफलतायें मिलती रहती हैं अपने लक्ष्य के लिए हमेशा प्रयासरत रहें। उन्होंने कहा कि इन बच्चों ने जो अपने अनुभव बताये हैं उससे यह सिद्ध होता है कि इन्हें आगे बढ़ने का मंत्र प्राप्त हो गया है। आगे की शिक्षा में इसी लगन और मेहनत से लगे रहे। उन्होंने रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद द्वारा शिक्षा के स्तर में सुधार के लिए संभाग में प्रारंभ किये गये आपरेशन निखार की प्रशंसा की जिसके सार्थक परिणाम सामने आये हैं। उन्होने कहा कि प्रशासन के साथ-साथ शिक्षा विभाग के शिक्षकों व अन्य अधिकारियों ने रीवा संभाग में शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए समन्वित प्रयास किया है जो बधाई के पात्र हैं। उन्होंने अपेक्षा की कि प्रतिभाशाली बच्चों से अन्य बच्चे भी प्रेरणा लेगें। सांसद श्री जनार्दन मिश्र ने कहा कि विद्यार्थियों में घमण्ड व अतिरेक की भावना न जागृत हो। आत्मविश्वास कायम रहे जीवन में सफलता के लिए विनम्रता, लगन एवं निष्ठा आवश्यक है जो विद्यार्थियों को समग्रता देती है। श्री मिश्र ने कहा कि समाज में इन प्रतिभाओं की आग्रणी भूमिका रहेगी।

उप मुख्यमंत्री ने निर्माणाधीन पीडब्ल्यूडी भवन का किया निरीक्षण

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने रीवा में निर्माणाधीन पीडब्ल्यूडी भवन का निरीक्षण किया तथा इसको शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने कोठी कम्पाउण्ड स्थित मनकामेश्वर मंदिर के सौन्दर्यीकरण कार्य का अवलोकन कर अद्यतन निर्माण प्रगति की जानकारी प्राप्त की तथा शीघ्रता से कार्य करने के निर्देश दिये।

उप मुख्यमंत्री देवड़ा ने मंदसौर के नारायणगढ़ में 2 करोड़ 32 लाख के निर्माण कार्यों का किया लोकार्पण

नगर परिषद नारायणगढ़ का नाम सुदर्शन रखा जाएगा

भोपाल। उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने मंदसौर जिले के मल्हारगढ विधानसभा के विभिन्न क्षेत्रों में 2करोड़ 32 लाख के निर्माण कार्यों का लोकार्पण किया। विकास कार्यों की गति प्रदान करने के उद्देश्य से एक करोड़ की लागत से निर्मित नगर परिषद नारायणगढ़ के नवीन कार्यालय भवन का लोकार्पण किया। उप मुख्यमंत्री देवड़ा ने कहा कि नगर परिषद भवन का नाम सुदर्शन नाम रखा जाएगा। इसके लिए शासन को प्रस्ताव भेजा जाएगा। उप मुख्यमंत्री देवड़ा ने कहा कि मल्हारगढ़ सूक्ष्म सिंचाई परियोजना से हर खेत को सिंचाई के लिए पानी एवं हर गांव में पीने के पानी की सुविधा मिलेगी। उप मुख्यमंत्री देवड़ा ने खजूरी गोड़ में अस्पताल के लिए जमीन दान करने वाले दानदाताओं का सम्मान किया। उन्होंने कहा कि खजूरी गोड़ में मांगलिक भवन बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकार ने गांधी सागर का पानी खेतों में लाने का काम किया है। जिस पर लगातार काम चल रहा है। जिससे अब किसान 1 साल में तीन बार फसल ले सकेंगे। एक समय था जब किसान सिंचाई और बिजली के लिए परेशान था लेकिन अब बिजली 24 घंटे मिल रही है।

सिंचाई के लिए बड़ी-बड़ी सूक्ष्म सिंचाई परियोजनाएं बन रही है। सरकार ने आयुष्मान कार्ड योजना चलाई, जिससे गरीब व्यक्ति की संकट के समय मदद की है, जिससे हर परिवार को एक साल में 5 लाख तक का निशुल्क इलाज की सुविधा मिल रही है। सरकार ने गैस कनेक्शन, शौचालय की व्यवस्था, किसान सम्मान निधि, बिना ब्याज के ऋण, लाडली बहना योजना, संबल जैसी अनेक योजनाएं चलाई है। इस अवसर पर सांसद सुधीर गुप्ता, राज्यसभा सांसद बंशीलाल गुर्जर, सुवासरा विधायक हरदीप सिंह डंग, जिला अध्यक्ष राजेश दीक्षित, पूर्व विधायक राधेश्याम पाटीदार, जनप्रतिनिधि, अधिकारी, कर्मचारी, पत्रकार एवं आम नागरिक मौजूद रहें।

बेतवा नदी के संरक्षण और शुद्धिकरण के लिए आईआईटी के विशेषज्ञ बना रहे डीपीआर

मंत्री गौर ने कॉलोनियों का भ्रमण कर सुनीं रहवासियों की समस्याएं

भोपाल। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संकल्पों को सिद्ध करने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में 30 मार्च से 'जल गंगा सवंर्धन अभियान' प्रारंभ किया गया है। अभियान का समापन गंगा दशहरा, 30 जून को होगा। जन-जन के जीवन से जुड़ा यह महत्वपूर्ण अभियान में नये तालाब बनाये जा रहे हैं, पुराने तालाबों, बावड़ियों और कुँओं का जीर्णोद्धार किया जा रहा है और नदियों को साफ-स्वच्छ किया जा रहा है। अभियान में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व वाले तालाबों, जल स्त्रोतों तथा देवालयों में भी जल संरक्षण के कार्य भी किये जा रहे हैं। विदिशा जिले की जीवनदायिनी बेतवा नदी की दीर्घकालिक सुरक्षा एवं पुर्नजीवन जल गंगा संवर्धन अभियान के उद्धेश्यों की प्राप्ति एवं सतत जल प्रबंधन लक्ष्यों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। बेतवा नदी के संरक्षण और शुद्धिकरण के लिए जिला प्रशासन वृहद परियोजना तैयार कर रहा है। परियोजना को मूर्तरूप देने के लिए विशेषज्ञों को क्षेत्र का भ्रमण कराया जा रहा है। बेतवा नदी के संरक्षण और शुद्धिकरण पर आधारित परियोजना को मूर्तरूप दिया जा रहा है। परियोजना में नदी में मिलने वाले सॉलिड और लिक्विड वेस्ट को नियंत्रित करने और नदी के प्राकृतिक प्रवाह एवं पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करने पर फोकस किया जा रहा है।

भोपाल। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा है कि गोविंदपुरा क्षेत्र में 20 करोड़ रुपए की लागत से केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के पास स्वीमिंग पूल और ऑडिटोरियम बनेगा। उन्होंने यह बात सोमवार को गोविंदपुरा क्षेत्र में भ्रमण के दौरान कहीं। राज्यमंत्री श्रीमती गौर निरंतर क्षेत्र का दौरा कर जनता से सीधे संवाद कर रही हैं। इससे मौके पर ही समस्याओं का निराकरण हो रहा है।

राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने रजत विहार कॉलोनी के रहवासियों से मुलाकात कर क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं और आवश्यकताओं पर चर्चा की। उन्होंने दानिश नगर से भेल संगम चौराहा तक स्ट्रीट लाइट, कम्युनिटी हॉल में अतिरिक्त कमरों का निर्माण करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही क्षेत्रवासियों को स्विमिंगपूल एवं ऑडिटोरियम सुविधाओं की सौगात देने की बात कही। उन्होंने कहा कि स्विमिंगपूल और ऑडिटोरियम के प्रोजेक्ट्स को स्वीकृति मिल चुकी है। निर्माण कार्य जल्द ही शुरू कर निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण किया जाएगा। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने दौरे के दौरान केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के पास स्विमिंगपूल और ऑडिटोरियम निर्माण स्थल का निरीक्षण कर जल्द से जल्द कार्य शुरू कराने की बात कही। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने अग्रवाल नगर में रहवासियों की बताई सीवेज नेटवर्क में सुधार, और सड़कों की मरम्मत जैसी आवश्यकताओं पर चर्चा की। जनता की अपेक्षाओं को प्राथमिकता देते हुए अधिकारियों को

तत्काल समाधान के लिये स्पष्ट निर्देश दिए। कुंजन नगर फेस-1 में रहवासियों से आत्मीय भेंट कर उनकी समस्याएं सुनीं। सीवेज व्यवस्था, सड़कों का डामरीकरण, पार्क विकास, कम्युनिटी हॉल व नर्मदा जल लाइन सहित सभी मांगों पर अधिकारियों को शीघ्र कार्यवाही के निर्देश दिए। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने सुरेन्द्र गार्डन कॉलोनी के रहवासियों से भेंट कर उनकी समस्याएं सुनीं। कॉलोनी के चारों ओर बाउंड्रीवाल निर्माण एवं नालियों की सफाई, अतिक्रमण जैसी मांगों को तत्काल संज्ञान में लेते हुए संबंधित अधिकारियों को त्वरित कार्रवाई के निर्देश दिए। राज्यमंत्री ने बागसेवनिया में बनकर तैयार नई सब्जी मंडी का भी निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि 2 जून को पूर्व मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल गौर जी की जन्मजयंती पर इसे शुरू कराया जाए। न्यू बागसेवनिया और अमराई के रहवासियों ने पेयजल संकट, सीवेज लाइन की मरम्मत, नाली निर्माण जैसी समस्याओं से अवगत कराया। इन मांगों पर अधिकारियों को शीघ्र कार्यवाही के निर्देश दिए। एमराल्ड पार्क के रहवासियों ने पेयजल समस्या, अधिक बिल और नगर निगम द्वारा अधिक चार्ज वसूली जैसी समस्याओं की जानकारी दी।

संपादकीय

पाक को दो टूक

ऑपरेशन सिंदूर, पाकिस्तान के जवाबी हमले तथा युद्ध विराम के बाद देशवासियों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कड़े शब्दों में पाक को चेताया है। उन्होंने सेना के सभी अंगों और सुरक्षा बलों के प्रति आभार जताते हुए कहा कि फिलहाल युद्ध स्थगित हुआ, खत्म नहीं हुआ है। उन्होंने साफ किया कि वो दौर चला गया जब भारत परमाणु हमले के नाम पर ब्लैकमेल होता था। अब अगर फिर से हमला हुआ तो पाकिस्तान व आतंकवादियों को अलग-अलग नहीं देखा जाएगा। आतंक की जड़ों पर फिर से प्रहार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि दुनिया ने देखा कि भारत की सर्जिकल स्ट्राइक में मरे दुर्दांत आतंकवादियों को अंतिम विदाई देने को पाक सेना के बड़े अधिकारी उतावले थे। यह भी कि दो-तीन दशकों में पाकिस्तान ने आतंकवाद की फसल को सींचने के लिये जो संरचना अपने देश में तैयार की है, उससे निकले आतंकवादियों ने ब्रिटेन तथा अमेरिका के 9/11 जैसे हमलों को दुनिया के दूसरे हिस्सों में अंजाम दिया है। प्रधानमंत्री ने साफ किया कि टॉक और टेरर व ट्रेड और टेरर साथ-साथ नहीं चल सकते। उन्होंने आतंक की पोषक पाक सरकार को खुले शब्दों में चेताया कि खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते। उनका इशारा सिंधु समझौते को स्थगित करने की तरफ था। प्रधानमंत्री ने साफ किया कि अब न्यू नॉर्मल है कि भारत ने आतंक की लड़ाई के खिलाफ नई लकीर खींच दी है। आतंक का अपनी शर्तों पर मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा, न्यूक्लियर भयादोहन सहन नहीं होगा तथा आतंकवादियों तथा आतंक को पोसने वाली सरकार को अलग-अलग करके नहीं देखा जाएगा। उन्होंने साफ किया कि ऑपरेशन सिंदूर ने दुनिया को बता दिया है कि आतंकवाद को संरक्षण देने में पाक सरकार की सक्रिय भूमिका है। एक बार फिर पाक पोषित आतंकवाद दुनिया के सामने उजागर हुआ है। साथ ही कहा कि पहलगाम आतंकी हमले में धर्म पूछकर निर्दोष पर्यटकों की हत्या करने वाले आतंकवादी भारतीय समाज की समरसता को नुकसान पहुंचाने में पूरी तरह विफल रहे हैं।

बुद्ध पूर्णिमा के दिन देश को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने साफ किया है कि भारत सदियों से बुद्ध की संस्कृति व विचारों का पक्षधर रहा है। लेकिन शांति का रास्ता शक्ति के रास्ते से ही होकर जाता है। बिना लाग-लपेट के प्रधानमंत्री ने साफ किया कि भारतीय शांति की नीति को कमजोरी न माना जाए, वक्त आने पर हम शक्ति दिखाने से भी नहीं चूकेंगे। उन्होंने सेना के पराक्रम और भारतीय वैज्ञानिकों की मेधा को सराहते हुए कहा कि सर्जिकल स्ट्राइक ने बता दिया है कि भारत आधुनिक तकनीक से युद्ध के लक्ष्यों को हासिल करने में सक्षम है। भारत ने स्वदेशी प्रयासों व आत्मनिर्भरता के संकल्प के साथ देश को सुरक्षा कवच देने में कामयाबी हासिल की है। ये तकनीकें 21वीं सदी की सामरिक चुनौतियों का मुकाबला करने में सक्षम हैं।

ऑपरेशन सिंदूर प्रहार, सीज़फायर से बाहर

सरयूसुत मिश्रा

भारतीय सेनाओं ने अपनी क्षमता, दक्षता, सटीकता और घुसकर मारने का साहस पाकिस्तान को दिखा दिया है. उसके न्यूक्लियर पावर की धमकियों की असलियत भी बता दी है.. !

ऑपरेशन सिंदूर पाक प्रायोजित आतंक के खिलाफ था. पाक सेना और वहां के नागरिकों से युद्ध कभी भी भारत का नजरिया नहीं था. राम, कृष्ण और बुद्ध की शांति प्रिय धरती राक्षसों के विनाश में कभी पीछे नहीं थी. आतंक के मॉडर्न राक्षसों से बदले के लिए अब डोजियर नहीं बल्कि सैन्य कार्यवाही का सीधे डोज दिया जाएगा.

युद्ध रुकने को सीज़फायर कहा जाता है लेकिन भारत ने पाकिस्तान की सेना और नागरिकों को सैन्य कार्रवाई से छूट दी है. आतंक के खिलाफ जो युद्ध शुरू किया गया था वह सतत् जारी है. जो आतंकवादी और उनके ठिकाने बच गए हैं उनको भी उड़ाया जाएगा, इसमें कोई संदेह नहीं है.पीएम मोदी का संदेश और भारतीय सेनाओं का व्रत यही है कि, आतंक के विरुद्ध युद्ध सतत् जारी रहेगा. इसका मतलब ऑपरेशन सिंदूर ऑन गोईंग है.

युद्ध में जाना सबसे सरल है. टारगेट अचीव कर युद्ध से निकलने का फैसला सबसे चुनौती पूर्ण और महत्वपूर्ण होता है. दुनिया में जहां भी युद्ध चल रहे है, वहां उनसे बाहर आने का ही तरीका युद्धरत देशों को समझ नहीं आ रहा है. भारत ने पहलगाम का बदला ले लिया. भारत के सिंदूर की दुनिया को ताकत बता दी. भारतीय सेनाओं की प्रोफेशनल काम्पिटेंसी और टेक्नोलॉजिकल वॉर फेयर कैपेसिटी डेमोंस्ट्रेट कर दी है.

दुनिया में कोई ऐसा देश नहीं है जिसने एक रात में चुन चुन कर आतंकवादियों के नौ ठिकानों को नेस्तानाबूत कर दिया हो. आतंकवादियों के समर्थन में जब पाकिस्तान ने भारत से लड़ने की शुरुआत की तब उसे इतना कठोर जवाब दिया गया कि, उसे शांति के लिए गिड़गिड़ाना पड़ा. भारत ने इस बार ऑपरेशन सिंदूर से पाकिस्तान पर जिस तरह से अटैक किया है, जिस तरह से उनको नुकसान पहुंचाया है, उनके एयर फोर्स बेस नष्ट किए गए हैं, उस पर दुनिया के विशेषज्ञ शोध करेंगे.

अभी तो केवल इंडियन एयर फोर्स ने अपना शौर्य दिखाया है. जमीन पर तो अभी युद्ध शुरू ही नहीं हुआ.

भारतीय नौसेना भी मुस्तैदी से अटैक के लिए तैयार है. लेकिन भारत क्योंकि युद्ध बढ़ाना नहीं चाहता, वह तो केवल आतंकवादियों को मिटाना चाहता है.

भारतीय सेना ने इस बार इनफॉरमेशन वार का भी पूरी मुस्तैदी से मुकाबला किया है. पाकिस्तान हमेशा मिस-इनफॉरमेशन करता रहा है लेकिन इस बार उसके सारे झूठ टाइम पर एक्सपोज किए गए. इंटरनेशनल मीडिया भी पाकिस्तान के झूठ को उजागर करने से पीछे नहीं रहा.

पाकिस्तान का प्रधानमंत्री अपने देश की जनता को संबोधित करता है. संबोधन में ना मालूम कितने राष्ट्रों का धन्यवाद करता है. इसका मतलब है कि भारत की सैन्य कार्यवाई रुकवाने के लिए उसने कितने देशों से मदद मांगी होगी. दूसरी तरफ भारत का प्रधानमंत्री मौन रहा. पीएम हमेशा वार रूम में बैठकर सेनाओं को देश का कमांड बताते रहे. पीएम का मौन जितनी ताकत से भारत और विश्व के लोगों को संदेश देता रहा उतना पाक पीएम का राष्ट्र के नाम संबोधन भी कारगर नहीं रहा.

भारत में हिंदू, मुस्लिम और राजनीतिक दलों के बीच आतंक से मुकाबले में एकजुटता की भावना भी बेजोड़ रही. सारे राजनीतिक दल भविष्य की अपनी चुनावी जमावट के लिए जमीन बनाते दिखे लेकिन सार्वजनिक रूप से सरकार के समर्थन में खड़े रहे. भारत के हिंदुओं और मुसलमानों ने पाकिस्तान के उस प्रयास को पूरी तरह से खारिज़ कर दिया जो उसने पहलगाम में धर्म पूछ कर हमले के साथ भारत में कम्युनल कार्ड खेलने का प्रयास किया था.

ऑपरेशन सिंदूर को पाकिस्तान के साथ युद्ध का ऐलान समझने की गलती जो लोग कर रहे हैं वही सैनिक कार्रवाई रुकने पर नेगेटिव प्रतिक्रिया दे रहें है. यह ऑपरेशन आतंक के खिलाफ है और वह कभी भी नहीं रुकेगा. अब तो भारत सरकार ने यह प्रावधान कर दिया है कि, भारत के खिलाफ किसी भी आतंकवादी घटना को 'एक्ट आफ वार' माना जाएगा. इसका मतलब है कि, आतंकवादी घटना पर भारतीय सेनाओं को युद्ध के तरीके से कार्रवाई करने का पूरा अधिकार रहेगा.

यह मैसेज पूरी दुनिया के लिए है कि, भारत आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष जारी रखेगा. भारत में आतंकवाद भी राजनीति का हथियार रहा करता है. आतंकवाद जैसे ही धर्म से जुड़ जाता है वैसे ही उस पर राजनीति शुरू हो जाती है. इस बार भी ऐसा ही हुआ लेकिन मोदी सरकार को इस बात की क्रेडिट देना चाहिए कि, उसने देश में आतंकवाद पर कम्यूनल कार्ड खेलने के सभी प्रयासों को असफल कर दिया. मोदी सरकार के राजनीतिक विरोधी पाक के खिलाफ सैनिक कार्रवाई रुकने को लाभ और हानि के नजरिए से शायद इसलिए देख रहे हैं क्योंकि इसमें राजनीति की संभावना दिख रही है. सोशल मीडिया का खुलेआम दुरूपयोग दिखाई पड़ रहा है. भविष्य में जो भी चुनाव होंगे उसमें ऑपरेशन सिंदूर बहुत बड़ा मुद्दा होगा, इसीलिए मोदी विरोधी यह साबित करने की कोशिश करेंगे कि, सैन्य कार्यवाई रुकने से भारत को क्या लाभ हुआ और क्या नुकसान. भारत ने पाकिस्तान के मामले में कूटनीतिक सफलता भी हासिल की है. आज पाकिस्तान पूरी दुनिया में अलग-थलग पड़ा है. यहां तक के इस्लामिक देशों ने भी पाकिस्तान का खुलकर साथ नहीं दिया. पाकिस्तान भारत को इस्लामिक देशों में अलग थलग करने में पूरी तरह से असफल रहा.

भारत-पाक के बीच सैन्य कार्रवाई रुक जाने में अमेरिका की भूमिका पर भी सवाल खड़े किए जा रहे हैं. अमेरिका वर्ल्ड पावर है. वह हमेशा दो देशों के बीच युद्ध के समय हस्तक्षेप करने का प्रयास करता है. रूस और यूक्रेन में भी उसने यही किया. इसराइल और हमास के बीच युद्ध के मामले में भी उसने ऐसा ही किया. दोनों स्थानों पर आज भी युद्ध चल रहा है. अमेरिका क्रेडिट लेने की कोशिश करता है लेकिन वह सफल नहीं हो पता.

भारत का स्टैंड शुरू से ही रहा है कि, पाकिस्तान और हिंदुस्तान के बीच जो भी मसले हैं वह दिपक्षीय हैं, उसमें किसी तीसरे पक्ष का कोई स्थान नहीं है. सैन्य कार्यवाई रुकने में भी भले ही अमेरिका ने सबसे पहले जानकारी दी हो लेकिन भारत ने सैन्य तरीके से पाकिस्तान के डीजीएमओ के शांति अनुरोध पर ही सैन्य कार्रवाई रोकने पर सहमति दी.

जब इसके बाद भी पाकिस्तान की ओर से ड्रोन भेजे गए तो न केवल उनका मुकाबला किया गया बल्कि बदले में जबावी हमले किए गए. भारत सरकार ने तुरंत यह ऐलान किया कि, पाक ने सैन्य कार्रवाई रोकने के समझौते का उल्लंघन किया है, इसलिए भारतीय सेनाओं को जवाबी कार्रवाई करने के आदेश दे दिए गए.

पाकिस्तान में भय पैदा हो गया है. आतंकवादी डर कर छिप गए हैं. यह बात तय है कि पाकिस्तान पर भरोसा करना सही नहीं है इसीलिए भारत पूरी तरह से चौकन्ना है और ऑपरेशन सिंदूर को सतत् जारी रखने पर अड़ा हुआ है.

भारत का बदला रूप पाक के नापाक इरादों को कुचल देगा. भारत का यह सबक पाक अगर याद रखेगा, सही रास्ते पर चलेगा तभी उसका भविष्य है. अन्यथा पाक को बर्बाद होने से कोई भी नहीं बचा सकता. ना अमेरिका और ना ही चीन.

समय की माँग - फिर एक बार

राकेश दुबे

हमारा धर्म - जब देश पर संकट आता है, चाहे वह सीमा पार से हो, आतंकी हमला हो या पूर्ण युद्ध की आशंका, तब किसी भी मजहब, जाति या राजनीतिक विचारधारा से ऊपर उठकर राष्ट्र के साथ खड़ा होना प्रत्येक नागरिक का सर्वोच्च कर्तव्य बन जाता है। ऐसे समय में किसी दल या वर्ग की नहीं, बल्कि राष्ट्र की जीत होनी चाहिए। इतिहास गवाह है कि जब-जब भारत ने आंतरिक एकजुटता का परिचय दिया है, तब-तब वह हर बाहरी ताकत के सामने अडिग रहा है।

भारत की स्वतंत्रता के ठीक बाद 1947 में पाकिस्तान ने कश्मीर पर हमला किया। तब न भारत पूरी तरह संगठित था, न सेना पूरी तरह तैयार, फिर भी भारतीयों ने एकजुट होकर न केवल दुश्मन को रोका, बल्कि कश्मीर के अधिकांश हिस्से की रक्षा की। इसी प्रकार 1962 में जब चीन ने भारत पर हमला किया, तब तत्कालीन प्रधानमंत्री ने देशवासियों से आह्वान किया था कि वे केवल सरकार और सेना पर निर्भर न रहें, बल्कि खुद भी मानसिक और भौतिक रूप से युद्ध के लिए तैयार रहें। लाखों नागरिकों ने स्वेच्छा से सहायता दी, कपड़े, दवाई, सोना-चांदी तक दान में दिए।

वर्तमान समय में भी देश एक असामान्य स्थिति की ओर बढ़ रहा है। सीमा पर तनातनी, आतंकी हमले और वैश्विक भू-राजनीतिक उलझनें बढ़ रही हैं। 22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल पहलगाम में हुआ आतंकी हमला केवल सुरक्षा पर नहीं, बल्कि भारत की मानवीय संवेदना और धार्मिक सहिष्णुता पर किया गया क्रूर प्रहार था।

भारत सरकार और सुरक्षा बलों ने इस बर्बरता का जवाब सात मई को ऑपरेशन सिंदूर के रूप में दिया। यह नाम केवल एक सैन्य कार्रवाई का प्रतीक नहीं, बल्कि उन निर्दोषों की स्मृति का पर्याय बना, जिनका जीवन केवल इसलिए छीना गया क्योंकि वे दूसरे मजहब से थे। सिंदूर, जो भारत में श्रद्धा, जीवन और सौभाग्य का प्रतीक है, अब उन खोई हुई जिंदगियों का स्मृति चिह्न बन गया है। ऑपरेशन सिंदूर के तहत सुरक्षाबलों ने आतंकियों के अड्डों को नष्ट किया, कई दुर्दांत आतंकवादियों को ढेर किया और घाटी में व्यापक शांति-संचालन अभियान शुरू किया। यह केवल एक जवाबी कार्रवाई नहीं, बल्कि भारत की रणनीतिक क्षमता और नैतिक संकल्प का स्पष्ट संदेश था।

इस अभियान के दौरान भारतीय सेना की कर्नल सोफिया कुरैशी और भारतीय वायुसेना की विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने सबसे पहले प्रेस ब्रीफिंग करके ऑपरेशन सिंदूर के बारे में जानकारी दी। इन दोनों वीरांगनाओं ने न केवल नेतृत्व में उत्कृष्टता दिखाई, बल्कि महिलाओं के सशक्तिकरण का उदाहरण पूरी दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। उनका योगदान यह दर्शाता है कि राष्ट्रवाद अब केवल एक विचार नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक, चाहे पुरुष हो या महिला, की सक्रिय भागीदारी का संकल्प बन चुका है।

यह भारत की एकता, दृढ़ता और जवाबदेही का प्रतीक था। इसमें कोई नहीं पूछता कि सैनिक किस धर्म, जाति या राज्य से आता है। वे सब भारत माता के सपूत हैं, जो केवल एक लक्ष्य के लिए लड़ते हैं, देश की रक्षा। आज जब देश ऐसे संकट के दौर से गुजर रहा है, यह आवश्यक है कि हर नागरिक और प्रत्येक राजनीतिक दल केंद्र सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा हो। यह समय मतभेद या आलोचना का नहीं, सहयोग, साहस और समर्थन का है।

सेना का मनोबल तभी ऊंचा रहेगा जब उसे महसूस होगा कि देश का हर नागरिक, हर नेता, हर संस्था उसके पीछे है। अमेरिका इसका स्पष्ट उदाहरण है। 9/11 के बाद वहां कोई राजनीतिक मतभेद दिखाई नहीं दिया, सभी दल, सभी नागरिक केवल एक आवाज में बोले- अमेरिका पहले। वहां राष्ट्रवाद केवल झंडा लहराने तक सीमित नहीं, बल्कि हर नागरिक के व्यवहार में दिखता है। वहां का समाज, शिक्षा और शासन प्रणाली हर नागरिक को बचपन से यह सिखाती है कि देश सर्वोपरि है। भारत को भी अपने राष्ट्रवाद को और सशक्त बनाना होगा। यहां शिक्षा व्यवस्था में राष्ट्रीय चेतना को गहराई से समाहित करना होगा। यह जरूरी है कि हर नागरिक केवल अपने अधिकार नहीं, बल्कि अपने कर्तव्यों को भी गंभीरता से समझे। विशेषकर तब जब देश की सीमाएं, सुरक्षा और नागरिक जीवन खतरे में हो।

बुद्ध को क्रुद्ध किया ,तो फिर होगा युद्ध

कौशल किशोर चतुर्वेदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12 मई 2025, बुद्ध पूर्णिमा के दिन राष्ट्र को संबोधित करते हुए 140 करोड़ भारतीयों को यह भरोसा दिलाया है कि भारत महात्मा बुद्ध की नीति पर ही चल रहा है। बुद्ध शांति का प्रतीक हैं, तो शौर्य और पराक्रम के पर्याय भी हैं। पाकिस्तान ने अगर बुद्ध से प्रेरणा लेकर शांति का मार्ग अपनाया, तब सब ठीक है। पर यदि पाकिस्तान ने आतंक की राह चुनी और बुद्ध को क्रुद्ध किया तब भारत के पास युद्ध का विकल्प बचता है। और 'ऑपरेशन सिंदूर', जिसने पाकिस्तान के फितूर को मिट्टी में मिलाकर आइने की तरह साफ कर दिया, इसे पाक पर रहम करते हुए भारत ने स्थगित किया है। अगर आतंक पर पाक का प्रेम उमड़ा, तब भारत क्रुद्ध होकर युद्ध भी करेगा और पाकिस्तान को कब्रिस्तान में बदलने में कोई चूक भी नहीं करेगा। गेंद पाकिस्तान के पाले में है। बात अब आतंक और पीओके पर होगी। आतंक और व्यापार, दोनों साथ में नहीं हो सकते। पानी और खून साथ में नहीं बहेंगे। या तो पाकिस्तान में खून की धारा बहेगी या फिर भारत आतंकमुक्त रहकर पाकिस्तान के खिलाफ युद्ध को स्थगित रखने का मन बनाकर रखेगा। मोदी के इस संबोधन में राष्ट्र के गौरवान्वित होने की ध्वनि प्रतिबिंबित हो रही है।

मोदी ने अपने भाषण में जो कहा, वह भारत की ताकत की झलक है। जैसे देश का सामर्थ्य और उसका संयम सबने देखा, तो दूसरी तरफ हमारे वीर सैनिकों ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए असीम शौर्य का प्रदर्शन किया। मैं उनकी वीरता को, उनके साहस को, उनके पराक्रम को- हमारे देश की हर माता को, देश की हर बहन को, और देश की हर बेटी को, ये पराक्रम समर्पित करता हूं।

22 अप्रैल को पहलगाम में आतंकवादियों ने जो बर्बरता दिखाई थी, उसने देश और दुनिया को झकझोर दिया था। इस आतंकी हमले के बाद सारा राष्ट्र, हर नागरिक, हर समाज, हर

वर्ग, हर राजनीतिक दल, एक स्वर में, आतंक के खिलाफ कड़ी कार्रवाई के लिए उठ खड़ा हुआ। हमने आतंकवादियों को मिट्टी में मिलाने के लिए भारत की सेनाओं को पूरी छूट दे दी। और आज हर आतंकी, आतंक का हर संगठन जान चुका है कि हमारी बहनों-बेटियों के माथे से सिंदूर हटाने का अंजाम क्या होता है।' पर जब देश एकजुट होता है, नेशन फर्स्ट की भावना से भरा होता है, राष्ट्र सर्वोपरि होता है, तो फौलादी फैसले लिए जाते हैं, परिणाम लाकर दिखाए जाते हैं।

और फिर युद्ध में पाकिस्तान के नाक रगड़ने की बात साझा करते हुए मोदी ने कहा कि युद्ध के मैदान पर हमने हर बार पाकिस्तान को धूल चटाई है। और इस बार ऑपरेशन सिंदूर ने नया आयाम जोड़ा है। हमने रेगिस्तानों और पहाड़ों में अपनी क्षमता का शानदार प्रदर्शन किया, और साथ ही, न्यू एज वॉरफेयर में भी अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। इस ऑपरेशन के दौरान, हमारे मेड इन इंडिया हथियारों की प्रमाणिकता सिद्ध हुई। आज दुनिया देख रही है, 21वीं सदी के वॉरफेयर में मेड इन इंडिया डिफेंस इक्विपमेंट्स, इसका समय आ चुका है।

तो मोदी ने साफ किया कि हर प्रकार के आतंकवाद के खिलाफ हम सभी का एकजुट रहना, हमारी एकता, हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। निश्चित तौर पर ये युग युद्ध का नहीं है, लेकिन ये युग आतंकवाद का भी नहीं है। टैररिज्म के खिलाफ जीरो टॉलरेंस, ये एक बेहतर दुनिया की गारंटी है। और बताया कि विश्व समुदाय को भी कहूंगा, हमारी घोषित नीति रही है, अगर पाकिस्तान से बात होगी, तो टेरेरिज्म पर ही होगी, अगर पाकिस्तान से बात होगी, तो पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर, पीओके पर ही होगी।

मोदी ने सही ही कहा कि आज बुद्ध पूर्णिमा है। भगवान बुद्ध ने हमें शांति का रास्ता दिखाया है। शांति का मार्ग भी शक्ति से होकर जाता है। मानवता, शांति और समृद्धि की तरफ बढ़े, हर भारतीय शांति से जी सके, विकसित भारत के सपने को पूरा कर सके, इसके लिए भारत का शक्तिशाली होना बहुत जरूरी है, और आवश्यकता पड़ने पर इस शक्ति का इस्तेमाल भी जरूरी है। और पिछले कुछ दिनों में, भारत ने यही किया है। और बात साफ है कि पाकिस्तान ने बुद्ध को क्रुद्ध किया तो फिर युद्ध, युद्ध और युद्ध के द्वारा भारत की सेनाएं पाकिस्तान को कब्रिस्तान में बदल देंगीज।

युद्ध : विनाश का वैश्विक व्यापार

विवेकानंद माथने

हर युद्ध की सबसे बड़ी कीमत आम आदमी चुकाता है। जान-माल के नुकसान के साथ-साथ आम जीवन की बुनियादी ज़रूरतें और सामाजिक प्रगति भी बुरी तरह प्रभावित होती है। सरकारें शिक्षा, स्वास्थ्य और गरीबी-उन्मूलन जैसे जनकल्याणकारी क्षेत्रों के बजट में कटौती कर रक्षा खर्च बढ़ा देती हैं, जिससे आम जनता का जीवन और भी कठिन हो जाता है।

युद्ध मानव सभ्यता के इतिहास का एक दुखद, लेकिन महत्वपूर्ण अध्याय रहा है। प्राचीन काल से लेकर आज तक, भले ही युद्धों के स्वरूप बदलते रहे हों, परंतु उनके मूल कारण आज भी वही हैं-सत्ता की लिप्सा, प्रभुत्व की चाह और संकुचित राष्ट्रवाद। महाभारत का महासंग्राम हो या प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध, हर संघर्ष के बाद शेष रह जाती हैं, केवल लाशें, उजड़े नगर, बिखरे सपने और मानवता की हार। विडंबना यह है कि आज जब विज्ञान और तकनीक नई ऊंचाइयों पर पहुंच चुकी है, तब भी दुनिया युद्ध के उन्माद से ग्रस्त है, संकुचित राष्ट्रवाद का ज्वर चढ़ा है, हर देश दूसरे को आंखें दिखा रहा है, मानो एक-दूसरे के खून का प्यासा हो। परिस्थितियां धीरे-धीरे तीसरे विश्वयुद्ध की ओर बढ़ रही हैं।

यूक्रेन, जो कभी सोवियत संघ का हिस्सा था, अब %नार्थ अटलांटिक ट्रीटी ऑर्गेनाइजेशन (नाटो) से जुड़ना चाहता है। नाटो ने रूस को घेरने की मंशा से यूक्रेन का समर्थन किया और यह टकराव युद्ध में बदल गया। यह संघर्ष तीन साल से जारी है। यूक्रे न के शहर खंडहरों में तब्दील हो गए हैं और बुनियादी ढांचे ध्वस्त हो गए हैं। अब तक दोनों पक्षों के कुल 1.90 लाख से अधिक सैनिक मारे गए और 2.80 लाख से अधिक घायल हुए हैं। यूक्रेन की 1.43 करोड़ आबादी विस्थापित हो चुकी है, जिनमें से 65 लाख से अधिक शरणार्थी बनकर विदेश चले गए हैं और शेष अपने ही देश में दर-दर भटक रहे हैं। यूक्रेन की अर्थव्यवस्था चरमरा चुकी है, वहीं पश्चिमी प्रतिबंधों के चलते रूस की अर्थव्यवस्था भी गंभीर दबाव में है।

हमास के हमले और नागरिकों को बंधक बनाए जाने के जवाब में इज़राइल ने गाज़ा पर भीषण हमला किया। इस बदले की आग में हज़ारों निर्दोष लोगों की जानें गईं और लाखों घायल हुए, जिनमें बड़ी संख्या में महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। गाज़ा के करीब 19 लाख लोग विस्थापित हो चुके है, 70प्रतिशत से अधिक आवास नष्ट हो चुके हैं और अस्पताल, स्कूल, पानी और बिजली व्यवस्था का लगभग 90प्रतिशत ढांचा पूरी तरह ध्वस्त हो गया है। भोजन और पानी जैसी बुनियादी ज़रूरतों का भी गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है।

सूडान में 2023 से सेना और रैपिड सपोर्ट फोर्स (आरएसएफ) के बीच जारी संघर्ष में 61,000 से अधिक लोग मारे गए और 1.2 करोड़ विस्थापित हुए हैं। म्यांमार में सैन्य तख्तापलट के बाद गृहयुद्ध छिड़ा, जिसने लाखों को शरणार्थी बना दिया। यमन में 2014 से जारी युद्ध ने 68प्रतिशत आबादी को मानवीय सहायता पर निर्भर कर दिया। इथियोपिया में %टिग्रे संघर्ष ने हजारों की जान ली और लाखों को भुखमरी की कगार पर पहुंचा दिया। इराक, लेबनान और अफगानिस्तान के ज़ख्म आज भी हरे हैं।

हर युद्ध की सबसे बड़ी कीमत आम आदमी चुकाता है। जान-माल के नुकसान के साथ-साथ आम जीवन की बुनियादी ज़रूरतें और सामाजिक प्रगति भी बुरी तरह प्रभावित होती है। सरकारें शिक्षा, स्वास्थ्य और गरीबी-उन्मूलन जैसे जनकल्याणकारी क्षेत्रों के बजट में कटौती कर रक्षा खर्च बढ़ा देती हैं, जिससे आम जनता का जीवन और भी कठिन हो जाता है। भूख, बेरोजगारी और असमानता बढ़ती है। युद्ध का अंजाम केवल विनाश होता है, फिर भी युद्ध क्यों जारी रहते हैं? इसे क्यों नहीं रोका जाता? आखिर कौन हैं वे, जो युद्ध से लाभ उठा रहे

हैं? दरअसल, युद्ध केवल दो देशों के बीच का संघर्ष नहीं होता, यह एक सुनियोजित योजना का हिस्सा होता है, जिसमें कुछ ताकतें पर्दे के पीछे से भारी लाभ कमाती हैं।

युद्ध के पीछे असली कारण संसाधनों पर कब्जा, हथियारों की बिक्री, मंदी से जूझती अर्थव्यवस्था को गति देना और सत्ता को मजबूत करना होता है। तेल, खनिज, जल, जमीन और श्रम पर नियंत्रण पाने के लिए बार-बार लड़ाइयां लड़ी गई हैं। अमेरिका और यूरोपीय राष्ट्रों द्वारा यूक्रेन को हथियार देना एकतरफा नहीं है, बल्कि इसके पीछे यूक्रेन के संसाधनों और क्षेत्रीय प्रभाव पर पकड़ बनाने का रणनीतिक लक्ष्य भी है। इन युद्धों ने पुराने हथियारों के भंडार खाली कर दिए हैं। एआई ड्रोन, हाईपरसोनिक मिसाइलें और साइबर हथियार जैसी नई तकनीकों वाले हथियार भी आज़माए गए हैं। युद्ध एक ऐसी लाइव टेस्टिंग लैब बन चुका है, जहां नए हथियारों को परखा जाता है और उनके लिए बाज़ार तैयार किया जाता है।

अब सभी देश हथियारों की दौड़ में शामिल हो गए हैं। इससे रक्षा उद्योग के लिए एक बड़ा बाजार खड़ा हुआ है। अमेरिका, रूस, फ्रांस, चीन और जर्मनी जैसे देश बड़े हथियार निर्यातक हैं। युद्ध उनकी अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत कर रहा है। पारंपरिक हथियारों से लेकर परमाणु, जैविक और अब %आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस% (एआई) आधारित स्मार्ट हथियारों तक, यह उद्योग युद्ध पर ही टिका है। %स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट% (सीपरी) की रिपोर्ट के अनुसार, 2024 में वैश्विक सैन्य खर्च 2.70 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच गया है।

विकसित देशों की अर्थव्यवस्थाएं जब भी आर्थिक संकट और मंदी से गुजरती हैं तब युद्ध उनके लिए एक अवसर बन जाता है। हथियारों की खपत बढ़ती है, पुराना स्टॉक खाली होता है और नए उत्पादनों का बाजार तैयार होता है। अमेरिका, रूस, फ्रांस जैसे देश पुराने हथियारों को युद्ध में झोंककर अपनी सैन्य उत्पादन प्रणाली को पुनर्जीवित करते हैं। युद्ध उनके आर्थिक पुनरुद्धार की रणनीति बन जाता है।हाल की पहलगाम जैसी आतंकी घटनाएं निस्संदेह बहुत पीड़ादायक हैं, लेकिन यह भी सोचने की ज़रूरत है कि क्या इन हमलों के पीछे खडी बड़ी ताकतें दोनों देशों को युद्ध के रास्ते पर धकेलना चाहती हैं? जनता का आक्रोश जायज़ होते हुए भी, यह प्रश्न जरूरी है कि क्या ये हमले केवल आतंकियों के हैं या कोई और ताकत इन्हें अंजाम देकर भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध की ज़मीन तैयार कर रही है? वे जानते हैं कि कोई भी बड़ा देश आम जनता के समर्थन के बिना युद्ध नहीं लड़ सकता। पहलगाम जैसे आतंकी हमलों से उत्पन्न संवेदना का दोहन करना आसान होता है। युद्ध कई बार राष्ट्र की अस्मिता से जोड़ दिया जाता है। युद्ध के पहले ऐसी परिस्थितियां तैयार की जाती हैं कि शांति और सह-अस्तित्व में विश्वास रखने वाले लोग भी युद्ध के समर्थन में खड़े हो जाते हैं। संकुचित राष्ट्रवाद को उकसाने में कॉर्पोरेट मीडिया और सोशल मीडिया की बड़ी भूमिका है। फेक न्यूज़, उग्र भाषण और भावनात्मक उन्माद फैलाकर जनता को युद्ध के समर्थन में खड़ा कर दिया जाता है। लोग भ्रमित होकर प्रतिशोध की आग में युद्ध को न्याय समझने लगते हैं।

यदि यह उन्माद तीसरे विश्व युद्ध की ओर बढ़ा, तो निश्चित ही जैविक, परमाणु और %एआई% आधारित विध्वंसक प्रणालियों का प्रयोग होगा। यह ऐसी तबाही ला सकता है जिसकी कल्पना भी भयावह है और जिसके परिणाम पूरी मानवता को सदियों भुगतने पड़ेंगे। इसलिए जरूरी है कि हम युद्धोन्मादी नेताओं, उकसाने वाले मीडिया संस्थानों और हथियार बेचने वाले देशों के खिलाफ एकजुट होकर युद्ध को ही चुनौती दें। यह लोगों की ज़िम्मेदारी है कि वे युद्ध को नकारें और शांति का रास्ता चुनें। विनाश नहीं, जीवन चुनें !

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक भरत पटेल द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस 11, प्रेस काम्प्लेक्स, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल से मुद्रित तथा 226, एमपी नगर जोन-2, भोपाल से प्रकाशित। संपादक — भरत पटेल, प्रबंध सलाहकार — भारती पटेल, संपादकीय सलाहकार — विष्णु कौशिक, सलाहकार संपादक - स्मिता पटेल, स्थानीय संपादक —हाकम सिंह गुर्जर
प्रकाशन से संबंधित समस्त समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार। समस्त न्यायिक कार्यवाहियों के लिए क्षेत्राधिकार भोपाल न्यायालय का रहेगा। रजि. नं. भोपाल डिवी. 48 म. प्र. ई-मेल : dspbpl67@gmail.com, वेबसाईट: dainiksandhyaprakash.in

108 श्रीफल से मां कालका एवं मां गायत्री का हवन किया गया

औबेदुल्लागंज(संवाददाता)- वैशाख पूर्णिमा के पावन पर्व पर श्रद्धा मनोकामना काली मंदिर पर 108 श्रीफल से मां कालका का एवं मां गायत्री का हवन संपन्न किया जिसमें रमेश विजयवर्गी दिनेश भाई द्वारा हवन संपन्न कराया धर्मेंद्र चौरसिया ने धर्मपत्नी साहित हवन किया इस अवसर पर सुरजीत सिंह बिल्ले, सुंदर दास रामानी, नवल मालवीय वर्मा मां काली के परम भक्त अरुण भावसार उपस्थित रहे।

दो करोड़ से रोशन होगा खेडा-सीपीई हाईवे, प्रथम चरण में लगे 102 स्ट्रीट लाइट पोल

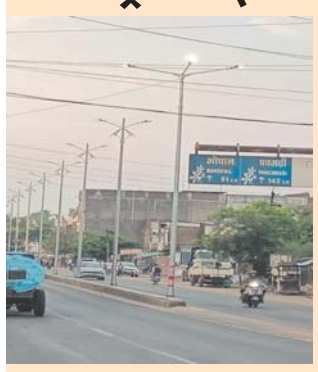

सांध्य प्रकाश, इटारसी। शहर से गुजरने वाले भोपाल-बैतूल हाईवे पर सुविधा बढ़ाने के लिए नगर पालिका इटारसी ने मुख्यमंत्री अधोसंचरना के तहत प्राप्त राशि 2 करोड़ से हाईवे पर सुविधाओं में इजाफा किया है। हाईवे पर खेड़ा क्षेत्र से सीपीई तक कुल 240 स्ट्रीट लाइट पोल लगाए जाने हैं। जिसका प्रथम चरण का लोकार्पण मप्र विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष वर्तमान विधायक डॉ सीतासरन शर्मा 13 मई करेंगे। नगरपालिका अध्यक्ष पंकज चौरे ने बताया कि प्रथम चरण में कुल 102 स्ट्रीट लाइट पोल जिनमें एलईडी बल्ब होंगे का लोकार्पण समारोह रखा गया है। यह समारोह वार्ड क्रमांक 09 खेडा में साई कृष्णा रिसोर्ट के सामने होगा। प्रथम चरण में स्ट्रीट लाइट पोल खेडा से बिजली कंपनी कार्यालय पीपल मोहल्ला में लग गए हैं।

महानगरों की तरह दिखेगा शहरः शहर के इंट्रेस खेडा से एग्जिट सीपीई तक सड़क पर सेंटर और साइड में कुल 240 स्ट्रीट लाइट पोल लगाने की योजना है। इन पोल्स के लग जाने से शहर महानगरों की तरह आकर्षक दिखने लगेगा। अभी सडक पर स्ट्रीट लाइट तो लगीं थी लेकिन वे बेतरतीब होने के कारण आकर्षक नहीं लगती थी,जो अब योजना के सुन्दर रूप लिए नजर आयेगा।

भारत और पाक के बीच चल रहे तनाव के संबंध में सोशल मीडिया एवं सुरक्षा से संबंधित निर्देश एवं समझाइश दी गई

औबेदुल्लागंज(संवाददाता)- पुलिस अधीक्षक के निर्देशन पंकज कुमार पाण्डेय के मार्गदर्शन में एस डी एम चंद्रशेखर श्रीवास्तव एसडीओपी शीला सुराणा तहसीलदार हेमंत शर्मा,एवं थाना प्रभारी भरत प्रताप सिंह एवं थाना बल के साथ कस्बा भ्रमण किया गया और नुक्कड़ जनसंवाद कर आमजन को वर्तमान में भारत और पाक के बीच चल रहे तनाव को संबंध में सोशल मीडिया एवं सुरक्षा से संबंधित निर्देश एवं समझाइश दी गई।

लाभमल जी रांका का निधन

आष्टा।श्री श्वेतांबर जैन समाज के वरिष्ठ एवं कपड़ा व्यवसायी आनंद रांका,पारस रांका,संजय रांका, बलेंद्र पिंटू रांका के पूज्य पिताजी तथा रुपचंद सुशील प्रवीण रांका के पूज्य काका साहब एवं अंशूल, कृतांशु, सोमिल,रुद्र के दादाजी तथा ईरव रांका के परदादा श्री लाभमलजी रांका का आकस्मिक निधन 13 मई मंगलवार को उपचार के दौरान इंदौर में हो गया। उनकी शवयात्रा उनके

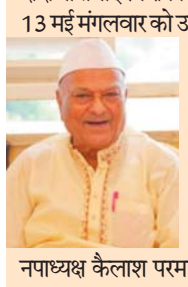

बुधवारा स्थित निवास से मुक्तिधाम ले जाई गई। उनके पुत्रों,पौत्रों ने मुखाग्नि दी। शवयात्रा में काफी संख्या में समाजजनों, स्नेहीजनों आदि ने शामिल होकर अंतिम बिदाई दी। लाभमलजी रांका के आकस्मिक निधन पर विधायक गोपालसिंह इंजीनियर, जनपद पंचायत अध्यक्ष दीक्षा सोनू गुणवान,नपाध्यक्ष हेमकुंवर रायसिंह मेवाड़ा, पूर्व नपाध्यक्ष कैलाश परमार,नपा उपाध्यक्ष सिद्धिका भुरू भाई, श्रीसंघ अध्यक्ष पवन सुराणा, पारसमल सिंघवी, प्रेम राय मामा,लोकेंद्र बनवट, विजय देशलहरा, रविन्द्र रांका,अनील विश्वास,राजा पारख, नरेन्द्र गंगवाल, राजेश बनवट,विपुल छाजेड़,पवन श्रीश्रीमाल, राकेश सोनी, अशोक रांका आदि ने शौक संवेदना व्यक्त कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

भोपाल-इंदौर समेत 7 संभाग में बारिश का अलर्टः एमपी के 38 जिलों में आंधी भी चलेगी

भोपाल। मध्यप्रदेश में एक्टिव 3 सिस्टम- वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ), टर्फ और साइक्लोनिक सर्कुलेशन की वजह से आंधी-बारिश का दौर जारी है। सोमवार को कई जिलों में मौसम बदला रहा। ऐसा ही मौसम मंगलवार को भी रहेगा। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर-उज्जैन समेत 7 संभाग के 38 जिलों में मौसम विभाग का अलर्ट है। रीवा, शहडोल और जबलपुर संभाग के जिलों

में मौसम साफ रहेगा और गर्मी बढ़ेगी।

मंगलवार को जिन जिलों में मौसम बदला रहेगा, उनमें भोपाल, उज्जैन, इंदौर, ग्वालियर, श्योपुर, भिंड, मुरैना, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, विदिशा, रायसेन, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, सीहोर, राजगढ़, शाजापुर, देवास, खंडवा, बुरहानपुर, खरगोन, आगर-मालवा, नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, अलीराजपुर, बड़वानी, निवाड़ी, टीकमगढ़, सागर, दमोह, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, सिवनी और पांढुर्णा शामिल हैं। यहां 30 से 50 किलोमीटर प्रतिघंटा तक की रफ्तार से आंधी चल सकती है।

ग्वालियर में 40.4 डिग्री रहा तापमान- प्रदेश में सोमवार को दिन का तापमान फिर से 41 डिग्री के पार पहुंच गया है। सोमवार को सबसे गर्म खजुराहो रहा। जहां तापमान 41.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। सतना में 40.7 डिग्री, रीवा में 40.5 डिग्री और नरसिंहपुर में 40.2 डिग्री सेल्सियस रहा। बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 38.4 डिग्री, इंदौर में 36.7 डिग्री, ग्वालियर में 40.4 डिग्री, उज्जैन में 37.8 डिग्री और जबलपुर में 38.3 डिग्री रहा। इकलौता हिल स्टेशन में तापमान 30.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

इधर, भोपाल में पूरे दिन धूप खिली रही, लेकिन शाम को मौसम बदल गया। कुछ इलाकों में बूंदाबांदी भी हुई। मौसम विभाग के अनुसार, रात में कई जिलों में बारिश हो सकती है।

उत्तरी हिस्से में गर्मी का असर बढ़ेगा- मौसम विभाग के अनुसार, 16 मई तक प्रदेश में आंधी, बारिश का अलर्ट है। जिन जिलों में सिस्टम की एक्टिविटी नहीं रहेगी, वहां गर्मी बढ़ जाएगी। उत्तरी हिस्से यानी, ग्वालियर-चंबल में आंधी-बारिश के साथ गर्मी का असर भी बना रहेगा।

इसलिए बदला मौसम

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि वर्तमान में कुछ सिस्टम एक्टिव है। इस वजह से प्रदेश में मौसम बदला है। 16 मई तक हल्की बारिश गरज-चमक की स्थिति बनी रहेगी। इसके बाद गर्मी का असर बढ़ सकता है।

इन जिलों में सबसे ज्यादा गर्मी

मौसम विभाग की मानें तो मई महीने में ग्वालियर, छतरपुर, नरसिंहपुर, निवाड़ी, मैहर, टीकमगढ़, भिंड, दतिया, खरगोन, बड़वानी, खंडवा, मुरैना, राजगढ़, रायसेन, शाजापुर, श्योपुरकलां, शिवपुरी और विदिशा जिलों में पारा 45 डिग्री या इससे ज्यादा रहने का अनुमान है। इनमें ग्वालियर-चंबल संभाग के साथ मालवा-निमाड़ के कुछ शहरों में भी तेज गर्मी रहेगी। छतरपुर के खजुराहो और नौगांव, निवाड़ी के पृथ्वीपुर में पारा 48 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है।

भोपाल में पारा 44 से 45 डिग्री के बीच रहने का अनुमान है जबकि इंदौर, जबलपुर और उज्जैन में भी पारा इतना रह सकता है। बड़े शहरों में ग्वालियर में सबसे ज्यादा गर्मी पड़ेगी। यहां पारा 46-47 डिग्री के बीच पहुंचने का अनुमान है।

ठेकेदार को फायदा पहुंचाने निगम अधिकारियों की हेराफेरी, 15 करोड़ के टेंडर को सवा करोड़ किया

ग्वालियर। ग्वालियर नगर निगम के अधिकारियों पर एक गंभीर आरोप लग रहा है, जिसमें उन्होंने गेंट्री के टेंडर की माप और राशि में खेल कर 15 करोड़ रुपए के टेंडर को मात्र सवा करोड़ में बदल दिया। इस टेंडर में गड़बड़ी और आंकड़ों की बाजीगरी का आरोप है, जो किसी एक व्यक्ति को फायदा पहुंचाने के लिए की गई है। डीबी स्टार रिपोर्टर ने इस मामले की पड़ताल की, और पता चला कि टेंडर को गलत तरीके से तैयार किया गया, जिससे निगम को भारी राजस्व नुकसान हुआ है।

टेंडर में कैसे हुई गड़बड़ीः गेंट्री के लिए जारी टेंडर में कई ऐसी गड़बड़ियां की गईं, जिनसे निगम को नुकसान हुआ। पांच मई को जारी किए गए इस टेंडर में एक स्थान की गेंट्री की चौड़ाई 90 फीट और लंबाई 10 फीट बताई गई थी, लेकिन इसे 180 फीट के रूप में दर्शाया गया। इसका सीधा मतलब है कि टेंडर में 90 प्रतिशत जगह कम दिखाई गई, जिससे कुल 6592 फीट विज्ञापन क्षेत्र में कमी की गई।

कलेक्टर गाइडलाइन की उड़ाई धज्जियां: निगम ने इस टेंडर में कलेक्टर गाइडलाइन के नियमों का पालन नहीं किया। 2022 में यूनिपोल के टेंडर में हर स्थान के लिए अलग-अलग रेट निर्धारित किए गए थे, लेकिन इस टेंडर में निगम ने एक समान दर यानी 184 रुपए प्रति वर्ग फीट तय की। कलेक्टर गाइडलाइन का सही से पालन न करके निगम ने नियमों की धज्जियां उड़ाई।

स्पेलिंग में गड़बड़ी कर किया भ्रमितः निगम द्वारा जारी किए गए टेंडर की स्पेलिंग में भी गड़बड़ी की गई। गेंट्री की सही स्पेलिंग को लिख कर अपलोड किया गया, ताकि कोई भी व्यक्ति सही जानकारी नहीं पा सके और टेंडर में भाग लेने से वंचित रह जाए। यह एक चाल थी, ताकि अधिकारियों की करतूतों को छुपाया जा सके।

भगवान बुद्ध के चरित्र की बच्चों को दी जानकारी

सांध्य प्रकाशइटारसी,बुध्द पूर्णिमा के पावन दिवस पर, बुद्ध विहार नव कला सदस्यों द्वारा मुस्कान संस्था का दौरा किया गया जहा बच्चों को भगवान बुद्ध के चरित्र के बारे में बताया गया। सदस्यों ने संस्था के बच्चों के साथ बातचीत की और उन्हें भगवान बुद्ध के जीवन और उनकी शिक्षाओं अन्य जानकारी दी। प्रज्ञा बुद्ध विहार के सदस्य रीना डोंगरे दोईफोड़े,रेखा डोंगरे,सुनीता चौहान ,मंजू तरदे, शेख फारुख ने बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग, चार आर्य सत्य और शांति एवं करुणा के संदेशों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बच्चों को बुद्ध की शिक्षाओं को अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया। मुस्कान संस्था के बच्चों ने भी बड़ी उत्सुकता से बुद्ध के बारे में जानकारी प्राप्त की और सदस्यों से कई प्रश्न पूछे। संस्था के पदाधिकारियों ने बुद्ध विहार नव कला के सदस्यों का आभार व्यक्त किया और इस जानकारी को बच्चों के लिए अत्यंत उपयोगी बताया।

इस अवसर पर प्रज्ञा बुद्ध विहार की रीना डोंगरे ने कहा, ÷हमारा उद्देश्य है कि युवा पीढ़ी भगवान बुद्ध की महान शिक्षाओं से अवगत हो और उनके बताए मार्ग पर चलकर एक बेहतर समाज का निर्माण करे।÷मुस्कान संस्था के मनीष ठाकुर ने कहा, ÷हम प्रज्ञा बुद्ध विहार के सदस्यों के आभारी हैं कि उन्होंने हमारे बच्चों को बुद्ध के बारे में इतनी महत्वपूर्ण जानकारी दी। यह निश्चित रूप से उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाएगी।÷ यह दौरा बच्चों के लिए एक ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक अनुभव रहा।

पूर्व मंत्री अरुण यादव का सागर में स्वागत

सागर/ भारत सरकार के पूर्व मंत्री और प्रदेश कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष अरुण यादव अल्प प्रवास पर सागर पधारे। उनके यहां आगमन पर जिला शहर कांग्रेस अध्यक्ष राजकुमार पचौरी व प्रदेश कांग्रेस महासचिव रेखा चौधरी सहित स्थानीय कांग्रेसजनों ने उनका भव्य एवं आत्मीय स्वागत किया।

पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण यादव ने जिला ग्रामीण कांग्रेस अध्यक्ष डॉ आनंद अहिरवार की उपस्थिति में तिलिवार्ड स्थित महामाया बौद्ध विहार मंदिर पहुंचकर भगवान बुद्ध की जयंती पर उनकी पूजा अर्चना कर भगवान बुद्ध के संदेश शांति प्रेम और सद्भाव को आत्मसात करने का आवाहन किया। इस दौरान पीसीसी के जिला शहर प्रभारी मनोज कपूर, पूर्व मंत्री सुरेंद्र चौधरी व हर्ष यादव, पूर्व विधायक सुनील जैन, वीरसिंह यादव, मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता डॉ संदीप सबलोक, अमित राम जी दुबे, विकास शर्मा, सेवादल अध्यक्ष सिंटू कटारे, पीसीसी सह प्रभारी अभिषेक यादव (जबलपुर), जिला शहर कांग्रेस प्रवक्ता अवधेश तोमर, आईटी सेल अध्यक्ष पीयूष अवस्थी, रामकुमार पचौरी, अभिषेक गौर, विजय साहू, शाहरुख खान, अंकुर यादव, दीपेंद्र कोरी, अशोक अहिरवार, राजकुमार कोरी, आनंद हेला, पवन जाटव मडिया समेत बड़ी संख्या में कांग्रेसजनों ने फूलमाला पहनकर केंद्रीय मंत्री अरुण यादव का गरिमामय स्वागत किया। उन्होंने सर्किट हाउस में आमजन, पार्टी पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं से मुलाकात कर विभिन्न राजनीतिक स्थितियों पर चर्चा की। जन सामान्य के साथ-साथ पार्टी पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं से मुलाकात करने के बाद

विभिन्न स्थानीय कार्यक्रमों में हिस्सा लिया।

पूर्व केंद्रीय मंत्री तथा मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष अरुण यादव ने इस दौरान कहा कि पहलगाम हमले के बाद भारतीय सेना ने जिस अदम्य साहस और बहादुरी का परिचय दिया है वह वंदनीय है। पहलगाम आतंकी हमले में हमारे बेगुनाह लोगों की जान गई जिससे समूचा देश क्रोधित हुआ। सरकार ने सेना को कार्रवाई की खुली छूट दी। कांग्रेस भी हर कदम पर सरकार के साथ खड़ी रही। हमारे लिए राष्ट्र ही सर्वोपरि है। उन्होंने कहा कि सेना ने 1971 में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी के इतिहास को दोहराने का काम किया है। हमारी सेना ने आतंकी ठिकानों को तबाह किया, लेकिन फिर जिस तरह से ट्रंप का ट्वीट आया, उससे हम सभी अचंभित हैं। इससे हम सभी के मन में बहुत सारे सवाल खड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि इस मामले में हम सरकार से पारदर्शिता की मांग करते हैं। देश की जनता यह जानना चाहती है कि क्या भारत ने तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप को स्वीकार कर लिया है तथा हमने सीजफायर में पाकिस्तान से क्या वादे लिए हैं, देश के लोगों को यह भी जानने का हक है।

पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण यादव ने राहतगढ़ में सुरखी विधानसभा के प्रत्याशी रहे नीरज शर्मा तथा ग्राम धनोरा में राजकुमार सिंह तथा सागर में कांग्रेस नेता प्रीतम यादव के निवास पर पहुंचकर उनके परिजनों से शिष्टाचार भेंट की। इसके अलावा उन्होंने सागर में वरिष्ठ कांग्रेस नेता तथा नगर निगम के पूर्व महापौर संतोष पांडे, नगर निगम के पूर्व अध्यक्ष त्रिलोकी नाथ कटारे, नेता प्रतिपक्ष बाबू सिंह यादव तथा आईटी सेल के पंकज सिंघई के बड़े पिताजी गांधीवादी नेता तथा देहदानी हेमचंद जैन जी के निधन पर शोकाकुल परिवारों में पहुंचकर अपनी संवेदनाएं व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि देकर उनकी आत्मा की शांति की प्रार्थना भी की।

अधिकांश वाहन चालक नहीं करते यातायात नियमों का पालन

डिवाइडर नहीं होने से लगातार हो रहे हैं हादसे, आवागमन अवस्थित

आष्टा। आष्टा शहर के पुराना भोपाल इंदौर मार्ग पर बना नया पार्वती पुल दुर्घटनाओं केंद्र बनता जा रहा है यहां पर बीती रात्रि भी एक बाइक और स्कूटी में जोरदार टक्कर हो गई जिसमें दो व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गए।

दरअसल शहर के पार्वती नदी पर पुराना पार्वती पुल जर्जर हो जाने कारण पीडब्ल्यूडी विभाग एमपीआरडीसी ने नया पार्वती पुल बनाया है इस पर यातायात भी शुरू हो गया है लेकिन पुराना बस स्टैंड से लेकर इंदौर नाके तक अवस्थित यातायात के कारण लगातार दुर्घटनाएं हो रही है , खासकर इस मार्ग पर डिवाइडर नहीं लगने कारण दुर्घटनाएं बढ़ती जा रही है। स्थानीय नागरिकों ने पुराना बस स्टैंड से इंदौर नाके तक डिवाइडर लगाने की मांग की है ताकि दुर्घटनाएं ना हो।

पुराने पार्वती पुल से नए पुल पर आ जाते हैं वाहन चालक बता दे की पुराना बस स्टैंड तरफ से पुराने पुल से

लोग नए पुल पर आ जाते हैं और इंदौर तरफ से आने वाले वाहन चालकों से आपस में भिड़ जाते हैं गफलत में वाहन चालकों को मालूम नहीं पड़ पता है कि वह यातायात नियमों का पालन नहीं कर रहे हैं अगर डिवाइडर लग जाए तो कुछ हद तक दुर्घटनाओं में कमी आ जाएगी।

डिवाइडर लगे तो दुर्घटनाएं रुके

नागरिक घनश्याम जांगड़ा, फैजुद्दीन ने बताया कि जब से पार्वती पुल बना है तब से ही दुर्घटनाएं हो रही है शासन प्रशासन, संबंधित विभाग को पार्वती पुल से लेकर इंदौर नाका तक डिवाइडर लगाने चाहिए ताकि दुर्घटनाएं ना हो।

डिवाइडर लगाने की कार्य योजना बना रहे हैं

नगर पालिका अध्यक्ष हेमकुमार रायसिंह मेवाड़ा और सीएमओ राजेश सक्सेना ने बताया कि पुराना बस स्टैंड से इंदौर नाके तक हो रही दुर्घटनाओं को लेकर चिंतित है और जल्द ही इस मार्ग पर डिवाइडर लगाने की कार्य योजना है।

बूढ़ा में बिहारी जी मंदिर के पास 5 लाख से बनेगा समाज भवनः ललिता यादव

प्रधानमंत्री आवास के फार्म भरने लगाया कैंप

छतरपुर। छतरपुर विधायक श्रीमती ललिता यादव ने आज छतरपुर विधानसभा के ग्राम बूढा में बिहारी जी मंदिर के पास 5 लाख की लागत से बनने वाले समाज भवन का भूमि-पूजन किया। छतरपुर विधायक श्रीमती ललिता यादव ने मंदिर में भगवान की पूजा-अर्चना कर क्षेत्र के विकास और सबकी खुशहाली की कामना की। छतरपुर विधायक श्रीमती ललिता यादव ने बताया कि समाज भवन के बनने से भक्तों को धार्मिक कार्यक्रमों के आयोजन में दिक्कत नही आयेगी। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास के आवेदनों को ऐप में फीड कराने के लिए

बूढा में ही कैंप लगाया और अपने मोबाइल से भी लोगों के आवेदनों को ऐप में लोड किया। विधायक श्रीमती ललिता यादव ने इस दौरान कहा कि गांव वालों को इससे आवेदन करने के लिए परेशान नही होना पड़ेगा। ग्रामीणजनों ने छतरपुर विधायक श्रीमती ललिता यादव द्वारा क्षेत्र के विकास में किए जा रहे लगातार कार्यो के लिए सराहना की।

प्रशासन की लापरवाही से हाईवे पर खुलेआम ढाबे पर बिक रही शराब

मंडला/अजीत पटेल। जिले अवैध शराब का कारोबार जोरों पर चल रहा है, पहले भी अनेकों दफा शिकवा-शिकायत एवं समाचार प्रकाशन के साथ-साथ पक्ष-विपक्ष द्वारा अवैध शराब की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने हेतु कदम उठाए गए, परन्तु प्रशासनिक अधिकारीयों की लापरवाही के चलते दोषियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई।

कटरा-सेमरखापा वायपास के किनारे बने ढाबों में इन दिनों अवैध रूप से शराब की बिक्री चरम सीमा पर है। वहीं उसके आसपास के होटल और ढाबों में भी खाने की आड़ में शराब परोसने का धंधा खूब फल-फूल रहा है।शासन के आदेश के बावजूद हाइवे और मुख्य मार्गों में शराब बेचने का अवैध कारोबार चल रहा है,जिसका खामियाजा आये दिन आमजन को उठाना पड़ रहा है, वहीं अपनी हिस्सेदारी में चूर जिम्मेदारों द्वारा कोई कार्रवाई नहीं किए जाने के कारण अवैध शराब का अवैध व्यापार दिनों-दिन बुलंद हो रहा हैं। ऐसा नहीं है कि पुलिस प्रशासन को या फिर आबकारी विभाग को इसकी जानकारी नहीं है, जानकारी होने के बाद भी कार्रवाई नहीं होना कई सवाल खड़े करता है।प्रशासन की नाक के नीचे देशी-विदेशी शराब का अवैध कारोबार का अड्डा बने ढाबे में धड़ल्ले से खुलेआम बिक रही शराब के इस गोरखधंधे के पीछे कहीं ना कहीं विशेष संरक्षण प्राप्त होने की आशंका को भी दरकिनार नहीं किया जा सकता है।कुछ संरक्षण प्राप्त कालाबाजारी अपनी जेब भरने के लिए शासकीय नीति के खिलाफ काम करने में भी संकोच नहीं कर रहे।

हाइवे से शराब बिक्री पर रोक लगाने का शासन का आदेश हुआ फेल

शासन-प्रशासन द्वारा हाइवे और मुक्य मार्गो से शराब के अवैध कारोबार को हटवाने का स्पष्ट आदेश किया गया है,लेकिन मुख्य मार्ग और हाइवे पर बने ढाबे और रेस्टोरेंट शराब की दुकानों का रूप ले रही हैं।हालत यह है कि हाइवे और ढाबों पर किसी भी समय जाएं तो वहां देशी,अंग्रेजी या बियर उपलब्ध करा दी जाती है यही नहीं शराब या बियर लेने पर इन्हीं ढाबों में बैठकर आराम से पीने की भी आजादी दी जा रही है।

शासकीय हाई स्कूल अंजनी(मवई) का रिजल्ट हैट्रिक स्तर पर आया

मण्डला। जिले के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र विकासखंड मवई के अंतर्गत शासकीय हाई स्कूल अंजनी में लगातार विगत तीन वर्षों से हाई स्कूल बोर्ड परीक्षा में 100त्न रिजल्ट आ रहा है।शासकीय हाई स्कूल अंजनी में विषय विज्ञान का एक नियमित शिक्षक है जो कि प्रभारी प्राचार्य भी हैं तथा शेष विषयों के अतिथि शिक्षक हैं।प्रभारी प्रचार्य सह विज्ञान शिक्षक गिरजा शंकर सिंह बघेल को रसायन शास्त्र में महारथ हासिल है।शिक्षक गिरजा शंकर की कार्यप्रणाली कुछ इस प्रकार से है यथा आदिवासी छात्र-छात्राओं के घर-घर जाकर संपर्क करना,छात्रों के माता-पिता ना मिलने पर ग्राम पंचायत के अंतर्गत रोजगार गारंटी योजना मैं जाकर संपर्क करना।आदिवासी छात्र-छात्राओं को विषयानुसार ग्रामीण भाषाओं का उपयोग करके कठिन विषय वस्तु को टी एल एम बनाकर सरल शब्दों में समझाना,कमजोर वर्ग के छात्र छात्राओं को प्रत्येक रविवार को स्कूल लगाकर विषयों का अध्यापन कार्य कराना,प्रभारी प्राचार्य गिरजा शंकर सिंह बघेल के द्वारा प्रत्येक वर्ष जो छात्र प्रथम श्रेणी में आते हैं उन्हें डेढ़ किलो का एक कांसे का पात्र दिया जाता है। इस सत्र 2025 में शिवम कुमार कक्षा दसवीं में 89त्न

अर्जित कर प्रथम श्रेणी में आया है उसे प्रभारी प्राचार्य द्वारा छात्र 15 अगस्त में पुरस्कृत किया जाएगा द्य

ग्राम पंचायत अंजनी के सरपंच शिव कुमार मरावी का भी विशेष योगदान रहता है जैसे सरपंच द्वारा माह के अंत में स्कूल के समस्त शिक्षक एवं छात्र-छात्राओं के अध्ययन अध्यापन में विशेष ध्यान देना,समीक्षा करना और पालकों से संपर्क कर प्रेरित करना।इसी प्रकार मवई विकासखंड के शिक्षा अधिकारी एच एस परते के द्वारा कक्षा दसवीं के छात्र-छात्राओं को विषय अनुसार रीमेडीअल क्लासों के संचालन तथा विद्यालय की मूलभूत सुविधाओं की पूर्ति में विशेष योगदान रहा है।विगत तीन वर्षों से शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम आने पर सरपंच श्री मरावी,बी ई ओ मवई एच एस परते सहित प्रभारी प्राचार्य श्री बघेल द्वारा समस्त शिक्षकगण एवं छात्र-छात्राओं को बधाइयां देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की गई है द्यपालकों ने हर्ष व्यक्त करते हुए उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम का श्रेय प्रभारी प्राचार्य एवं शिक्षकों को दिया है।विज्ञान शिक्षक सह प्रभारी प्राचार्य श्री बघेल की इस उपलब्धि पर पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी उदयभान पटेल,अखिलेश चंद्रोल सेवा निवृत शिक्षक,विवेक शुक्ला जिला अध्यक्ष

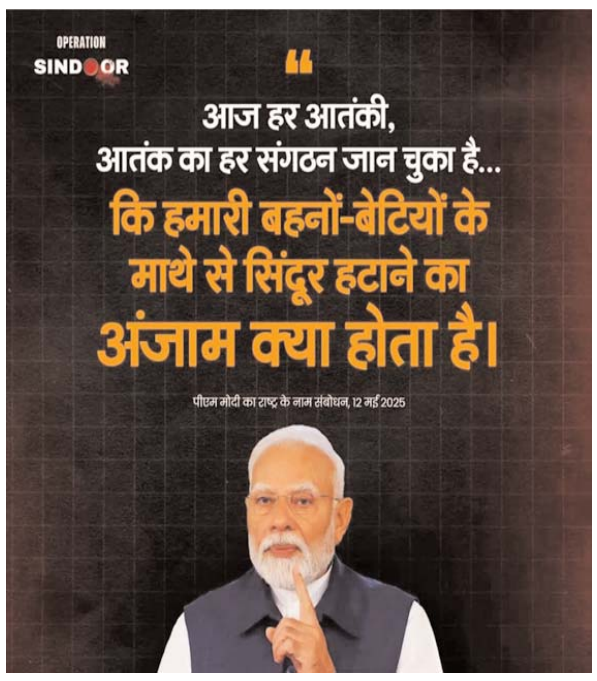

आईपीएल के बाकी मैच 17 मई से शुरू होंगे, 6 शहरों में 17 मुकाबले खेले जाएंगे

IPL 2025 - 17 Matches (6 venues with 2 double headers)

17-May-25	Sat	7:30 PM	Royal Challengers Bengaluru	Kolkata Knight Riders	Bengaluru
18-May-25	Sun	3:30 PM	Rajasthan Royals	Punjab Kings	Jaipur
18-May-25	Sun	7:30 PM	Delhi Capitals	Gujarat Titans	Delhi
19-May-25	Mon	7:30 PM	Lucknow Super Giants	Sunrisers Hyderabad	Lucknow
20-May-25	Tue	7:30 PM	Chennai Super Kings	Rajasthan Royals	Delhi
21-May-25	Wed	7:30 PM	Mumbai Indians	Delhi Capitals	Mumbai
22-May-25	Thu	7:30 PM	Gujarat Titans	Lucknow Super Giants	Ahmedabad
23-May-25	Fri	7:30 PM	Royal Challengers Bengaluru	Sunrisers Hyderabad	Bengaluru
24-May-25	Sat	7:30 PM	Punjab Kings	Delhi Capitals	Jaipur
25-May-25	Sun	3:30 PM	Gujarat Titans	Chennai Super Kings	Ahmedabad
25-May-25	Sun	7:30 PM	Sunrisers Hyderabad	Kolkata Knight Riders	Delhi
26-May-25	Mon	7:30 PM	Punjab Kings	Mumbai Indians	Jaipur
27-May-25	Tue	7:30 PM	Lucknow Super Giants	Royal Challengers Bengaluru	Lucknow
28-May-25	Wed				
29-May-25	Thu	7:30 PM	Ghamasan.com Qualifier 1	Ghamasan.com	TBC
30-May-25	Fri	7:30 PM	Eliminator		TBC
31-May-25	Sat				
01-Jun-25	Sun	7:30 PM	Qualifier 2		TBC
02-Jun-25	Mon				
03-Jun-25	Tue	7:30 PM	Final		TBC

नई दिल्ली, एजेंसी। आईपीएल 2025 एक बार फिर जोश के साथ लौट रहा है! बीसीसीआई ने टूर्नामेंट की नई तारीखों का ऐलान कर दिया है। लीग 17 मई से बेंगलुरु में आरसीबी और केकेआर मैच के साथ शुरू होगी, जबकि फाइनल 3 जून को होगा, जिसका स्थान अभी तय नहीं है। भारत-पाकिस्तान के बीच युद्धविराम के बाद यह फैसला लिया गया, क्योंकि पहले सुरक्षा चिंताओं के चलते टूर्नामेंट 9 मई को रोक दिया गया था। सोशल मीडिया पर फैंस उत्साहित हैं और इस खबर को खूब शेयर कर रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, आईपीएल 2025 को 17 मई से 6 शहरों में 17 बचे हुए मैचों के साथ शुरू किया जाएगा, जिसमें 13 लीग और 4 प्लेऑफ मुकाबले शामिल हैं। पहला मैच बेंगलुरु में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और कोलकाता नाइट राइडर्स के बीच होगा। फाइनल 3 जून को खेला जाएगा, और दो रविवार को डबल-हेडर मैच होंगे। बीसीसीआई ने फ्रैंचाइजियों को 13 मई तक अपने खिलाड़ियों को बुलाने को कहा है।

क्यों रुका था टूर्नामेंट?

आईपीएल को 9 मई को रोकना पड़ा था, जब धर्मशाला में पंजाब किंग्स और दिल्ली कैपिटल्स मैच के दौरान हवाई हमले की चेतावनी मिली थी। भारत-पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव और पहलगाम आतंकी हमले के बाद कई विदेशी खिलाड़ी अपने देश लौट गए थे। 10 मई को युद्धविराम के बाद बीसीसीआई ने टूर्नामेंट को जल्द शुरू करने की योजना बनाई। पंजाब-दिल्ली मैच को रद्द मानकर दोनों टीमों को एक-एक अंक देने की संभावना है।

प्लेऑफ की रेस और टीमें

गुजरात टाइटंस और आरसीबी 16 अंकों के साथ प्लेऑफ की दौड़ में सबसे आगे हैं। पंजाब किंग्स, मुंबई इंडियंस, और दिल्ली कैपिटल्स भी दो प्लेऑफ स्थानों के लिए लड़ रहे हैं, जबकि लखनऊ सुपर जायंट्स और च्यक्र की उम्मीदें कम हैं। छ्स्च, राजस्थान रॉयल्स, और सनराइजर्स हैदराबाद बाहर हो चुके हैं। प्लेऑफ की तारीखें इस प्रकार हैं-

क्वालिफायर: 1-29 मई
एलिमिनेटर: 30 मई
क्वालिफायर: 2-1 जून
फाइनल: 3 जून

विदेशी खिलाड़ियों की वापसी पर सस्पेंस

कई विदेशी खिलाडी जैसे ऑस्ट्रेलियाई सितारे अपने देश लौट चुके हैं, और उनकी वापसी अनिश्चित है। बीसीसीआई ने फ्रैंचाइजियों को कहा है कि वे खिलाड़ियों पर दबाव न डालें। फिर भी, गुजरात टाइटंस ने अहमदाबाद में ट्रेनिंग शुरू कर दी है, जिसमें कगिसो रबाडा और शुभमन गिल जैसे सितारे शामिल हैं। फैंस को उम्मीद है कि 17 मई से आईपीएल उसी रोमांच के साथ शुरू होगा।

कैप्टन पॉलीप्लास्ट का एफवाय25 शुद्ध लाभ 76 प्रतिशत बढ़ा, मार्जिन 10.8 प्रतिशत तक पहुँचा!

मुंबई , एजेंसी। कैप्टन पॉलीप्लास्ट लिमिटेड माइक्रो इरिगेशन समाधान के प्रमुख निर्माता और निर्यातक में से एक है, और उसने अपने संचालन को उभरते हुए सौर ईपीसी और पॉलीमर बाजारों में विस्तारित किया है। कंपनी ने क्यू4 एफवाय25 और एफवाय25 के लिए अपनी ऑडिट की गई वित्तीय रिपोर्ट प्रस्तुत की। कंपनी की प्रदर्शन पर टिप्पणी करते हुए, कैप्टन पॉलीप्लास्ट लिमिटेड के होल टाईम डायरेक्टर श्री रितेश खिचाडिया ने कहा, हमने त्त्ञ्ज एफवाय25 में 13.3 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि के साथ स्वस्थ वृद्धि के साथ वर्ष का समापन किया। पूरे वर्ष के लिए, हमें दोनों आधों में बहुत अलग-अलग परिप्रेक्ष्य देखने को मिले। पहले हिस्से में, हमें मुख्य रूप से चुनावों और लंबी मॉन्सून के कारण माइक्रो इरिगेशन व्यवसाय में चुनौतियों के कारण राजस्व में गिरावट का सामना करना पड़ा। हालांकि, हमें एच2 में माइक्रो इरिगेशन व्यवसाय में मजबूत सुधार देखने को मिला। इसके अलावा, पूरे वर्षभर में सौर ईपीसी क्षेत्र में विशेष रूप से निवासी और रूफटॉप औद्योगिक परियोजनाओं में मजबूत गति देखी गई। इस वर्ष हमने सौर ईपीसी में अपने नेटवर्क का विस्तार कई राज्यों में किया और एफवाय26 में भी इसे जारी रखेंगे।आगे देखते हुए, हम अपने मुख्य और उभरते हुए व्यवसाय क्षेत्रों में अवसरों के प्रति आशावादी हैं। माइक्रो इरिगेशन उद्योग स्थिर विकास के लिए तैयार है, जो बढ़ती जागरूकता, सरकारी समर्थन और जल-संरक्षण समाधान की आवश्यकता से प्रेरित है। प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना निवासी रूफटॉप परियोजनाओं को एक महत्वपूर्ण बढ़ावा दे रही है, जो हमारे सौर ईपीसी क्षेत्र के लिए शुभ संकेत है। हम अहमदाबाद में एक नए उत्पादन संयंत्र की ओर भी काम कर रहे हैं, जो एच1 एफवाय26 के अंत से पहले शुरू होने की उम्मीद है। हम उत्पाद नवाचार, संचालन दक्षता और ग्राहक-केंद्रित समाधान के माध्यम से स्थायी विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। एक मजबूत नींव के साथ और उद्योग में सकारात्मक प्रवृत्तियों के साथ, कैप्टन पॉलीप्लास्ट दीर्घकालिक मूल्य निर्माण के लिए अच्छी स्थिति में है।

किआ कैरेन्स क्लैविस लॉन्च: फैमिली कार में बोल्ड डिज़ाइन और हाईटेक कम्फर्ट का मेल

नई दिल्ली, एजेंसी। किआ इंडिया, एक अग्रणी मास-प्रीमियम कार निर्माता कंपनी, ने अपने कैरेन्स पोर्टफोलियो में एक नया मॉडल कैरेन्स क्लैविस लॉन्च किया है। यह एक बड़ी, बोल्ड और बेहद स्पेशियस 3-रो कार है, जिसे आज के समय के आधुनिक और बड़े भारतीय परिवारों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। कैरेन्स क्लैविस एमपीवी और एसयूवी के बीच की दूरी को कम करती है और इसमें आराम, जगह और बोल्ड डिजाइन को आधुनिक तकनीक, सुरक्षा और भविष्यवादी लुक के साथ खूबसूरती से जोड़ा गया है। 'क्लैविस' नाम लैटिन शब्द क्लैविस औरिया से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'गोल्डन की'। यह नाम यादगार पारिवारिक रोमांच और हमेशा सहेज कर रखने वाली यादों का प्रतीक है। कैरेन्स क्लैविस के ज़रिए किआ एक ऐसी कार पेश कर रहा है जो नई पीढ़ी के परिवारों की आकांक्षाओं को दर्शाती है — जिसमें सूझबूझ से लिया गया डिज़ाइन, सोच-समझ कर दी गई खूबियाँ और वैश्विक स्तर की आधुनिक तकनीक शामिल हैं। कैरेन्स के लॉन्च के बाद से ही किआ ने भारत में फैमिली कार सेगमेंट की परिभाषा बदल दी है। सिर्फ तीन वर्षों में 2 लाख से ज्यादा भारतीय परिवारों ने इस पर भरोसा जताया है। भारतीय परिवारों की जरूरतों को गहराई से समझते हुए — जहाँ हर यात्रा में पीढियों के साझा अनुभव जुड़े होते हैं — कैरेन्स ने अपने स्पेस, आराम और भावनात्मक अपील से सबका दिल जीता है। अब कैरेन्स क्लैविस उसी सफर की अगली कड़ी है। यह कार बदलती जीवनशैली और नई आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। इसमें 6 और 7-सीटर का आरामदायक विकल्प मौजूद है, जो बोल्ड डिजाइन, प्रीमियम स्पेस और एडवांस्ड टेक्नोलॉजी के साथ मिलकर आधुनिक भारतीय परिवारों को एक बेहतरीन और सुविधाजनक अनुभव देती है। श्री ग्वांगगु ली, प्रबंध निदेशक और सीईओ, किआ इंडिया ने कहा, हम जो कुछ भी करते हैं, उसकी नींव नवाचार पर टिकी है - जो उन्नत तकनीक और अनोखे डिज़ाइन से प्रेरित होता है। कैरेन्स क्लैविस का लॉन्च हमारी यात्रा में एक अहम पड़ाव है।

एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक ने हाउस ऑफ ग्रोथ पहल के माध्यम से फ्रंटलाइन कर्मचारियों के जीवन स्तर को किया बेहतर

मुंबई, एजेंसी। भारत के सबसे बड़े स्मॉल फाइनेंस बैंक एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक ने अपने फ्रंटलाइन कर्मचारियों के जीवन की गुणवत्ता सुधारने की दिशा में एक सराहनीय पहल की शुरुआत की है - हाउस ऑफ ग्रोथ। यह प्रयास उन चुनौतियों को मान्यता देता है, जिनका सामना बैंक की माइक्रोफाइनेंस टीमों को देशभर में जमीनी स्तर पर काम करते समय प्रतिदिन करना पड़ता है। इस समय बैंक देशभर के 888 स्थानों पर कर्मचारियों के साझा आवासों को अपग्रेड कर रहा है। इन आवासों में पाँच से छह अधिकारियों के रहने की व्यवस्था होती है, जिन्हें अब सुव्यवस्थित बेड, भरोसेमंद हाउसकीपिंग, मनोरंजन की सुविधाएँ और आरामदायक सामुदायिक स्थानों जैसे जरूरी संसाधनों से सुसज्जित किया जा रहा है। इस पहल के माध्यम से बैंक 6,000 से 8,000 फील्ड और लोन अधिकारियों को एक स्वच्छ, सुरक्षित और आरामदायक रहने का वातावरण प्रदान करना चाहता है — वे अधिकारी जो सुबह 7 बजे काम शुरू करते हैं और दिनभर कई गाँवों की यात्रा के बाद देर रात घर लौटते हैं। इस परिवर्तन की शुरुआत राजस्थान के बस्सी में पहले अपग्रेडेड अपार्टमेंट्स के उद्घाटन के साथ हो चुकी है। संजय अग्रवाल, संस्थापक, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक, ने अपना व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए कहा, फील्ड विजिट्स के दौरान मैंने अपने कर्मचारियों की साधारण और कई बार चुनौतीपूर्ण रहने की स्थितियाँ स्वयं देखीं — वे लोग जो असाधारण समर्पण के साथ हमारे देश के सबसे पिछड़े क्षेत्रों तक वित्तीय समावेशन पहुंचाने का काम करते हैं। उनकी दृढ़ता, निष्ठा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में किए गए बदलाव केवल प्रशंसा के नहीं, बल्कि ठोस सहयोग के हकदार हैं।

मई के दूसरे हफ्ते में सोने चांदी की कीमतों में उतार चढ़ाव का दौर जारी

सोना खरीदने की तैयारी है क्या? ये है आज मंगलवार का 10 ग्राम का लेटेस्ट रेट, जानें अपने शहरों का भी 13 मई का 22-24 कैरेट का नया भाव

मुंबई , एजेंसी। मई के दूसरे हफ्ते में सोने चांदी की कीमतों में उतार चढ़ाव का दौर जारी है। अगर आप आज मंगलवार को सोना या चांदी खरीदने के लिए बाजार जा रहे है तो पहले 13 मई का ताजा भाव जान लें। आज सोने की कीमतों में 160 प्रति 10 ग्राम का उछाल और चांदी के दाम में 1000 प्रति किलो की गिरावट आई है। नई कीमतों के बाद सोने के दाम 95 हजार और चांदी के भाव भी 97 हजार के पार ट्रेंड कर रहे है।

आज मंगलवार को सराफा बाजार की ओर जारी सोने और चांदी के अनुसार आज 13 मई 2025 को 22 कैरेट सोने के दाम 87,800 , 24 कैरेट का भाव 95, 770 और 18 ग्राम सोने का रेट 71,840 रुपए पर ट्रेंड कर रहे है। वहीं 1 किलो चांदी का रेट 97,900 रुपए चल रहा है।

18 कैरेट सोने का आज का भाव

दिल्ली सराफा बाजार में आज 10 ग्राम सोने की कीमत 71 840/- रुपये। कोलकाता और मुंबई सराफा बाजार में 71, 720/- रुपये। इंदौर और भोपाल में सोने का भाव 71, 760 चल रहा है। चेन्नई सराफा बाजार में कीमत 72, 200/- रुपये पर ट्रेड कर रही है।

22 कैरेट सोने का आज का भाव

भोपाल और इंदौर में आज 10 ग्राम सोने की कीमत 87, 700/- रुपये । जयपुर, लखनऊ, दिल्ली सराफा बाजार में आज 10 ग्राम सोने की कीमत 87, 800 रुपये । हैदराबाद, केरल, कोलकाता, मुंबई सराफा बाजार में 87, 650/- रुपये ट्रेंड कर रहा है।

24 कैरेट सोने का आज का भाव

भोपाल और इंदौर में आज 10 ग्राम सोने की कीमत 95,670 रुपये। दिल्ली जयपुर लखनऊ और चंडीगढ़ सराफा बाजार में आज 10 ग्राम सोने की कीमत 95, 770 रुपये। हैदराबाद, केरल, बैंगलुरू और मुंबई सराफा बाजार में 95, 520 रुपये । चेन्नई सराफा बाजार में कीमत 95,620 रुपये पर ट्रेंड कर रहा है।

भोपाल और इंदौर में 1 किलो चांदी की कीमत 97,900 रुपए

जयपुर कोलकाता अहमदाबाद लखनऊ मुंबई दिल्ली सराफा बाजार में 01 किलोग्राम चांदी की कीमत रुपये चल रही है। चेन्नई, मदुरै , हैदराबाद,और केरल सराफा बाजार में कीमत 1,09,000 रुपये। भोपाल और इंदौर में 1 किलो चांदी की कीमत 97,900 रुपए ट्रेंड कर रही है।

जोधपुर, चंडीगढ़ और जम्मू की उड़ानें इंदौर से 15 मई से उड़ेंगी

इंदौर। पाकिस्तानी सीमा से लगे राज्यों के एयरपोर्ट भारत-पाकिस्तान के बीच सीजफायर लागू होने के बाद फिर शुरू करने का फैसला किया गया है। यात्री विमानों का संचालन फिर से शुरू कर दिया गया है। नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने 32 एयरपोर्ट को दोबारा चालू करने की एडवाइजरी जारी की है। लेकिन, इंदौर से बंद की गई जोधपुर, चंडीगढ़ और जम्मू की उड़ाने 15 मई से ही शुरू हो पाएगी। इंडिगो कंपनी द्वारा उड़ानों की बहाली के पहले स्लॉट में इंदौर से बंद उड़ानों को शुरू नहीं किया है। संभवत- विमान कंपनियों द्वारा उड़ानों को धीरे-धीरे दोबारा शुरू करने के प्रयास किए जा रहे है। भारत-पाकिस्तान के बीच सैन्य तनाव के चलते देश के उत्तर और पश्चिमी हिस्से के 32 एयरपोर्ट को 9 से 15 मई तक बंद कर दिया गया था। इससे इंदौर से संचालित जोधपुर, चंडीगढ़ और जम्मू की उड़ान को बंद कर दिया गया था। अब सीजफायर लागू होने के बाद इन सभी एयरपोर्ट को दोबारा शुरू कर दिया गया। इसके बावजूद इंदौर से संचालित होने वाली तीनों उड़ानें मंगलवार से शुरू नहीं होगी। यात्रियों को इन शहरों की हवाई यात्रा के लिए 15 मई तक इंतजार करना होगा। पाकिस्तान के सीमावर्ती राज्यों के एयरपोर्ट से यात्री विमानों का संचालन पहले 10 मई तक बंद किया गया था। बाद में इसको बढ़ाकर 15 मई कर दिया गया। इसके कारण इंदौर से संचालित तीन शहरों की उड़ानें कल से शुरू नहीं होगी।

बॉलीवुड के बादशाह शाहरुख़ ख़ान कहते है, जीने के लिए दोस्त, जरूरी है फैंटेसी

भोपाल । सनफीस्ट डार्क फैंटेसी ने अपनी नई ब्रांड पहल 'फैंटेसी ज़रूरी है' की शुरुआत की है। इस अभियान के केंद्र में एक प्रेरणादायक हिंदी कविता है, जिसे एक फिल्म के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह कविता फैंटेसी के कई पहलुओं को खूबसूरती से दर्शाती है, फैंटेसी क्या होती है, यह कहाँ बसती है, कैसे सामने आती है और हमारी ज़िंदगी में इसकी क्या अहमियत है। राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित गीतकार और पार्श्वगायक स्वानंद किरकिरे द्वारा लिखी गई और बॉलीवुड के बादशाह शाहरुख़ ख़ान द्वारा सुनाई गई यह कविता श्रोताओं को रोजमर्रा की जिंदगी की एकरसता से निकालकर कल्पना की असीम दुनिया में ले जाती है, एक ऐसी यात्रा जो मन को रोमांचित भी करती है और सोचने पर मजबूर भी। अपने ब्रांड संदेश हर दिल की फैंटेसी के अनुरूप, सनफीस्ट डार्क फैंटेसी उन अनगिनत तरीकों का जश्न मनाता है, जिनके माध्यम से लोग कल्पना करते हैं, अपनी दुनिया से बाहर निकलते हैं और खुद को व्यक्त करते हैं, चाहे वह छोटे पलों में हो या बड़े मौकों पर। ट्रैफिक जाम से लेकर अंतरिक्ष की लड़ाइयों तक, ऑफिस की एकरसता से लेकर परीकथाओं जैसे बदलावों तक, यह फिल्म फैंटेसी के अनेक रूपों को दर्शाती है, जो व्यक्तिगत होते हुए भी सभी के दिल से जुड़ते हैं।

ट्रूकॉलर ने दिखाया एआई का जादू, अब आपके मैसेज हो गए हैं और भी ज़्यादा स्मार्ट

मुंबई , एजेंसी। ज़रा सोचिए- आप अपने रोज़मर्रा के कामों में व्यस्त हैं— बैठकें, ज़रूरी काम-काज, कॉफ़ी पीने की जल्दबाज़ी— और अचानक, आपके इनबॉक्स में स्स्स् मैसेज की झड़ी लग जाती है। हो सकता है कि टेक्स्ट मैसेज के उस समंदर में कहीं कोई ज़रूरी ह्ज्ञक्क डिलीवरी अपडेट, या फिर बिल का रिमाइंडर भी मौजूद हो। लेकिन स्पैम और बेतरतीब संदेशों के बीच छिपे होने के कारण ये बड़ी आसानी से आपकी नज़रों से छूट सकता है। दुनिया में संचार के सबसे बड़े प्लेटफ़ॉर्म, ट्रूकॉलर ने हाल ही में एआई पर आधारित मैसेज आईडी की शुरुआत की है, जो सचमुच बड़ा बदलाव लाने वाला समाधान है। और ये सिर्फ़ टेक्नोलॉजी में कोई नया अपडेट नहीं है - ये पहले से ज़्यादा स्मार्ट और संचार से सभी चिताओं को दूर करने की दिशा में एक बड़ी छलांग है।अब मैसेज आईडी की सुविधा भारत सहित दुनिया के 30 देशों में उपलब्ध है, जो इस तरह की गड़बड़ी को दूर करेगी। इस नए फीचर में एडवांस्ड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और लार्ज लैंग्वेज मॉडल का उपयोग किया गया है, जो आपके स्स्स् इनबॉक्स को आपके डिवाइस पर ही स्कैन करता है।

केनरा रोबेको ने लॉन्च किया केनरा रोबेको मल्टी एसेट एलोकेशन फंड

मुंबई, एजेंसी। भारत के दूसरे सबसे पुराने एसेट मैनेजर, केनरा रोबेको म्यूचुअल फंड ने आज केनरा रोबेको मल्टी एसेट एलोकेशन फंड के लॉन्च का ऐलान किया है। यह एक ओपन-एंडेड हाइब्रिड फंड है जिसका लक्ष्य बाजार के अच्छे प्रदर्शन के समय अल्फा रिटर्न हासिल करना और बाजार के खराबदौरमेंनुकसान की संभावना को कम करना है। यह फंड एक ओपन-एंडेड स्कीम है जो इक्विटी और इक्विटी से जुड़े इंस्ट्रूमेंट, डेट और मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट, गोल्ड ईटीएफ और सिल्वर ईटीएफ में निवेश करती है। इसकी मल्टी असेट एलोकेशन रणनीति का लक्ष्य सभी तरह की बाजार स्थितियों में बेहतर परिणाम हासिल करना है।यह फंड बदलती आर्थिक स्थितियों, अर्निंग मोमेंटम, मार्केट वैल्यूएशन और इक्विटी रिस्क प्रीमियमको ध्यान में रखते हुए समय-समय पर असेट क्लॉस की समीक्षा करता रहेगाजिससे पोर्टफोलियो को संतुलित रखने में आसानी होगी। नया फंड ऑफर सब्सक्रिप्शन के लिए 9 मई, 2025 को खुलेगा और 23 मई, 2025 को बंद होगा।

बॉन फ़ोई 65 में दिल्ली पर छाया सूफी स्टार हीर वालिया का जादू

अंतरमन को छू लेने वाले संगीत, अलौकिक ऊर्जा और चाँद की रोशनी के जादुई एहसास की रात

नई दिल्ली । ईस्ट ऑफ कैलाश स्थित बॉन फ़ोई 65 में सितारों से सजे मखमली आसमान के नीचे गीत-संगीत और रूहानी एहसास की बेजोड़ जुगलबंदी नज़र आई, जहाँ मशहूर सूफी गायिका हीर वालिया ने अपने बेमिसाल लाइव परफॉर्मेंस से दिल्ली को मंत्रमुग्ध कर दिया।

रूफटॉप पर बना यह रमणीक स्थल पहले से ही अपने आकर्षक माहौल और लजीज व्यंजनों के लिए मशहूर है, जो बीते शनिवार की रात को मधुर आवाज़ और रूहानी एहसास की पावन जगह में तब्दील हो गया।

शहर का आकाश जब दूर से झिलमिलाता हुआ दिखाई दे रहा था, तब वालिया की दिल को छू लेने वाली आवाज़ रोज़मर्रा की ज़िंदगी के शोरगुल की सीमाओं को पार कर रही थीं, जिसमें उन्होंने बुल्ले शाह की कविताओं, अमीर खुसरो के उल्लास और पीढ़ियों से चली आ रही लोक परंपराओं को एक धागे में पिरोकर अपने अंदाज़ में प्रस्तुत करके सबका मन मोह लिया। कविता की हर पंक्ति एक इबादत थी, हर धुन दिल में बसी भावनाओं के ताने-बाने की एक डोर की तरह थी, जिसने दर्शकों को बांधे रखा। अपनी पहली सांस से लेकर अंतिम राग तक, वालिया ने केवल प्रस्तुति नहीं दी— बल्कि उन्होंने आध्यात्मिकता का अनुभव भी कराया। वहाँ मौजूद लोगों में डेट पर आए जोड़े, संगीत के पारखी, खान-पान के शौकीन और आध्यात्मिक एहसास की तलाश करने वाले शामिल थे, और वे सभी मंत्रमुग्ध होकर बैठे थे, ताल के साथ झूम रहे थे, कई लोग गीत के शब्दों को दोहरा रहे थे, कुछ की आँखें बंद थीं और मन के दरवाजे खुले हुए थे।

पोल्ट्री फार्म एवं चिकन शॉप आज से खोले जाने की अनुमति

छिन्दवाड़ा। उप संचालक पशुपालन एवं डेयरी विभाग डॉ.एच.जी.एस. पक्षवार ने बताया कि छिंदवाड़ा शहर में 10 फरवरी 2025 को बर्ड फ्लू की रिपोर्ट पॉजिटिव आने पर कार्यालयीन आदेश 05 मार्च 2025 से वार्ड क्रमांक 06, 07, 08, 28, 29, 30, 31, 41, एवं 45 में चिकन, पोल्ट्री प्रोडक्ट के विक्रय एवं परिवहन पर 11 मई 2025 तक (03 माह) संपूर्ण नगर पालिक निगम छिंदवाड़ा एवं ग्राम सालीमेटा, लिंगा, बड़गोना की 10 किलोमीटर परिधि क्षेत्र को एवियन इन्फ्लूएंजा (बर्ड फ्लू) के लिये सर्विलेंस क्षेत्र में 03 माह की अवधि के लिये प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किया गया था। 03 माह की अवधि 11 मई 2025 को समाप्त हो गई है। वर्तमान में बर्ड फ्लू से संबंधित किसी भी प्रकार की सूचना संक्रमित क्षेत्र से प्राप्त नहीं हो रही है, इसलिये मटन मार्केट अंतर्गत चिकन शॉप एवं ग्राम सालीमेटा लिंगा बड़गोना का पोल्ट्री फार्म एवं संक्रमित क्षेत्र की परिधि में आने वाली चिकन शॉप 12 मई 2025 से खोले जाने की अनुमति प्रदान की जाती है। किन्तु मटन एवं चिकन का विक्रय खुले में न किया जाये।

महिला कांग्रेस में महत्वपूर्ण पदों पर की गई नियुक्तियां

छिन्दवाड़ा। मप्र के पूर्व मुख्यमंत्री माननीय कमलनाथ जी एवं जिले के पूर्व सांसद माननीय नकुलनाथ जी के निर्देशानुसार महिला कांग्रेस में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्तियां की गई है। समस्त नवनियुक्त पदाधिकारियों को तत्काल प्रभाव से जिम्मेदारी सौंपी जा चुकी है। जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष विश्वनाथ ओकटे, परासिया विधायक सोहन वाल्मीक, जुन्नारदेव विधायक सुनील उइके से चर्चा के उपरांत जिला महिला कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती किरण चौधरी के द्वारा जिला महिला कांग्रेस की प्रभारी श्रीमती मंजू बैस की सहमति उपरांत महिला कांग्रेस जिला महिला कांग्रेस में कार्यवाहक अध्यक्ष, शहर महिला कांग्रेस की प्रभारी, व परासिया, जुन्नारदेव व अमरवाड़ा विधानसभा में महिला कांग्रेस की प्रभारी मनोनीत की गई है।

शारजाह यूएई में सम्मानित हुई प्रसिद्धि शाह

छिंदवाड़ा। यूएई में आयोजित 30 वें शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार समारोह में दिल्ली प्राइवेट स्कूल शारजाह यूएई की 8 वीं कक्षा की 13 वर्षीय छात्रा प्रसिद्धि शाह को शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रदर्शन के लिए डिस्टिंग्विश्ड स्टूडेंट श्रेणी के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।यह पुरस्कार शारजाह की प्राइवेट एजुकेशन अथॉरिटी द्वारा आयोजित किया गया, जिसमें कुल 1460 प्रतिभागियों में से 51 को विजेता घोषित किया गया। जिसमें प्रसिद्धि शाह ने अपनी बौद्धिक क्षमता, सामाजिक भागीदारी और रचनात्मक दृष्टिकोण से निर्णायकों को प्रभावित किया ओर सम्मानित हुई, यह उपलब्धि भारत सहित सकल जैन समाज के लिए गौरव की बात है।फेडरेशन सचिव दीपक राज जैन ने बताया कि प्रसिद्धि शाह सामाजिक संस्था सर्वोदय अहिंसा एवं अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन के मार्गदर्शक डॉक्टर नितेश शाह एवं अनुश्री शाह की सुपुत्री हैं। डॉ. नितेश शाह डीपीएस शारजाह में विगत 10 वर्षों से हिंदी विभागाध्यक्ष हैं एवं अनुश्री शाह शिक्षिका हैं। वें शारजाह में रहकर जैन धर्म, भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

कैंसर पीड़ित को दिए 25 इंच बाल दान

श्री जैन ने बताया प्रसिद्धि शाह सेवा, संस्कृति और साहित्य में अग्रणी है पिछले तीन वर्षो से उन्होंने न केवल पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, बल्कि समाज सेवा में भी अग्रणी रहीं। उन्होंने कैंसर पीड़ित मरीजों के लिए 25 इंच बाल दान किए। इसके अलावा, वे कराटे, चेस और बैडमिंटन की कुशल खिलाड़ी हैं। काव्य पाठ,भाषण प्रतियोगिता में राष्ट्रीय- अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं। वे जैन संस्कार टीवी नाम से एक यूट्यूब चैनल संचालित करती हैं, जिसमें लगभग 1000 वीडियो जैन धर्म और भारतीय संस्कृति से संबंधित हैं, प्रसिद्धि ने अब तक 5 पुस्तकें लिखी हैं,जो अमेज़न पर उपलब्ध हैं। इन्होने दुबई स्थित भारतीय दूतावास में काव्य पाठ और भाषण प्रतियोगिताओं में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर हिंदी भाषा को गौरव दिलाया।

श्रीराम सेवा समिति सौसर में वृक्षारोपण

सौसर। बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर सौसर के नवनिर्मित पांचवी टेकरी 12 ज्योतिर्लिंग मंदिर परिसर में मंदिर पुजारी प्रकाश विश्वकर्मा, हीरामन विश्वकर्मा तथा पत्रकारद्वय रमेश पातुरकर, हंसराज बारस्कर ने पौधरोपण किया श्री राम सेवा समिति द्वारा बीते 1 वर्ष पूर्व पांचवी टेकरी सौसर में 12 ज्योतिर्लिंग, हनुमानजी, शंकरजी तथा जैन संतो की मूर्तिया प्राणप्रतिष्ठा कर स्थापित की है श्रद्धालु यहां आकर दर्शन कर पुण्य लाभ ले रहे है यह परिसर सुसज्जित एवं धार्मिक वातावरण से श्रद्धालुओं को बरबस ही आकर्षित करता है। जैसे-जैसे मंदिर की ख्याति बढ़ रही है वैसे-वैसे धार्मिक भावनाओं से जुड़े श्रद्धालुओं की भीड़ भी धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है परिसर रमणीक होने से यहां पर श्रद्धालु और भी सौंदर्य देख उनका म मनमोहित हो रहा है इस टेकरी से कान्हान नदी का विहंगम दृश्य तथा सौसर नगर तथा ग्रामीण क्षेत्र परिक्षेत्र श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करता है क्षेत्र में विश्व प्रसिद्ध जाम सावली मंदिर में आने वाले श्रद्धालु इस मंदिर में आने से नहीं चुक रहे हैं माना जा रहा है।

डॉ. के. विक्रम राव को पत्रकारों ने दी श्रद्धांजलि

छिंदवाड़ा। देश के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रकार एवं आई.एफ.डब्ल्यू.जे.के पूर्व अध्यक्ष डॉ. के. विक्रम राव का निधन लखनऊ में हो गया। छिंदवाड़ा प्रेस एसोशिएसन द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। म.प्र. यूनिट के वरिष्ठ उपाध्यक्ष गोविन्द चौरसिया ने बताया कि स्व. डॉ. के. विक्रम राव देश के वरिष्ठ पत्रकार थे एवं पत्रकारों के हित के लिए इन्डियन फेडरेशन ऑफ वर्किंग जनर्लिस्ट के माध्यम से लम्बी लड़ाई लड़ी है वे वर्षो तक फेडरेशन के अध्यक्ष रहे, उनके नेतृत्व में कई पत्रकारों ने विदेश यात्रायें भी की है। छिंदवाड़ा यूनिट के अध्यक्ष महेश शिवहरे, के.आर दुबे, राजेश डेहरिया व प्रेस एसोशिएसन के अध्यक्ष महेन्द्र राय ने सचिव अभिनाश सिंह एवं अन्य पत्रकारों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

जल गंगा संवर्धन अभियान...

पानी की उपयोगिता उनसे जानें जहां है जल संकट: तिवारी

पीजी कॉलेज छिंदवाड़ा में जल स्त्रोतों के आसपास श्रमदान कर की गई साफ-सफाई

छिंदवाड़ा। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत रविवार को शाम 4 बजे धरमटेकड़ी स्थित प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय के पीछे म.प्र. जन अभियान परिषद छिंदवाड़ा द्वारा जल स्त्रोतों के आस-पास जल स्वच्छता अभियान चलाया गया। कलेक्टर शीलेन्द्र सिंह के निर्देशन में एवं म.प्र. जन अभियान परिषद के जिला समन्वयक अखिलेश जैन के कुशल मार्गदर्शन में परामर्शदाता व समाजसेवी विनोद तिवारी, मेंटर श्रीमती लता नागले, श्रीमती तृप्ति सिंह, जय प्रकाश सूर्यवंशी, आशीष साहू के नेतृत्व में मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता कार्यक्रम के अंतर्गत बीएसडब्ल्यू व एमएसडब्ल्यू के विद्यार्थियों ने जल स्वच्छता अभियान चलाकर जल स्त्रोतों के आसपास साफ-सफाई की। इस अवसर पर बड़ी संख्या में पॉलीथीन एवं अन्य कचरे को एकत्र कर स्वच्छता का संदेश भी दिया। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत उपस्थित सभी लोगों को नगर निगम के स्वच्छता ब्रांड एम्बेसडर विनोद तिवारी ने जल संरक्षण एवं स्वच्छता की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि म.प्र. जन अभियान परिषद की पूरी टीम प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव के आव्हान पर 30 मार्च से 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत शहर के छोटा तालाब, सिवनी प्राणमोती के तालाब का गहरीकरण सहित अनेकों जल स्त्रोतों के संरक्षण के प्रयास किए जा रहे है, वही ग्रामीण अंचलों में भी नदी, तालाब, कुएं, बावड़ी की सफाई की गई। आज धरमटेकडी स्थित जल स्त्रोतों की सफाई कार्य किया गया। वही परामर्शदाता श्रीमती लता नागले ने जल संरक्षण के उपाय भी बताए। श्रीमती तृप्ति सिंह ने कहा कि हमारी आदतों में स्वच्छता की बात हमेशा होना चाहिए। श्री जयप्रकाश सूर्यवंशी ने हैंडपंपो और जल के आसपास सोकपीट बनाने के तरीके बताए। श्री आशीष साहू ने कहा कि सार्वजनिक नलों में अक्सर टोटियों के अभाव में पानी बहता रहता है, जिससे पानी की बड़ी मात्रा में बर्बादी होती रहती है, इससे बचना चाहिए। जल स्वच्छता अभियान में बीएसडब्ल्यू व एमएसडब्ल्यू के विद्यार्थियों में संध्या साहू, अंशिका रघुवंशी, पूजा मालवीय, प्रीति सेन, ज्योति परमार, संध्या वासनिक, किरण पटेलिया, अनामिका धुर्वे, प्रेमचंद, सनी, भीम सिंह, अंकिता, कामिनी कहार, अमित कुमार बरखानिया, सुनीता पाठे, यश बंदेवार सहित सभी विद्यार्थियों ने जल संरक्षण के लिए जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत श्रमदान किया।

देवगढ़ में अलीशा-बलीशा बावड़ी पर श्रमदान कर की साफ-सफाई

छिन्दवाड़ा। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री व म.प्र.जन अभियान परिषद के अध्यक्ष डॉ.मोहन यादव के आह्वान पर छिंदवाड़ा कलेक्टर शीलेन्द्र सिंह के निर्देशानुसार म.प्र.जन अभियान परिषद के जिला समन्वयक श्री अखिलेश जैन एवं विकासखंड समन्वयक भवानीप्रसाद कुमरे के कुशल मार्गदर्शन में मोहखेड़ विकासखंड के ग्राम-विजयगढ़ स्थित ऐतिहासिक अलीशा-बलीशा बावड़ी पर म.प्र. जन अभियान परिषद की टीम ने श्रमदान कर बावड़ी की साफ-सफाई की । इसका जल बड़ा ही स्वादिष्ट है। क्षेत्र वासियों के लिए यह बावड़ी जीवनदाई और आस्था से जुड़ी हुई है। यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इतिहास से जुड़ी हुई ये बावड़ियां हमारे जलस्त्रोत के पारंपरिक स्त्रोत हैं, इनके पुर्नजीवन के लिये हमें सतत् प्रयास करते रहना चाहिए ।जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत पुरानी जल संरचनाएं जैसे कुआं, नदी, तालाब, पोखर, झीलें, झरना, बावड़ी के संरक्षण एवं पुर्नजीवन तथा वर्षा ऋतु के आगमन से पूर्व नई जल संरचनाओं के निर्माण संबंधित कार्य पूरे प्रदेश में किये जा रहे हैं। इसी तारतम्य में म.प्र.जन अभियान परिषद मोहखेड़ की टीम द्वारा भी जल संरक्षण के लिये प्रचार-प्रसार, सांकेतिक श्रमदान संबंधित कार्य किए जा रहे हैं। श्रमदान के इस कार्य में सरपंच बलदेव धुर्वे, ग्राम रोजगार सहायक सुनील व ग्रामीणजनों सहित नवांकुर संस्था ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति गढ़मऊ एवं हिवरावासुदेव से क्रमशः उमेश चौधरी, जितेन्द्र साहू, मेंटर्स श्रीमती आरती माटे, आदि की सहभागिता रही।

पातालेश्वर मंदिर में पहली बार शास्त्रीय नृत्य घुंघरू पूजन

कला संगम इंस्टिट्यूट ऑफ फाइन आर्ट्स द्वारा आयोजन

छिंदवाड़ा। नाट्यशास्त्र के अनुसार, घुंघरू पूजा एक प्राचीन परंपरा है,

जिसमें नृत्य प्रारंभ करने से पहले भगवान को घुंघरू समर्पित किए जाते हैं और फिर गुरु द्वारा शिष्यों को सौंपे जाते हैं। संस्था के निर्देशक एवं गुरु अमित डोले ने कहा कि यह परंपरा अब विलुप्त होती जा रही है, जिसे पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से यह आयोजन किया गया। वरिष्ठ पत्रकार गोविंद चौरसिया और पंडित की उपस्थिति में संस्था के सभी बच्चों कृति, भूमिका, आराधना, अंकिता, वेदिका, खुशी, वीरा, अरना, मान्या , श्री ,दिशानी , हंसवी,ने घुंघरू पूजा में भाग लिया और इस प्राचीन परंपरा को निभाया। अमित डोले ने बताया कि कला संगम शास्त्री नृत्य एवं संगीत महोत्सव समिति द्वारा 7 और 8 जून को स्थानीय अदिवासी संग्राहलय में कला संगम महोत्सव का आयोजन किया गया है जिसमें देश-विदेश के राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त एवं संगीत नाटक अकादमी के कलाकारों द्वारा प्रस्तुती दी जायेगी।

आर्ट ऑफ़ लिविंग के संस्थापक श्री श्री रविशंकर का जन्मोत्सव आज

छिंदवाड़ा। आर्ट ऑफ़ लिविंग परिवार द्वारा श्री श्री रविशंकर जी गुरुदेव के जन्मोत्सव के अवसर पर आज 13 मई 2025 दिन मंगलवार को धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया है। संस्था की डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर श्रीमती श्वेता चड्ढा और जॉन कोऑर्डिनेटर मनीष शर्मा ने बताया कि इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा, जिसमें शहर के प्रमुख लोग और स्थानीय आमजन भाग लेंगे। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 6:45 बजे से 8:00 बजे तक मेघा फॉलो अप का आयोजन पंजाब लॉन नरसिंहपुर रोड पर होगा। इसके बाद सुबह 8:15 बजे से 9:00 बजे तक भूमि पूजन का आयोजन होगा, जिसमें स्वामी शंकरानंद जी उपस्थित रहेंगे। शाम 7:30 बजे पर सत्संग का आयोजन होगा, जिसमें स्थानीय सिंगर देशभक्ति गीत प्रस्तुत करेंगे एवं देश के सैनिकों के ध्यान और प्रार्थना की जाएगी। रात 9:30 बजे पर भोजन प्रसाद का आयोजन किया गया है । आर्ट ऑफ़ लिविंग परिवार, छिंदवाड़ा के डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर श्रीमती श्वेता चड्ढा और जॉन कोऑर्डिनेटर मनीष शर्मा ने समस्त जिलेवासियों से इस अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होने की अपील की।

भगवान बुद्ध के विचारों पर चलकर आतंकवाद समाप्त एवं विश्व शांति सम्भवः लोखंडे

भारतीय बौद्ध महासभा द्वारा तथागत भगवान बुद्ध जयंती समारोह का किया आयोजन

छिंदवाड़ा। परम पावनी त्रिगुणी वैशाख पूर्णिमा पर तथागत भगवान बुद्ध के 2588 वे जयंती समारोह का आयोजन भारत सरकार के दिशानिर्देशों का पालन करते हुए भारतीय बौद्ध महासभा द्वारा डॉ आंबेडकर तिराहे पर आयोजन किया गया सर्वप्रथम तथागत भगवान बुद्ध के छायाचित्र एवं संविधान निर्माता डॉ बाबासाहब आंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण प्रदेश उपाध्यक्ष एड रमेश लोखंडे,जिला उपाध्यक्ष एड राजेश सांगोडे, संयोजक सुभाष गोंडाने,जयभीम सेना प्रमुख शिवम् पहाड़े, पत्रकार अतुल गजभिये, समाजसेवी कमलेश डेहरिया,रमेश सहारे,मोहित मानकर, नवीन डेहरिया, ओमप्रकाश पहाड़े,एस आर बेले, मनोहर नारनवरे,अमन तायड़े, डॉ सुनील श्यामकुँवर, एड प्रशांत गजभिये,नवनीत डेहरिया, धर्मेंद्र बेलवंशी, प्रवीण पाटिल, बबलू सोमकुंवर,विशाल दुफारे, गौरव पाटिल, वसंता सोमकुंवर,भीमराव सोमकुंवर,ममता सहारे,लीला नारनवरे,ममता लोखंडे,शालू साखरे,राकेश चिल्हाटे,विशाल सहारे,लवकुश डेहरिया ,शुभम जावरकर द्वारा किया गया माल्यार्पण पश्चात् पंचशील ध्वजारोहण कर सामूहिक बुद्ध वंदना की गयी बुद्ध जयंती समारोह का संचालन जिला उपाध्यक्ष एड राजेश सांगोडे द्वारा किया गया

भगवान बुद्ध जयंती एवं पवित्र बुद्ध पूर्णिमा पर भव्य आयोजन

डॉ. आंबेडकर समता विकास समिति के तत्वावधान में स्थानीय समता बुद्ध विहार, छिंदवाड़ा में भगवान बुद्ध की जयंती एवं पवित्र बुद्ध पूर्णिमा के शुभ अवसर पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।कार्यक्रम की शुरुआत सुबह बुद्ध वंदना, धम्म वंदन, संघ वंदन तथा बुद्ध पूजा से हुई। तत्पश्चात भंतेजी जे आनंद द्वारा धम्म देशना दी गई, जिसे उपस्थित श्रद्धालुओं ने गंभीरता से श्रवण किया। साथी रत्नेश काटोल का जी द्वारा भी धर्म देशना दी गई कार्यक्रम के दौरान महिलाओं द्वारा भगवान बुद्ध के जीवन दर्शन पर आधारित लघु नाटिका प्रस्तुत की गई और उन्होंने अपने विचार भी साझा किए, जिससे उपस्थित जनसमूह भावविभोर हो गया। कार्यक्रम का संचालन आयुष्मति छवि खांडेकर वरिष्ठ उपाध्यक्ष द्वारा किया गया,

छिंदवाड़ा सांसद ने किया बैडमिंटन खिलाड़ी पुष्कर का सम्मान

छिंदवाड़ा। मध्य प्रदेश बैडमिंटन संघ द्वारा मध्य प्रदेश राज्य जूनियर प्रतियोगिता का आयोजन मंदसौर में किया गया जिसमें छिंदवाड़ा के उत्कृष्ट और प्रतिभावान खिलाड़ी पुष्कर गिरड़कर पूरे प्रदेश में उप विजेता स्थान प्राप्त किया पुष्कर गिरड़कर की उपलब्धि पर जिले के सांसद विवेक बंटी साह ने उनको आज सम्मानित कर पुरस्कृत किया इस अवसर पर पुष्कर के मुख्य कोच जावेद खान तथा पुष्कर के पिता अरविंद गिरड़कर मौजूद थे खिलाड़ी को जिला बैडमिंटन संघ द्वारा उज्जवल भविष्य की कामना की गई और आने वाली प्रतियोगिताओं में और अच्छा प्रदर्शन करने के लिए उनको शुभकामनाएं दी गई पुष्कर गिरड़कर आगामी राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में मध्य प्रदेश की टीम से भाग लेंगे जो छिंदवाड़ा जिले के लिए गौरव की बात है।

पूर्व मंत्री चौधरी चंद्रभान सिंह के जन्मदिन आयोजन समिति की बैठक

आमंत्रित सदस्यों को उनके कार्यक्षेत्र अनुसार सौंपी गई जिम्मेदारियां

छिंदवाड़ा। भाजपा के वरिष्ठ नेता पूर्व मंत्री चौधरी चंद्रभान सिंह का आगामी 22 मई को जन्मदिन का आयोजन वृंदावन लॉन वोहता में आयोजित किया जाएगा। पूर्व मंत्री चौधरी चंद्रभान सिंह के जन्मदिन आयोजन समिति की बैठक सोमवार शाम चौधरी चंद्रभान सिंह के निवास पर आयोजित की गई। आयोजित बैठक में सभी आयोजन समिति के आमंत्रित सदस्यों को उनके कार्यक्षेत्र अनुसार जिम्मेदारियां सौंपी गई।इस बैठक में प्रमुख रूप से संजय सक्सेना, धर्मेंद्र मिगलानी, हरिओम सोनी, शंटी बेदी, अभिलाष गौहर, बंटी राय, नीतिराज रघुवंशी, देवेंद्र सूर्यवंशी, सतेंद्र ठाकुर, अल्केश साव, निमेष पटेल, जीतेन्द्र शाह, कमलेश ठाकरे, अनीश पटेल, प्रीति बिसेन, जफ़र खान, अनीता शर्मा, सुधीर शर्मा, रोशन सिंगनापुरे, राजकुमार बघेल, विक्रम सोनी, योगेश बेले सहित बड़ी संख्या में पूर्व मंत्री जी के समर्थक उपस्थित रहे।

पाईप लाइन विस्तार कार्य की स्वीकृति दिलाई

विधायक सोहन वाल्मीकि ने किया भूमि पूजन

परासिया । विधानसभा क्षेत्र के अन्तर्गत ग्राम पंचायत गुढ़ी अंबाड़ा बैरियर में प्रसिद्ध मां हिंगलाज मंदिर तक लगभग ढाई किलोमीटर पाईपलाइन विस्तार कार्य की स्वीकृति दिलाकर इस कार्य का भूमिपूजन परासिया विधायक सोहनलाल वाल्मीकि के द्वारा किया गया इस अवसर पर श्री श्री मां हिंगलाज मंदिर समिति सहित स्थानीय ग्रामीणजन उपस्थित रहे। जिसमें परासिया क्षेत्र के अंबाड़ा बैरियर में प्रसिद्ध मां हिंगलाज मंदिर की वजह से यहां पर प्रतिदिन श्रद्धालु भक्तों का आवागमन लगा रहता है एवं नवरात्र में तो श्रद्धालुओं की भीड़ कई हजारों में पहुंच जाती है। इसी को देखते हुए श्रद्धालु भक्तों के लिए पेयजल की व्यवस्था बनाने को लेकर हिंगलाज मंदिर समिति के अलावा अंबाड़ा के पूर्व जनपद सदस्य अकबर अली के द्वारा व्यवस्था बनाने को लेकर प्रयास किया गया एवं विधायक सोहन वाल्मीकि से पत्राचार कर मांग की गई थी। इसी को देखते हुए मंदिर क्षेत्र में पानी की समस्या का समाधान किए जाने को लेकर विधायक सोहन वल्मीकि के द्वारा पीएचई विभाग के मद से लगभग ढाई किलोमीटर पाइपलाइन विस्तार कार्य की स्वीकृति दिलाकर इस कार्य का भूमिपूजन किया गया एवं पाइपलाइन विस्तार कार्य भी प्रारंभ कराया गया। इस दौरान विधायक वाल्मिक ने कहा कि मंधान डेम से आने वाली पानी की पाइप लाइन से अंबाड़ा बैरियर के पास इस पाइपलाइन को जोड़ा जाएगा जिससे कि हिंगलाज मंदिर तक सीधे पाइपलाइन के माध्यम से पानी पहुंच सके एवं इस भूमिपूजन कार्यक्रम के अवसर पर विधायक सोहनलाल वाल्मीकि, उपक्षेत्रीय प्रबंधक नरेंद्र कुमार सोनी, मोहन कालरी खान प्रबंधक श्री चांद, मंदिर समिति उपाध्यक्ष नारायण राव सराटकर, सरपंच भारती उईके, मारकंडे मिश्रा, अशोक ठाकर, भगवानदीन यादव, जगदीश तिवारी, पूर्व जनपद सदस्य अकबर अली, उप सरपंच हितेश धुर्वे,? तेज प्रकाश?सिंह, अमरनाथ सिंह, नवीन मोदी, आशीष यादव, रमन साहू, राहुल सिंह, के अलावा मंदिर समिति के सदस्य एवं ग्राम के नागरिक गण बड़ी संख्या मे उपस्थित रहे।

एफडीडीआई छिंदवाड़ा ने आयोजित किया 6 दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम

छिन्दवाड़ा। फुटवियर डिज़ाइन और डेवलपमेंट इंस्टिट्यूट (एफडीडीआई) छिंदवाड़ा ने हाल ही में 5 से 10 मई 2025 तक एक भव्य 6 दिवसीय कार्यक्रम कलासपंदा आयोजित किया। कलासपंदा, कला, संस्कृति और रचनात्मकता के उत्सव में एक आकर्षक शो फीस्ट ई फुटवियर और उसके बाद 3 दिवसीय सर्वेश्वरी इंटरनेशनल म्यूजिक फेस्टिवल शामिल था।

फीस्ट ई फुटवियर- एक शानदार प्रदर्शन – शो में मुख्य अतिथि आईआरएस प्रबंध निदेशक एफडीडीआई विवेक शर्मा, कर्नल पंकज कुमार सिन्हा, सचिव एफडीडीआई और विभिन्न संस्थानों के उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने एफडीडीआई छात्रों की अद्भुत रचनात्मकता और प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

सर्वेश्वरी इंटरनेशनल म्यूजिक फेस्टिवल- संगीत विविधता का उत्सव - 3 दिवसीय संगीत समारोह में विश्वभर के प्रसिद्ध कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी, जिसमें विविध संगीत परंपराओं और प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया गया। समारोह का मुख्य आकर्षण ताल यात्रा था, जिसमें पद्मश्री पंडित सुरेश तलवलकर और उनके शिष्यों ने अपनी प्रस्तुति दी।

एफडीडीआई टीम के अथक प्रयास – एफडीडीआई केंद्र प्रभारी श्री अरित्र दास, प्रशासन प्रमुख श्री प्रशांत कुमार सक्सेना, विभागाध्यक्ष डॉ.गोविंद सोनी, डॉ.पंकज दुबे, मिस श्रद्धा झालोया और उनकी समर्पित टीमों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है, जिन्होंने कलासपंदा 2025 को एक भव्य सफलता बनाने में अथक प्रयास किया।

महापौर विक्रम अहके का युवा डांस प्रेमियों के लिए खास तोहफा

छिंदवाड़ा के सभी आयु वर्ग के युवक-युवती ले सकेंगे निःशुल्क डांस ट्रेनिंग

छिंदवाड़ा। महापौर विक्रम अहके के सहयोग से निशुल्क डांस क्लास का होगा आयोजन ,ग्रीष्मकालीन मौसम में शहर में समर कैंप के माध्यम से विभिन्न आयोजन होते हैं इसी तरीके से छिंदवाड़ा नगर निगम के महापौर विक्रम अहके के प्रयासों से सभी आयु वर्ग के बच्चे युवाओं के लिए निशुल्क डांस क्लास का आयोजन एडिशन डांस एकेडमी में किया जाएगा जिसका रजिस्ट्रेशन प्रारंभ हो चुका है 19 मई से 20 दिवस चलने वाली क्लासेस में बॉलीवुड, हिप हॉप, सेमी क्लासिकल डांस सीखने प्रतिभागियों को मिलेगा निश्चित तौर पर महापौर जी की इस अभिनय पहल का परिणाम आगे चल कर देखने को मिलेगा और शहर के युवाओं को एक मंच मिलेगा जिससे उनकी प्रतिभा निखरेगी और जरूरतमंद युवा युवती इस डांस क्लास के माध्यम से लाभान्वित होंगेइस कार्यक्रम के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में छिंदवाड़ा जिले के सांसद एवं भाजपा जिला अध्यक्ष शेषराव यादव एवं अन्य जनप्रतिनिधिगण की उपस्थिति में होगा महापौर विक्रम अहके ने अधिक से अधिक लोगों से इस क्लासेस मे भाग लेने की अपील की है... !

रोज 176 रूपए में काम कर रहे सफाई कर्मचारी

नेताप्रतिपक्ष वीर बहादुर सिंह ने जल्द मांग पूरी करने की मांग

परासिय। 10 दिनों से अपनी मांगों को लेकर हड़ताल पर बैठे सफाई कर्मचारी को समर्थन देने के लिए नेताप्रतिपक्ष वीर बहादुर सिंह हड़ताली कर्मचारियों के पंडाल में पहुंचे उन्होंने कर्मचारियों से चर्चा की जिसपर कर्मचारी ने बताया की वह लगभग 10 वर्षों से नगरपालिका में सफाई विभाग में काम कर रहे हैं हमें वेतनमान 6000 रुपए जिसपर श्व क्कस्न 720 रुपए काटकर कुल 5280 रुपए मिलते जिसकी हजारी प्रतिदिन के हिसाब से 176 होती है और हमें 24 धंटे 7 दिनों काम लिया जाता है उन्होंने बताया की कई बार आवेदन निवेदन ज्ञापन के बाद भी हमारी कोई सुध नहीं ले रहा उन्होंने कहा 5280 रूपए में और 176 रुपए रोज के हिसाब से परिवार का भरन पोषण नहीं हो पाता है उन्हें सफाई कमचारी होने के कारण अन्य कहीं उन्हें कम भी नहीं मिल पाता है नेताप्रतिपक्ष वीर बहादुर सिंह ने तत्काल मुख्य नगरपालिका अधिकारी और एसडीएम महोदय दूरभाष पर चर्चा कर जल्द उनकी मांग पूरी करने को कहा उन्होंने कहा की उन्हें कम से कम कलेक्टर अकुशल रेट पर जो की 454 रुपए है की दर पर भुगतान किया जावे वहीं उनकी अन्य मांगों को पूरा किया नेताप्रतिपक्ष वीर बहादुर सिंह ने कर्मचारियों के साथ बैठकर चाय पी और चाय पर उनसे चर्चा की और कहा की देश के प्रधानमंत्री मोदी जी सफाई कमचारी को सफाई मित्र परिवार कहते मगर परासिया भाजपा नगरपालिका परिषद कर्मचारीयों से दुर्व्यवहार कर रही जबकि वह शहर के सबसे महत्वपूर्ण अंग है शहर स्वच्छता उन्हीं के भरोसे से उन्होंने कहा नगरपालिका अध्यक्ष द्वारा फिजुल और अपने शौक के लिए नगरपालिका की राशि का उपयोग कर रहे शहर में और जगहों पर धूमने वाहन किराए पर रखे डीजल ले रहे जिससे निकाय को भारी हानि हो रही उसे बचाकर कर्मचारियों को पैमट बढ़ाकर दिया जा सकता है उन्होंने कहा जल्द उनकी मांग पूरी नहीं हुई तो समस्त कांग्रेसी पार्षदों और आमजनों कमचारियों और उनके परिवार के साथ सड़कों पर आंदोलन किया जाएगा।

आदि गुरु शंकराचार्य जयंती के उपलक्ष्य में व्याख्यानमाला

छिन्दवाड़ा। जिले के विकासखंड परासिया के शासकीय पेंचवेली महाविद्यालय के सभाकक्ष में गत दिवस मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम के छात्र-छात्राएं एवं प्रस्फुटन समिति द्वारा आदि गुरु शंकराचार्य जयंती के उपलक्ष्य में व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य अतिथि समाजसेवी ओमप्रकाश जोशी, विशेष अतिथि व ग्लोबल स्कूल संस्थान की संचालिका श्रीमती मंजू जोशी, वरिष्ठ पत्रकार परासिया देवेंद्र जैन, प्रोफेसर परासिया अनिल डाकिया की उपस्थिति में विद्यमान वक्तता गणेश प्रसाद चांदवंशी, श्रीमती वंदना चांदवंशी एवं गायत्री परिवार के द्वारा आदि गुरु शंकराचार्य जी के बारे में जन्म से अंत तक की जानकारी विस्तार से प्रदान की गई। श्रीमती जोशी द्वारा भी अपने उद्बोधन में समय प्रबंधन के बारे में जानकारी दी गई व शंकराचार्य जी के विशेष जीवन पर प्रकाश डाला गया । वरिष्ठ पत्रकार श्री देवेंद्र जैन द्वारा भी संक्षिप्त में उद्बोधन दिया गया। विकासखंड समन्वयक संजीव भावरकर द्वारा म.प्र.जन अभियान परिषद के बारे में प्रकाश डाला गया और उनके कार्यो के बारे में प्रकाश डाला गया एवं आदि गुरु शंकराचार्य के जीवन ग्रंथ के बारे में जानकारी प्रदान की गई। अतिथि का सम्मान शॉल व श्रीफल द्वारा किया गया ।

जन अभियान परिषद तामिया ने मनाया आदि गुरु शंकराचार्य की जयंती

छिन्दवाड़ा । मप्र जन अभियान परिषद के जिला समन्वयक अखिलेश जैन के निर्देशन में तथा विकासखंड समन्वयक संजय वामने के मार्गदर्शन में विकासखंड तामिया में आदि गुरु शंकराचार्य जी की जयंती, एकात्मक पर्व के रूप में मनाते हुए व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप मे मां नैना देवी माता मंदिर तुलतुला के महंत व राष्ट्रीय संत झीनानंद जी महाराज, वरिष्ठ भाजपा नेता महामंत्री श्री दुर्नेश सलामे, धर्म जागरण मंच के प्रांत प्रवक्ता व राष्ट्रीय स्वयं सेवक के श्री चंद्रशेखर श्रीवाश जी मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। व्याख्यान माला की शुरुआत मां सरस्वती तथा आचार्य शंकर के चित्र की पूजा अर्चन और माल्यार्पण से किया गया। चंद्रशेखर श्रीवास ने अपने वक्तव्य में कहा कि आदिगुरु शंकराचार्य का जीवन दर्शन बहुत ही कल्याणकारी और एकात्म मानवतावाद का रहा, वह प्रत्येक वस्तु में ईश्वर का अनुभव करते थे तथा हिंदू धर्म के धर्म ग्रंथों, वेदांत उपनिषद का 23 वर्ष की उम्र में ही पूर्ण अध्ययन करने वाले एकमात्र महापुरुष हुए।

त्वरित टिप्पणी - सांध्यप्रकाश

जी. के. छिब्बर

यह पहलगांव आतंकी घटना का जवाब और युद्ध की रिहर्सल थी

प्रधानमंत्री के राष्ट्र के नाम संदेष का अर्थ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 अप्रैल को पहलगांव आतंकी घटना पर कहा था कि इसका ऐसा जवाब दिया जायेगा जिसकी पाकिस्तान ने कल्पना भी नहीं की होगी और इस बात को 7 मई 2025 को सार्थक कर दिया जबकि पाकिस्तान स्थित 9 आतंकी ठिकाने नेस्तनाबूत कर दिए और 3 दिन में पाकिस्तान के 11 एयर बेस को तहस नहस कर दिया और पाकिस्तान के परमाणु क्षेत्र भी खतरे में पड़ गया पाकिस्तान के पास भारत के ड्रोन और मिसाइल का कोई जवाब नही था भारत की ब्रह्मोस मिसाइल ने तहलका मचा दिया और विश्व भारत की सुरक्षा प्रणाली से हतप्रद हो गया पाकिस्तान घुटनो में आ गया और भारत से हमले रोकने की गुहार कर दी ।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आतंकवाद के विरुद्ध ऑपरेशन सिंदूर जारी है और विश्व को सन्देश दिया की भारत परमाणु धमकी से ब्लैकमेल नही होगा जो अमेरिका के राष्ट्रपति की ओर भी संकेत था प्रधानमंत्री ने कहा कि हमने सैन्य कार्यवाही स्थगित की है और आतंक के विरुद्ध अभियान निरंतर जारी रहेगा।

भारत ने पहलगांव आतंकी घटना के जवाब के साथ भारतीय सेना ने अपनी क्षमता का पाकिस्तान को ट्रेलर भी दिखा दिया है यह तो मात्र रिहर्सल थी यदि युद्ध की नौबत आई तो पाकिस्तान का क्या हश्र होगा तीन दिन में समझ में आ जाना चाहिए भारत ने 3 दिन में ही पाकिस्तान को अधमरा कर दिया दिया हैं जिसे उभरने ने समय लगेगा ये न्याय भारत है भारत से पंगा लेने का परिणाम क्या होगा पाकिस्तान को सबक मिल गया है।

सोशल मिडिया से

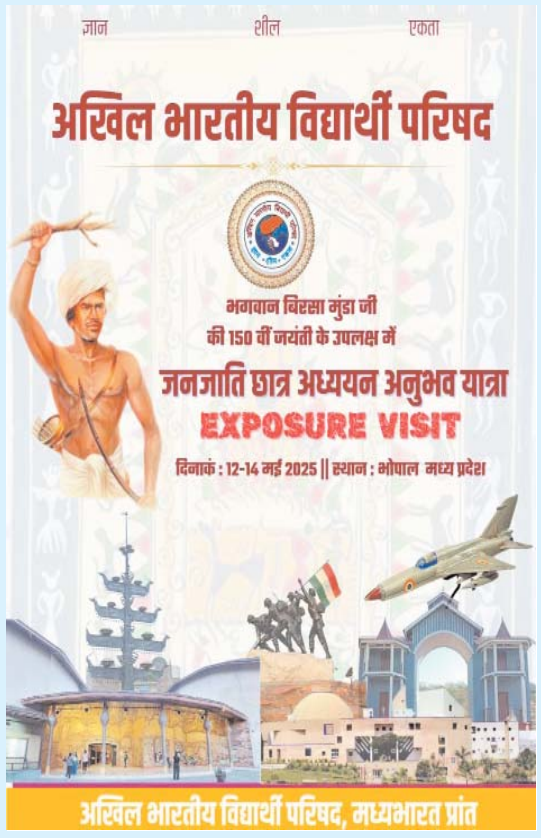

अभाविप मध्यभारत प्रांत द्वारा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष में 'जनजाति छात्र अध्ययन अनुभव यात्रा' का आयोजन दिनांक 12 से 14 मई 2025 तक किया जा रहा है। इस यात्रा के अंतर्गत बैतूल, हरदा, नर्मदापुरम, गुना, रायसेन, शिवपुरी एवं श्योपुर जिलों से जनजाति छात्र आज एबीवीपी ऑफिस, भारत माता चौराहा भोपाल आए।

कॉमनवेल्थ पार्लियामेंट्री एसोसिएशन की बैठक में शामिल हुए वीडी शर्मा

लंदन में होनी थी ष्टक्रक्की बैठक, भारत-पाक तनाव के चलते वर्चुअल हुई

भोपाल। 6 से 13 अक्टूबर तक राष्ट्रमंडल संसदीय संघ (सीपीए) का 68वां सम्मेलन बारबाडोस में होगा। बारबाडोस कैरेबियन सागर में एक छोटा सा द्वीप देश है। इस आयोजन को लेकर हुई वर्चुअल मीटिंग में बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष और खजुराहो सांसद वीडी शर्मा शामिल हुए।

भारत-पाक तनाव के चलते लंदन दौरा किया कैंसिल- राष्ट्र मंडल संसदीय समिति यानि कॉमन वेल्थ पार्लियामेंट्री एसोसिएशन की बैठक 12-13 मई को लंदन (यूके) में आयोजित की गई है। इस बैठक में वीडी शर्मा को भी शामिल होना था, लेकिन भारत और पाकिस्तान के बीच चल रहे तनाव के कारण उन्होंने अपना लंदन दौरा निरस्त कर दिया। वे इस मीटिंग में वर्चुअल शामिल हुए।

कई मुद्दों पर रखी राय- भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने लंदन में आयोजित 68वें कॉमनवेल्थ पार्लियामेंट्री समिति की योजना एवं समीक्षा की उप समिति की बैठक में सदस्य के रूप में वर्चुअल जुड़े। उन्होंने राष्ट्र मंडल संसदीय समिति में औपनिवेशिक युग के कानूनों को लागू करने और चर्चा करने की आवश्यकता पर अपने विचार रखे। वीडी शर्मा ने राष्ट्र मंडल द्वारा मानवाधिकार मुद्दों और अन्य समकालीन चुनौतियों के लिए औपनिवेशिक युग के कानूनों के संबंध में विस्तार से चर्चा की। वीडी शर्मा ने कहा कि हमारे विचार में हम समकालीन स्थिति और भविष्य की संभावनाओं पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।

अब जानिए सीपीए के सम्मेलन में क्या होगा

68वें राष्ट्रमंडल संसदीय संघ (सीपीए) के सम्मेलन में राष्ट्रमंडल देशों के संसदीय सदस्य भाग लेकर लोकतंत्र, कानून और मानव अधिकार जैसे विभिन्न विषयों पर चर्चा करेंगे। जैसे कि यह सम्मेलन हर साल आयोजित किया जाता है और राष्ट्रमंडल के सदस्यों को एक-दूसरे से सीखने और विचारों का आदान-प्रदान करने का एक मंच प्रदान करता है।

68वें सीपीए सम्मेलन में राष्ट्रमंडल देशों के संसदीय सदस्य विभिन्न विषयों पर चर्चा करने के लिए एक साथ आएंगे, जिससे संसदीय लोकतंत्र और राष्ट्रमंडल देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा मिलेगा।

यह सम्मेलन बारबाडोस में 6 से 13 अक्टूबर 2025 के बीच होगा

मुख्य उद्देश्य- संसदीय लोकतंत्र, संवैधानिक, विधायी, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं के ज्ञान को बढ़ावा देना।

भागीदारी- सम्मेलन में राष्ट्रमंडल देशों के संसदीय सदस्य भाग लेंगे।

चर्चा के विषय- लोकतंत्र, कानून, मानव अधिकार, और अन्य वैश्विक संसदीय और राजनीतिक मुद्दे।

महत्व- यह सम्मेलन राष्ट्रमंडल देशों के बीच बेहतर समझ और सहयोग को बढ़ावा देता है।

युवाओं में देश सेवा का जुनून, 'अग्निवीर' के लिए आवेदन करने वालों का आंकड़ा 33% बढ़ा

नई दिल्ली। सरकार ने तीन साल पहले 14 जून 2022 को युवाओं को सेना से जोड़ने और सशस्त्र सेनाओं के आधुनिकीकरण के लिए 'अग्निपथ स्कीम' की घोषणा की थी। विपक्षी पार्टियों ने इस पर कई सवाल खड़े किए थे। लेकिन, आज भारतीय सेना में अग्निपथ योजना के तहत अग्निवीर बनकर देश की सेवा करने वाले युवाओं का जुनून लगातार बढ़ रहा है।

इस बार अग्निवीर बनने के लिए 33त्न अभ्यर्थी बढ़े हैं। सेना भर्ती से जुड़े अधिकारियों का कहना है कि यह आंकड़े बेशक ग्वालियर चंबल अंचल के 10 जिलों के हैं। लेकिन, कमोवेश देश के अन्य भर्ती कार्यालयों की भी यही स्थिति है। इस बार लिखित परीक्षा में पिछली भर्ती के मुकाबले अधिक अभ्यर्थी शामिल होंगे। भर्ती के लिए लिखित परीक्षा जून माह में आयोजित कराई जाएगी। अभ्यर्थियों की सुविधा के लिए सिलेबस वेबसाइट पर अपलोड कर दिए गए हैं।

अग्निवीर बनने का जुनून उस ग्वालियर-चंबल अंचल में अभूतपूर्व है, जहां 'अग्निपथ योजना' लागू होने के बाद सबसे बड़ा विरोध देखने को मिला था। इस बार लिखित परीक्षा में शामिल होने वाले अभ्यर्थियों की संख्या बढ़ गई है। 2023 में लिखित परीक्षा में 21 हजार 646 अभ्यर्थी शामिल हुए थे, जबकि यह संख्या इस बार 32 हजार 708 तक पहुंच गई। तीन साल में सबसे ज्यादा आवेदन इस बार हुए हैं। लगातार अभ्यर्थियों की संख्या बढ़ती जा रही है।

सबसे ज्यादा अभ्यर्थी तीन जिलों से

मध्य प्रदेश के 10 जिलों ग्वालियर, भिंड, मुरैना, दतिया, छतरपुर, निवाड़ी, सागर, श्योपुर, शिवपुरी, टीकमगढ़ के अभ्यर्थियों की लिखित परीक्षा जून माह में प्रस्तावित है। अब सेना के अधिकारी लिखित परीक्षा की तैयारी में जुट गए हैं। आंकड़ों की बात करें तो 10 जिलों में पहले स्थान पर मुरैना, दूसरे स्थान पर भिंड और तीसरे स्थान पर ग्वालियर है। सबसे ज्यादा अभ्यर्थी इन्हीं तीन जिलों से हैं। भिंड के 7329, निवाड़ी के 1086, छतरपुर के 1202, सागर के 2399, दतिया के 1225, श्योपुर के 364, ग्वालियर के 3783, शिवपुरी के 3152, मुरैना के 10385 और टीकमगढ़ के 178 अभ्यार्थी हैं।

तीन साल में इस बार सबसे ज्यादा आवेदन

सेना भर्ती निदेशक कर्नल पंकज कुमार का कहना है कि अग्निवीर भर्ती के लिए लिखित परीक्षा जून माह में होगी। इस बार अभ्यर्थियों की संख्या 33त्न तक बढ़ गई है। तीन साल में इस साल सबसे ज्यादा आवेदन किए गए है। लगातार अभ्यर्थियों की संख्या बढ़ रही है और चयन प्रतिशत भी बढ़ रहा है।

सडक दुर्घटना में महिला की मौत के बाद भोपाल में पुलिस विभाग ने स्कूल बसों की फिटनेस की चकिंग जोर-शोर से शुरू कर दी।

महापौर मालती राय ने स्मार्ट सिटी स्थित कंट्रोल रूम में महापौर हेल्पलाइन के तहत प्राप्त शिकायतों की समीक्षा कर लाभार्थियों से फीडबैक प्राप्त किया। साथ ही अधिकारियों को 24 घंटे के भीतर सभी समस्याओं को हल करने हेतु आदेशित किया।

प्रदेश कांग्रेस कार्यालय पर आज कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा इंदिरा गांधी को याद किया गया पाकिस्तान पर सीज फायर के विरोध में

इंदिरा तेरी याद आई एमपी में कांग्रेस चलाएगी कैम्पेनःपटवारी बोले- पीएम के संबोधन से पहले ट्रंप ने जो कहा उसे देश समझे

भोपाल। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद भारत-पाक के बीच चल रहे तनाव को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के हस्तक्षेप को लेकर कांग्रेस मोदी सरकार पर सवाल उठा रही है। सीजफायर के ऐलान के बाद सोमवार रात को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन के पहले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बयानों के बाद अब कांग्रेस एमपी में इंदिरा तेरी याद आई अभियान शुरू करने जा रही है।

उच्च शिक्षा विभाग में खाली पड़े हैं पदः मप्र के कॉलेजों में 6289 पद खाली, भोपाल में 102

भोपाल। प्रदेश के सरकारी कॉलेजों में शिक्षकों की भारी कमी है। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक, मध्य प्रदेश के सरकारी कॉलेजों में कुल 6,289 पद खाली हैं। ये सभी पद राजपत्रित शैक्षणिक संवर्ग के अंतर्गत आते हैं। आंकड़े बताते हैं प्रदेश भर के 69 विषयों में पद खाली पड़े हुए हैं। सबसे ज्यादा अंग्रेजी के पद खाली हैं। कॉमर्स और इकोनॉमिक्स जैसे प्रमुख विषयों में भी पद रिक्त हैं।

पहले साधना सिंह पर डबल मीनिंग बात से नपे थे मंत्री विजय शाह, अब कर्नल सोफिया पर बिगड़े बोल

भोपाल। मध्यप्रदेश के कैबिनेट मंत्री विजय शाह एक बार फिर विवादों में हैं। इस बार उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर में भाग लेने वाली और देशभर में प्रशंसा पा रहीं कर्नल सोफिया कुरैशी को लेकर बेहद आपत्तिजनक बयान दे डाला। जहां एक ओर देशभर में कर्नल सोफिया कुरैशी की बहादुरी को सलाम किया जा रहा है, वहीं मंत्री विजय शाह की जुबान से उनके लिए ऐसे शब्द निकल रहे हैं जिसने मर्यादा की रेखा लांघ दी। इसके पहले भी मंत्री केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह की पत्नी को लेकर अभद्र टिप्पणी कर चुके हैं जिस कारण उन्हें अपनी कुर्सी भी गंवानी पड़ी थी।

विजय शाह ने महू विधानसभा के मानपुर में संबोधन के दौरान कहा कि मोदी जी समाज के लिए जी रहे हैं और समाज के लिए जान लगा रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि जिन्होंने हमारी बेटियों के लिए सिंदूर उजाड़े थे, वह कटे-फिटे लोगों को, हमने उन्हीं की बहन भेजकर उनकी ऐसी की तैसी करवाई। उन्होंने (आतंकियों) ने कपड़े उतार-उतार के हमारे हिंदुओं को मारा, और मोदी जी ने उनकी बहन (कर्नल सोफिया कुरैशी) को उनकी ऐसी की तैसी करने उनके घर भेजा।

2013 में भी बिगड़े बोल बने थे इस्तीफे की वजह

यह पहली बार नहीं है जब विजय शाह की जुबान से अभद्र शब्द निकले हैं। 2013 के विधानसभा चुनावों से पहले 14 अप्रैल को उन्होंने झाबुआ में आयोजित एक सरकारी कार्यक्रम में ऐसा बयान दिया था। तब उन्होंने तत्कालीन सीएम शिवराज सिंह चौहान की पत्नी पर डबल मीनिंग टिप्पणी की थी। इस बयान ने न केवल उनकी छवि को धूमिल किया, बल्कि पार्टी की भी किरकिरी कराई।

2013 में विवादास्पद भाषण के दौरान मंत्री विजय शाह ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की पत्नी साधना सिंह को लेकर भी अभद्र टिप्पणी की। उन्होंने कहा भाषण के दौरान कहा था कि मैंने एक बार सीएम शिवराज सिंह चौहान की पत्नी से कहा कि भइया के साथ तो रोज जाती हो,कभी देवर के साथ भी चली जाया करो।

विजय शाह की गई थी कुर्सी

मंत्री विजय शाह की टिप्पणी के बाद महिला कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने कई जगहों पर पुतला दहन किया और मंत्री के इस्तीफे की मांग की। अंततः उन्होंने मुख्यमंत्री निवास जाकर अपना इस्तीफा सौंपा।

माफी मांगते हुए बोले- 10 बार क्षमा चाहता हूं

विवाद गहराने के बाद विजय शाह ने सफाई दी और कहा अगर मेरे भाषण से किसी को थोड़ा भी दुख हुआ हो, तो मैं 10 बार माफी मांगता हूं। उन्होंने यह भी कहा कि उनका उद्देश्य किसी को ठेस पहुंचाना नहीं था, यह सब हास-परिहास में कहा गया था।

चार महीने बाद मिली दोबारा कैबिनेट में एंट्री

2013 में विजय शाह ज्यादा दिन तक कैबिनेट से बाहर नहीं रहे। करीब चार महीने बाद ही उन्हें दोबारा शिवराज कैबिनेट में शामिल कर लिया गया। इसका कारण साफ था गोंड आदिवासी समाज में उनका राजनीतिक प्रभाव। बीजेपी को डर था कि शाह को दूर करने पर आदिवासी वोट बैंक खिसक सकता है।

शिवराज ने भी कर दिया माफ

शिवराज सिंह चौहान ने उस समय जन आशीर्वाद यात्रा के दौरान विजय शाह को माफ कर दिया और उनके बयान को सिर्फ हास-परिहास की संज्ञा दे दी। उन्होंने कहा कि शाह का उद्देश्य गलत नहीं था और मामला समझ के बाहर ले जाया गया।अब मंत्री विजय शाह ने देश की और सेना की शान कर्नल सोफिया पर टिप्पणी की है। कर्नल सोफिया पर मंत्री विजय शाह के बिगड़े बोल के बाद एक बार फिर विजय शाह को मंत्री पद से बहार करने की मांग उठ रही है।

15 मई को सीधी से सीएम मोहन यादव 24वीं किस्त जारी करेंगे

भोपाल। अगली किस्त का इंतजार कर रही मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की करोड़ों लाड़ली बहनों के लिए ताजा अपडेट है। खबर है कि 15 मई को सीधी से सीएम मोहन यादव 24वीं किस्त के 1250 रुपए जारी कर सकते है। इसी दिन 25 लाख से अधिक बहनों को सिलेंडर रिफिलिंग की भी राशि जारी किए जाएंगे।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, 15 मई को सीएम मोहन यादव सीधी जिले के मंझौली से बहनों के खाते में किस्त जारी करेंगे। इस दिन राज्य स्तरीय लाड़ली बहना योजना का सम्मेलन बुलाया गया है, जिसमें सीएम जिलें को भी करोड़ों रुपए की सौगात देंगे और बहनों से संवाद करेंगे।हालांकि अभी फाइनल डेट को लेकर अधिकारिक पुष्टि होना बाकी है।

अप्रैल से किया गया है डेट में बदलाव- आमतौर पर हर महीने की 10 तारीख तक योजना के पैसे बहनों के खाते में भेज दिए जाते है लेकिन अप्रैल 2025 से तारीख में बदलाव किया गया है।मार्च 2025 तक हर महीने की 1 से 10 तारीख के बीच योजना की राशि जारी कर दी जाती थी लेकिन अप्रैल में कैबिनेट बैठक के दौरान मोहन सरकार ने फैसला किया था कि वह प्रतिमाह 15 तारीख के आसपास बहनों के खाते में राशि भेजेगी। यही कारण था कि अप्रैल में 16 तारीख को 23वीं किस्त के 1250 रुपए भेजे गए थे और अब अगली किस्त भी 15 तारीख तक जारी होने का अनुमान है। फिलहाल राशि बढ़ाने व नए नाम जोड़ने पर कोई अपडेट नहीं आया है।

3 जुलाई से शुरू होगी अमरनाथ यात्रा

जेपी अस्पताल के अलावा निजी मेडिकल कॉलेज के 6 डॉक्टर जारी करेंगे मेडिकल सर्टिफिकेट

भोपाल। जेपी अस्पताल के अलावा अब निजी मेडिकल कॉलेज से भी अमरनाथ यात्रा का मेडिकल सर्टिफिकेट मिल सकेगा। लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा संचालनालय ने सोमवार को जारी नई सूची में चिरायु मेडिकल कॉलेज के 6 विशेषज्ञ डॉक्टरों को सर्टिफिकेट बनाने के लिए अधिकृत किया है। ये सभी डॉक्टर अमरनाथ यात्रा पर जाने वाले श्रद्धालुओं की स्वास्थ्य जांच कर प्रमाण-पत्र जारी करेंगे, जो यात्रा के लिए अनिवार्य है। जिन डॉक्टरों को अधिकृत किया गया है, वे सभी मेडिसिन विशेषज्ञ हैं।

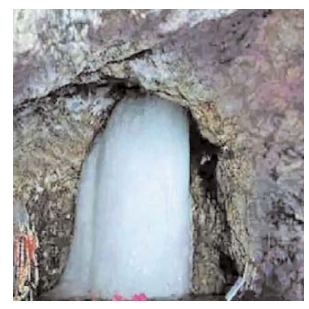

जरूरी है मेडिकल सर्टिफिकेट- जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने अमरनाथ यात्रा की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों, ऊंचाई, ऑक्सीजन की कमी और खराब मौसम को देखते हुए मेडिकल फिटनेस प्रमाण-पत्र को अनिवार्य कर दिया है। बिना प्रमाण-पत्र के यात्रा परमिट जारी नहीं होता। अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि प्रमाण-पत्र में डॉक्टर का नाम और पंजीयन क्रमांक अनिवार्य रूप से दर्ज किया जाए।

3 जुलाई से 9 अगस्त तक चलेगी यात्रा- श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड ने 2025 की यात्रा की तारीखों की घोषणा कर दी है। यात्रा 3 जुलाई से शुरू होकर रक्षाबंधन यानी 9 अगस्त तक चलेगी। इस बार यात्रा 38 दिनों की होगी, जो पिछले साल की तुलना में 14 दिन कम है।